SHABDA PRAKASH

अथ

शब्द प्रकाश

महर्षि बाबा धरणी दास

कृत

जिस्को श्री २ बाबू रामदेव नारायण सिंह
साहेब जमींदार चैनपूर ज़िले
सारन ने अपने सनेही
बाबू विष्णु देव
नारायण
मांझी ग्राम निवासी की
इच्छानुसार मुद्रित करवाया ॥

First Edition

CHHAPRA
NASIM SARAN PRESS
1887

श्री गणेशाय नमः ॥

अथ शब्द प्रकाश लिख्यते ॥

(करता प्रसंग)
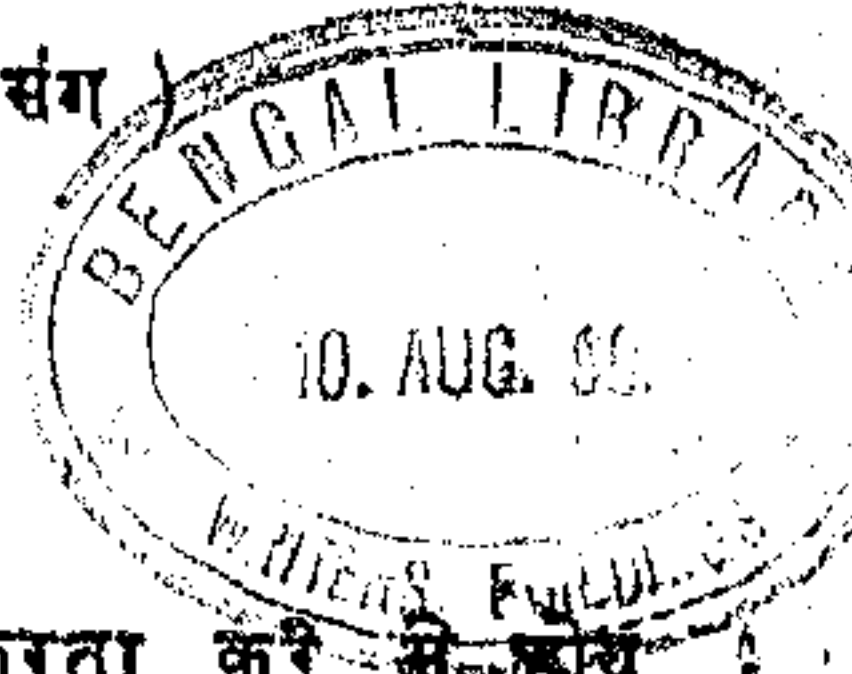
करता किया से होय रहा करता करै से होय ।
धरनी करनी की चीतवै सो मति समुझै कोय ॥ १ ॥

करता के अस्थूल नहीं कर्म कल्पना काम ।
धरनी सभ में रमि रहो ताते कहिये राम ॥ २ ॥

करता के इच्छा भये ताहि कियो बिस्तार ।
सो पुनि सकल सकेलिये धरनी कीयो पुकार ॥ ३ ॥

ब्रह्मा विष्णु महेश मुनी धरनी दसो औतार ।
करता सभ के ऊपरे औ सभहु ते पार ॥ ४ ॥

धरनी करता वो करै माटी मिले पहार ।
चाहै तो छन में करै वाहु ते अधिकार ॥ ५ ॥

धरनी बोहित बोझिलो जहां को माल लदाये ।
करता पार उतारिहैं डूबनि काहे डेराये ॥ १५ ॥
करता धाता कछु करत साधु को जो देहु ।
धरनी धरि लेहु सार मत करि लेहु स्वारथ देह ॥ १६ ॥
धरनी बरनी सकै नहीं करता को बेवहार ।
भौजल सूखो सहजही कहां वार कहां पार ॥ १७ ॥
धरनी निज निज घर धरो सो सब करता नाहि ।
नीराकार अमर है करता कहिये ताहि ॥ १८ ॥
धरनी कहि आवे नही करता की करतुति ।
प्रमास पहरी करे रहीये आस स्तुति ॥ १९ ॥

(गुरु प्रसंगः)

निर्गुन है गुरु देवता सीप सर्गुन रूप कोये ।
रहत सोपाअत रेन दिन धरनी देखु बिलोये ॥ १ ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश गुनी और चौबिस अवतार ।
धरनी और सब सोग है गुरु सो अपरअपार ॥ २ ॥
गुरु तो ऐसा चाहिये जो मारग दीये लोराहि ।
धरनी निर्मल करोये कनक अग्नि जिमि डाहि ॥ ३ ॥

धरनी सो गुरु धन्य है जा ते तप्त बुझाए ।
बिछुरा बालमु पाइए लीजे हृदै लगाए ॥ ४ ॥
धरनी सो गुरु गुरु नहीं जो माया करत घाव ।
भजन भेद जाने नही फिरत पुजावे पाव ॥ ५ ॥
धरनी गुरु के चरन पर बार बार बल जाउ ।
अन्धा ते डीठा किया शब्द औषधी लाउ ॥ ६ ॥
धरनी धरनी जो फिरे बिनु गुर नहि लखाव ।
बहुत नाम कहि कहिकहा जो ततु नाम नहि पाव ॥ ७ ॥
धरनी सिर पर राखिए, ताहि गुरू के पांव ।
जो गुर आतम राम सो कर गहि करे मेराव ॥ ८ ॥
जीव दया जीअ में नहि जीभ्या बसे न सांच ।
काम क्रोध साधे नही धरनी सो गुर काच ॥ ९ ॥
गुर जो चाहत सीष कह खेंचि लेत बिनु डोरि ।
धरनी बीच परै नहीं तरै अठासी कोरि ॥ १० ॥
धरनी सब जग आंधरो जाति नहि मुख बोलि ।
सोइ डीठारे जानिए परदा गुरु दे खोल ॥ ११ ॥
गुर महिमा को कहि सके गुर देवन को देव ।
जो गुर तत्व सनेहिआ धरनी सो गुर सेव ॥ १२ ॥

धरनी सो गुरु पुरा मिले सीष सेआना होय ।
पल में पार उतारही सरबरि करै न कोय ॥ १३ ॥

लरि लरि मरो को जरि जरि मरिहै बूडि मरि परि खाट ।
धरनी सो निज घर न गयो जेहि गूरु न बताये बाट ॥ १४ ॥

हम में बैठा जो रहा ता में बैठा हम ।
धरनी गुरु गम गमि कीया ना तरिहै ती अगम ॥ १५ ॥

(मन प्रसंग)

मन ते कारज होतु है औ मन ते होत अकाज ।
कातहु डेगी डगमगै कातहु होत जहाज ॥ १ ॥

मन मृग खेति खातु है धरनी जतन जोगाव ।
घर मों बादल आन है ता सो जारी बुझाव ॥ २ ॥

मन कुरंग फानत फीरै धरनी रन बन फुली ।
प्रेम पारधी घेरी गये चौकरी भुलि ॥ ३ ॥

धरनी एही सिखावनो मन में आनि सुबोधु ।
जिन्ह अपने मन बोधीआ ताको सब परमोधु ॥ ४ ॥

मन मैना तन पिंजरा धरनी प्रीति बढ़ाव ।
पढ़ो बैठो* सोयते राम नाम पढ़ाव ॥ ५ ॥

शब्द सरूपी राम जीव है सकल घट माहि ।
धरनी भोग मानहु जो शब्द जीवको नाहि ॥ ६ ॥
कवित कथा पद पन्थ गुन साखि शब्द अनेक ।
धरनी बहु घट ऊपरे पै हरि जन हाव विवेक ॥ ७ ॥
धरनी धरी टेक नहीं काटिये शब्द बीवेक ।
करता राम अनेक है रता राम सो एक ॥ ८ ॥
बोले ते अक्षर भया बोले ते भये शब्द ।
धरनी जो नही बोलता तौ अक्षर शब्द न जब्द ॥ ९ ॥

(घायल प्रसंग)

गुरू चलायो बान कारी खिलही आवे घाव ।
सोअत जागो आतमा धरनी हरी गुन गाय ॥ १ ॥
धरनी घायल जो भये घर नहीं ताही सोहाय ।
जहाँ तहाँ घुमत फीरे राम राम गोहराय ॥ २ ॥
धरनी लागी सब्देह की बुड़ो हृदै माहो ।
जो घायल सो जानिहै औरन को गमि नाहि ॥ ३ ॥
धरनी जा की घाव है और न जाने भाव ।
कै जाने जीव आपनी कै जाने जिनि लाय ॥ ४ ॥

घाव कतहु ना देखिये नहीं रुधिर की धार ।
धरनी हीय में चुभि रहो बीसरत नहीं बीसार ॥ ५ ॥

धरनी घायेल है पड़ा कल बल कछु न बसाइ ।
कब चलि ऐहैं पारखी लीहैं आपु उठाइ ॥ ६ ॥

धरनी घायेल जो भये कडुआ लागि मिठ ।
छिठ के बोरे पिठ है पीठी के बोरे छीठि ॥ ७ ॥

धरनी घाव जीन्है लगो तीन्है औषधी नाहि ।
रंगे चंगे निस होत है जो मारनिहारी मिलाहि ॥ ८ ॥

(बीरह प्रसंग)

धरनी एही जग जन्मी कै बाढ़ी बीरह न राम ।
सो जीव जल की फेन है बहै जाही बेकाम ॥ १ ॥

धरनी जो बीरही भयो बालमु बिरह न बिआपु ।
बीसरी सूधि बुधि बल घटो सहज चढ़ो तन तापु ॥ २ ॥

बकै बीरहीनी बावरी धरनी धरै न धीर ।
ताला बेली तन नवै अभी अन्तर की पीर ॥ ३ ॥

तनक तनक तन घटित है जिये बिछ बल बल हानि ।
धरनी प्रभु बेगी मिलेयो प्रीति पुरातन जानि ॥ ४ ॥

चिंता मनि प्रभु रावरे कहिओ कवनि उपाइ ।
धरनी धीरज ना रहे दीजै दरसन आइ ॥ ५ ॥
धरनी भवन भैयावनो भजिगै भूष पिआस ।
निकट न आवै नींदरी सुरति सनेही पास ॥ ६ ॥
धरनी धनी पिउ पिउ रटै अब कब मिलिहैं पिउ ।
तब का लैहौ आइकै जब चलि जहै जीवउ ॥ ७ ॥
धरनी आसा इस की निकलत नाही प्रान ।
अब न बिलम्ब लगाइये गहिये कंत सुजान ॥ ८ ॥
धरनी बीरहीनी बापुरी बैठी ठाढ़े आसु ।
जिवै सो आसा मिलन को पिर रक्त अरु मासु ॥ ९ ॥
धरनी बेदन बिरह की अवर न जानै भेद ।
बिरह बिथा सो जानिहै जाहि करे जी छेद ॥ १० ॥

(इष्ट प्रसङ्ग)

इष्ट रघुनाथ को धरि राखो मन माहि ।
धरनी सब ते इष्टता बयेर काहु ते नाहि ॥ १ ॥
धरनी इष्ट अनेक है को करि सके सुमार ।
इष्टै जो सकलो साधु को सोई इष्ट हमार ॥ २ ॥
इष्ट आपनो राखिये धरनी सिर पर जानि ।

लाभ मिले जो सर्बदा कबहीं न आवै हानि ॥ ३ ॥
इष्ट साधु सर्गुण भले निर्गुण हरी को नाम ।
धरनी इष्ट न कीजीये एक नारी अरु दाम ॥ ४ ॥
धरनी जन की बीनति संतो करहु बिबेक ।
जाके मन में थे कहै ताके इष्ट अनेक ॥ ५ ॥
धरनी करनी तो बनी जो इष्ट मिले रघुनाथ ।
नातो मूल गवाइ के जातो कुछि हाथ ॥ ६ ॥

(मित्र प्रसङ्ग)

धरनी मित्र अचिंतही ग्रीह थोटो द्रीग छार ।
अब सहजहि घर ताहि को मेरे कहे गवार ॥ १ ॥
धरनी मन बच कर्मना धरनी धर को ध्यान ।
दूजा द्रष्टी परे नहीं अपनो मित्र समान ॥ २ ॥
धरनी मित्र मनोहरा सुंदर सुघर सुदेस ।
एक निमिष बिसरै नही घर बन पुर परदेस ॥ ३ ॥
मित्र हमारे सेज पर हम ठाढ़े जहां मित्र ।
छिनु छिनु अति मीठी लगे धरनी देखु चरीत्र ॥ ४ ॥
धरनी पूरी भाग ते मिले हमारे मीत ।
रोम रोम पुलकित भयो नहि बिछुरन की रीत ॥ ५ ॥

धरनी समुझि परै नहि मरि मरि जाहि अचेत ।
काया की कछु काम नही कियो भक्ति के हेतु ॥ ६ ॥

(प्रेम प्रसङ्ग)

धरनी प्रेम न पागियो तो आदि बिगारी भेस ।
मन को सिर मूडो नही तो कहा मुडावे केस ॥ १ ॥
धरनी सब परी पंच है एक प्रेम है सांच ।
परै फतिंगा आगिमें मानी सहै न आंच ॥ २ ॥
प्रेम जहां जहां उपजे धरनी येह संसार ।
तहां तहां उठि भागियो नेम अचार बिचार ॥ ३ ॥
प्रेम प्रगास प्रगास जेही धरनी ता बलि जाइ ।
प्रेम बिहुने मानवा सो कत जग जन्मे आइ ॥ ४ ॥
धरनी प्रेम प्रवाह में वार पार कछु नाहि ।
सुर पुर नर पुर नाग पुर प्रेम एकही माहि ॥ ५ ॥
जाको जइसो प्रेम है सहज मिले प्रभु सोइ ।
पराचीन परचे नही तो धरनी फिर न होइ ॥ ६ ॥

(काया प्रसङ्ग)

धरनो जनि कोज करे काया को हंकार ।

राखे रहै न काहुके जात न लागी बार ॥ १ ॥
चीरा हीरा लटक ते चोआ चुवत गुलाब ।
धरनी सो तन तनिक में होता खाक खराब ॥ २ ॥
चोआ चनन लेपही सदा सुगंध नहाहि ।
धरनी सो तन धरनी में परै बिगन्ध बसाहि ॥ ३ ॥
परदै रानी जोहुती करती सकल सिङ्गार ।
धरनी सो तन बाहर परी सूकर स्वान अहार ॥ ४ ॥
काया को कछु काज नही कीयो भक्त के हेतु ।
धरनी समुझि परै नही मरि मरि जाइ अचेतु ॥ ५ ॥
पांच तत्व काया कियो तामे गैबी पुर्ष ।
धरनी काया देखि के जो भूले सो मुर्ख ॥ ६ ॥
जो माझी मिलीमहै कर अंजुली है पानि ।
धरनी देही देखि के गर्व न कीजै जानि ॥ ७ ॥
काया भक्ती कियो नही मया को बिस्तार ।
धरनी सो लादु भयो पशुवा को अवतार ॥ ८ ॥
भीतर पांच पचीस जन बाहर कुल परीवार ।
धरनी इनके फन्द ते बचे सो धन अवतार ॥ ९ ॥

(माया प्रसङ्ग)

पहिरि चोला चाम का कोइ सपेद कोइ स्याह ।
धरनी माया नटीनगन कीयो सब काहु ॥ १ ॥
राजा रंक जती सती बचे चोर नहि साहु ।
धरनी भौजल सभ परा कोइ अथाह कोइ थाह ॥ २ ॥
अटा झरोखा धौरहर वो कंगूरा कोट ।
धरनी राखी सकै नही काल गुलेला चोट ॥ ३ ॥
बडो खोदाना पोखरा अरु लावो लखराउ ।
धरनी प्रभु के भक्ति बिनु पुनि चौरासी ठाउ ॥ ४ ॥
धरनी धन को कारने धाइ मरै नर लोइ ।
एक धनी के नाम को बिरहा बिरला कोइ ॥ ५ ॥
धरनी धन जो जेवरा आगि आवै धाइ ।
तुरत उत्तर दीजीयै संत शहर को जाइ ॥ ६ ॥
धरनी माया मंडली घेरि रही नवखंड ।
तजि माया हरी को भजै ते कहीयै बरीबंड ॥ ७ ॥
माया के बस होयि रहै तीनि लोक जल कोइ ।
बांचे कोइ कोइ साधु जन धरनी देखु बिलोइ ॥ ८ ॥
माया के गुन सापिनी पावै तेहि धरि खाइ ।
धरनी सो जन बांचिहैं जो आगि दिया चलाय ॥ ९ ॥
धरनी माया कारणे लोक न सूझै सांच ।

जो निकरे घर बार तजि   ताहु नचावे नांच ॥ १०

अर्ने चौतरा चित्र घर   चौखराडो चौपारि ।
धरनी जो हरि भक्ति नही   तो ये सब कियो फ़ुसारि ॥ ११ ॥

धरनी माया जो मिली   परमारथ करि लेहु ।
नातो फिरि पछताइहो   जादिन देह बिदेह ॥ १२ ॥

धरनी माया जानवर   संसारी सैचान ।
साधु तमाशे छकि रहे   चढ़ि अचे मैदान ॥ १३ ॥

धरनी माया इश्वरी   ताहि रिझत् है राम ।
जहा माया है आसुरी   ताको सरे न काम ॥ १४ ॥

(दया प्रसङ्ग)

जाके जीव दया बसी   ता घर बसी दयाल ।
धरनी जहां दया नही   तहां बसेरो काल ॥ १ ॥

दावा दुर्लभ जन्म भी   पावे बिरला कोये ।
बेगर दया दयाल की   धरनी दया न होय ॥ २ ॥

जंत्र जोग तप तीर्थ बैत   सुमिरत आठो जाम ।
धरनी दया धर्म बिनु   कछु नही आवे काम ॥ ३ ॥

धरनी सो नर धन्य है   पर पीरा जिन्हि व्याप ।
ताके दरसन देखते   भस्म होत जग पाप ॥ ४ ॥

काया माया जो बढ़ी दया बढ़ी नजाहि ।
नोर्फल ताकी जीवनी धरनी गनै न ताहि ॥ ५ ॥

(समुझावनि प्रसङ्ग)

धरनी हिय सूझी नही तौ नैन सुझै नही काम ।
हाट न सौदा पाइहै जाको खोटो दाम ॥ १ ॥
हरि जन सेवा हरि भजन जग जन्मै फल येह ।
धरनी करनी लेहु करी अन्त खेह की खेह ॥ २ ॥
धरनी कर्म केराव ले भुजी भजन की भार ।
ना तरुयाही बीजते होइ है बहु बिसतार ॥ ३ ॥
धरनी औंधि रहै कहां देखो नैन उघारि ।
गायघेरि जब जाइ है करिहौ कहां गो हार ॥ ४ ॥
आगि लेगे कुआ कहा बुडत बधायो नाव ।
धरनी वेगे हरि भजो जो भजिवेकि चाव ॥ ५ ॥
शक्ति पाय हरि भक्ति को धरनी बिलम्ब न लाज ।
कालिह परी कैसी परी आजु बनीहै दाज ॥ ६ ॥

(सांच प्रसङ्ग)

मिथ्या परै नहि पाप है साच परै नही धर्म ।

'धरनी सा ी जो कहै ताहि न लागै कर्म ॥१॥

'धरनी साचे जो भये झूठे संग नहि जाहि ।'

'पञ्चामृत परिहरै रूखा टुका खाहि ॥ २ ॥

जो जन यग में झूट तजी सांच व्रत गही लेइ ।

धरनी ताके चरन पर सीस आपनो देइ ॥ ३ ॥

पर निन्दा पर धन तजै पर नारी नहि चाउ ।

सांच कहै सहजै रहै धरनी बन्दै पाउ ॥ ४ ॥

झीया कहै नहि जानिकै सांच धरै छपाइ ।

धरनी सो जन निर्मला कोइ देखो अजमाइ ॥ ५ ॥

(सती प्रसङ्ग)

धरनी साहस कीजिये साहसते सिधि होय ।

बिन साहस संसार मे सिधि पावै ना कोय ॥ १ ॥

धरनी अपने पियलगि जारिए ढोल बजाये ।

चहु दिस चरचा होये रहै जन्म सुफल होये जाय ॥ २ ॥

धरनी यग जीवन नहीं मरु यग जीवन लागि ।

नख सिष देही दाहिये बिनू काठि बिनु आगि ॥ ३ ॥

मूये नर सङ्ग जो जरै तिन्ह को होत बखान ।

धरनी प्रभु देखत जरै तेहि समान नहि आन ॥ ४ ॥

धरनी सती सराहिय जो सत्या छोडै नाहि ।
हिते के आतम राम सो बाटि बाटि धन खाहि ॥ ५ ॥
धरनी सती सराहिय जो सत मारग उठि लागु ।
रज तम दुइ पथ परि हर युग युग ताहि सोहागु ॥ ६ ॥
सती सात बार जर राम भक्ति तब पाउ ।
मुक्ति होय धरनी कहै सुनु लोग सति भाउ ॥ ७ ॥

(सुरिवा प्रसङ्ग)

धरनी सूर सराहिये जीलरे धन की हेतु ।
टारे टरैन काहु की खेत माह जिय देत ॥ १ ॥
धरनी सूर सराहिय जो तजै अन्त की आस ।
आठ पहर अभि अन्तरे धरैएक बिस्वास ॥ २ ॥
सुरिवा ताहि सराहिय धरनी बिनु सिर धाउ ।
लरै सब्द समसेर सो पीछे परै न पाउ ॥ ३ ॥
धरनी चढु मैदानमे तवल निसङ्क बाजउ ।
आगे होय सिर दीजिये सनमुख सहिये घाउ ॥ ४ ॥
साइ कारन मरिमिटो धरनी मन खुसी हाल ।
भाजे बहुरिन बाचिहो खेद मारि है काल ॥ ५ ॥
सूझंता घर आपनो बूझं ता बिपरीत ।

जूझंता कोइ सूरिवा धरनी प्रेम प्रतीत ॥ ६ ॥
धरनी ते नर सूरिवा जो मिलै राम दल माहि ।
बेद लोक कुल कर्म को सङ्का मानै नाहि ॥ ७ ॥
धरनी तेनर सूरिवा जो अनुभव उपजै आन ।
जाति जंजीरा तोरि कै रोपि रहै मैदान ॥ ८ ॥
धरनी मन सुरिवा करो पहिरो भक्ति को माल ।
फिक पकरि गुरुग्यान को मारि दुरि करु काल ॥ ९ ॥

(साधु प्रसङ्ग)

सूर मरै लरि एक दिन सती जरै दिन एक ।
धरनी भक्त नवारनै जो जन्म निबाहै टेक ॥ १ ॥
लज्या डर संसार को संसारी कै होय ।
धरनी लज्या लोक की साधु करै जनि कोय ॥ २ ॥
साधु डरै एक राम सो कौडर मानै साधु ।
धरनी डर संसार को साधु चढै अपराध ॥ ३ ॥
साधु को महिमा को कहै जानत है सब साधु ।
धरनी दरसन साधु को हरै सकल अपराध ॥ ४ ॥
धरनी धोखा दूरि करु धरु हृदय बिस्वास ।
साधु संघति पाइऐ तो काज नहो कबिलास ॥ ५ ॥

धरनी जाहिय हरि नही औ नहि हरिजन तेज भाज।
सो नर जीवत नर्क है मुए को कवन चलाऊ॥ ६॥
जाघट साधु प्रसाद नही नही चरनामृत लाग।
धरनी यह संसार मो ताको बडी अभाग॥ ७॥
गङ्गा को जल आनि के साधु चरन ले धोये।
धरनी सो अचवन करु सकल तिर्थ फल होय॥ ८॥
धरनी उजल सोहावनो जहा साधु दुइ चारि।
बिना भक्ति भगवान की घटन लेखु उजारि॥ ९॥
बदशाही की चाकरी धरनी फूस निदान।
सार बन्दगी साधु की जो पावे पद निर्बान॥ १०॥
साधु कि सङ्गति से जरी बोझभर बिस्वास।
निर्भय चरन पसारि के सोए धरनी दास॥ ११॥
धरनी कुल निर्मल भयो जाकुल उपजै भक्ति।
बड की कुल अकलंकिया देखो जहांलो जक्ति॥ १२॥
धरनी शरनी ताहि की राम भक्त जे होय।
बार बार सिर नाइए चरण पीजिए धोए॥ १३॥
बेड़ा संघति साधु की चढ़ो सहित परिवार।
धरनी हरि गुण गावते उतरो भवजल पार॥ १४॥
चारि बरन कुल बड़ कहै चर्म दृष्टि संसार।

धरनी धन्य वैष्णवा धीव धीमर धरिकार ॥ १५ ॥
हरि सुमिरन हृदया बसै हरि भक्तन सो प्रेम ।
धरनी ताकै जानिए नीकै कूशल छेम ॥ १६ ॥

(अमल प्रसङ्ग)

धरनी अमलन कै कहै खात पिअत संसार ।
अमली तहि सराहिए जो तत्व अमल मतवार ॥ १ ॥
धरनी अमली सो भला जो सदा रहै मस्तान ।
माते नीमते होत है ते नर कूर कुजान ॥ २ ॥
धरनी अमली सो भला जो चहुदिस फिरै निसंक ।
सांच वचन बलकत रहै राजा गनै न रंक ॥ ३ ॥
धरनी अमल अनूप है राम कृपा ते पाउ ।
अव उपाए मिलिहै नहो रंक होउ की राउ ॥ ४ ॥
नैनन्ह मदिरा जो पिवै स्रवनन्ह चाखै पोस्त ।
भांग तमाखु नासिका ते धरनी के दोस्त ॥ ५ ॥

(तीरंदाजी प्रसङ्ग)

तीरंदाज कहावहीं धरनी लोक अनेक ।
शब्द अंदाजी साधु जन कोटि मांह कोइ एक ॥ १ ॥

धनुहा लै हृदया धरी बान शब्द तेहि लागु ।
धरनी सुरति कसीस करी भावै तहां चलाउ ॥ २ ॥
धरनी धन्वा हृदये धरु बचन बान धरु लाव ।
निरखि निशाने डारियै जो खाली चोट ना जाय ॥ ३ ॥
धरनी काया कमान में सांच शब्द है तीर ।
भरि कशीस करि मारीये जो निकरै छेद शरीर ॥ ४ ॥
धरनी काया कमान है तीर शब्द है सांच ।
निरपंछी होये रन करै ताको कोइ न बांच ॥ ५ ॥
बान बनो गुर शब्द को गहि कर आन कमान ।
धरनी चित चिन्ता करो छन नोहद असमान ॥ ६ ॥
काया तूपक दारुदया सीसा शाच सुढारु ।
कौड़ी कर्म नीसान है सो धरनी मारु उतारु ॥ ७
तन की तुपक तैयार मन सींग सहज गजवान ।
जीव दया धरि जामुगी धरनी कर्म नीशान ॥ ८ ॥

(साकट प्रसङ्ग)

धरनी साकट जो रहै निर्फल भो अवतार ।
कारज किया न आपनो जननी मारी भार ॥ १ ॥
दुखिया बैष्णव अति भला सुखिया साकट नाहि ।

धरनी हरि पुर तौलनो या संग तुलै न ताहि ॥ २ ॥
धरनी साकट बन्धुते किजे न आदर भाव ।
करिये संघति साधु को संतत सील सुभाव ॥ ३ ॥
धरनी कहो पुकारि कै सुनो हमारो बैन ।
साकट हाथ न खाइये संग न करिये सैन ॥ ४ ॥
जाको ओरु साकटो भक्त भये है पुर्ष ।
धरनी मता मिलै नहीं एक पंडित एक मुर्ख ॥ ५ ॥
धरनी साकट सो कहो जो जीव दया नहि जीव ।
दयावंत बैष्णवा बिहसो मिलेगा पीव ॥ ६ ॥
धरनी साकट साधु सो कबहो बनै न संग ।
संगति छोड़ तो सुख नहो व्याधा अवर बोहंग ॥ ७

(मांसु प्रसङ्ग)

रक्त बीज ते ऊपजे हृदये ते बहराय ।
धरनी कहै निखिध है मासु कोइ जनि खाय ॥ १ ॥
धरनी मासु न बुझिये जो मानुष करै अहार ।
पसु पंछी कोम खातु है सो बिना बिबेक बिचार ॥ २ ॥
मासु कारने जीय बधै सो पापी हत्यार ।
धरनी छोड़है कवन गति साहेब के दरबार ॥ ३ ॥

तनिक जिभ के कारने जीव न माने त्रास ।
धरनी देखा आनकरि काया बिच मलमास ॥ ४ ॥
मासु अहारी जीयरा सो पुनि कथै गेयान ।
नागी होय घुघुट करै धरनी देखि लजान ॥ ५ ॥
साधु बेद बरजे कहै धरनी समुझि न येह ।
मासु खाये फल पाइहो जादिन देह बिदेह ॥ ६ ॥
धरनी दुनिआं आंधरी कवन करै बरजोद ।
मासु मंह मद छोड़ियो फ़रवी रहै फ़रीद ॥ ७ ॥

(भेष प्रसङ्ग ।

धरनी प्रभु के कारनें लोग़ धरतु है भेष ।
भेष भला संसार तें पैभेखहु माह बिबेक ॥ १ ॥
अंग बिभुति चढ़ाय के कमर कसी तिरुआरि ।
धरनी प्रभु मानै नही असी भेष पुसारि ॥ २ ॥
कुल तजि भेष बनाइयो हृदये न आयो सांच ।
धरनी प्रभु रीझै नहीं देखत असी नाच ॥ ३ ॥
भेष लीयो दया नही ध्यान धतुराभांग ।
धरनी प्रभु काचा नही जो भुलत असी स्वांग ॥ ४ ॥
धरनी पहिले भजन ले तापाछे कर भेष ।

निरदाया निरपक्ष होये   तब तमासा देख ॥ ५ ॥
पारस लागी साधु को   तब जो भेष नहोये ।
धरनी सांची कहतु है   कायेर जीअरा सोये ॥ ६ ॥

(तुलसी प्रसङ्ग)

धरनी देखो धरनी में   भगवंता नहि कोय ।
तुलसी हुलसी फूलसी   बड़ भागी नर सोय ॥ १ ॥
धरनी बरनी सकै नहीं   महिमा तुलसीमाल ।
जाते संघत साधु की   फटै कर्म की जाल ॥ २ ॥
धरनी भेष अलेख है   औतुलसी को अधिकार ।
भक्त कहावे ताहि छन   सिर नावे संसार ॥ ३ ॥
धरनी धन्य सो आतमा   मांगहि तुलसी माल ।
ब्याधा बहुरि काल की   पल भी भयी देआल ॥ ४ ॥
कोइ भक्ता कोइ साधु कहि   कोइ फकीर कोइ दास ।
धरनी सुनि सुनि स्रवन सुख   हिये बढ़त भिस्वास ॥ ५ ॥
धरनी हाथी क्या चढ़ी   का पदुमिनी पलंग ।
कनक तुला चढ़ि का भयी   जो चढ़ीन तुलसीअंग ॥ ६

(बैद प्रसङ्ग)

ब्याधि बिधाता की रची दूरि करैगी सोय ।
धरनी बैद न सोचिये करता करै से होय ॥ १ ॥
धरनी बैद बहिर मुखी जीव जीआवै आन ।
अपनो घर को जीव सभ चले जाहि खरिहान ॥ २ ॥
जीव हतावे जीव लगी सो पुनि जीवे नाहि ।
धरनी ताते बैदवा बहे नर्क जम जाहि ॥ ३ ॥
बैद बड़ो गुर आपनो हृदये औषद लाउ ।
धरनी सांचो कहतु है ब्याधि अनेक मिटाउ ॥ ४ ॥
ब्याधित पीर शरीर में ब्याधि सो आवागवन ।
धरनी बैद बिसंभरा अवर मिटावै कौन ॥ ५ ॥
साधु चरन जल औषधी राम नाम बिस्वास ।
ब्याधि मिटि सब अंग की धरनीदास हुलास ॥ ६ ॥
धरनी बैद जहाँ मिले दीनानाथ दयाल ।
तहाँ बैदइ का करे जीवनि जीव कंगाल ॥ ७ ॥

(ओझा प्रसङ्ग)

ओझा ओझा पाय कै झूठ देहि बिस्वास ।
धरनी यहि पाखंड ते होत नर्क मे बास ॥ १ ॥
ओझा कोऊ जनि छुवै मति बैठारै पास ।

नगर ते मारि निकारिये कही जो धरनीदास ॥ २ ॥
धरनी देही कारनी पांच भूत जेही लाग ।
तासु निकाइ लेहु करि जो कछु माथे भाग ॥ ३ ॥
धरनी बोभा राम करु काया कारन जानु ।
भर्म भुत बहि जानदे कही हमारी मानु ॥ ४ ॥
भूतु अपराधी बोभवा धरनी कहही पुकारि ।
अजहुं साधु की सरन भजु लेहै तोहि उबारि ॥ ५ ॥

(पुजेरी प्रसङ्ग)

देवादेइ पूजि करि मुक्ति कबहि नहि होये ।
धरनी प्रभु की भक्ति करि अगति पाय नहि कोये ॥ १ ॥
अहमक पुजहि आगि जल प्रतिमा पुजहि गवार ।
धरनी ऐसा को कहै जो ठाकुर बिके बजार ॥ २ ॥
धरनी मन बच कर्मना पुजहु आतमा राम ।
यश बाढे संसार में स्वर्ग सदा सुख धाम ॥ ३ ॥
प्रतिमा को देवता कहै करै आतमा घात ।
ते अपराधी जीव सो धरनी ऐसोभात ॥ ४ ॥
धरनी भूत पुजेरिआ प्रगट भूत गत जाहिं ।
पच परोसहि भूत को बैठी आपुही खाहि ॥ ५ ॥

काया संपुट भीतरे सारसिला ओंकार ।
चित चनन ले पुजिये धरनी बारंबार ॥ ६ ॥
देवा देइ देवता सब की आसा त्यागु ।
धरनी मन बच कर्मना एक राम सो लागु ॥ ७ ॥

(नारी प्रसङ्ग)

नारी बटवारो करै चारि चोहटे माहि ।
जो वोहि मारग होचले धरनी निबहे नाहि ॥ १ ॥
धरनी धीर सबसभये जेते जीव अजान ।
नारी तजि हरि को भजै सो नर चतुर सुजान ॥ २ ॥
धरनी त्रिया तिआगीअे अपनी होइ की आनि ।
मिलत बोलाइ बापुरी बाघिन होत निदान ॥ ३ ॥
हरि झाथ करि बेरिआ धरनी सबौ छोड़ाये ।
जो बैअर के बसो परै बांधे जम्म सिराये ॥ ४ ॥
दामिनी अैसी कामिनी फांसी अैसो दाम ।
धरनी दुइ ते बाचिअे कृपा करै जो राम ॥ ५ ॥
आये तो हरि भक्ति लगी धरनी येहि संसार ।
बैर के बसि होये रहो बिसरो सिरिजनिहार ॥ ६ ॥
धरनी ब्याहो छोड़िये जो हरिजन देखि लजाइ ।

बैस्या संग बिराजिये जो भक्ति अंग उपराइ ॥ ७ ॥
कन्या है संसार सब बर है करता राम ।
धरनी भजिहै भर्म तजि ताको सरिहै काम ॥ ८ ॥

(बादिसाह प्रसङ्ग)

बादशाह एक रामजी साधु सो मनसफदार ।
और बसै सब रैयत धरनी बेशुमार ॥ १ ॥
धरनी सो बादसाह है जो सब की पति राखु ।
हक नाहक बेवरा करै मिथ्या बचन न भाखु ॥ २ ॥
धरनी जौ कोइ लै मिलै सो बाढि भरि सोन ।
तबहु हराम न कीजिये पानि आन की लोन ॥ ३ ॥
धरनी सिर सुलतान है करपगु बनो वौजीर ।
इन्द्रि बेगम होयरही लशकर आपु शरीर ॥ ४ ॥
धरनी तनसै तख्त है ताउपर सुलतान ।
देत मोजरा सबहु को जहा लौ जीव जहान ॥ ५ ॥

(भावि प्रसङ्ग)

भावि सबकी सङ्ग है भावी लखै न कोये ।
धरनी समै प्रसङ्ग ते भावी प्रगटै होये ॥ १ ॥

धरनी भावी क्यों मिटै बिधनि लिखा जो अंक ।
भुती चलेगी मानइ राजा भोज की रंक ॥ २ ॥
करता की करतूति जत भावी कहिअत सोइ ।
धरनी देखो समुझि करि बाति और न कोइ ॥ ३ ॥
धरनी भावी सो कहो जो करता की मौज ।
घर में रहै की बाहरे तनहा रहो की फौज ॥ ४ ॥
दुख सुख बिधने जो लिखो जस अपजस जग माहि ।
धरनी धीरजही बनै सोच किये कछु नाहि ॥ ५ ॥
जग लगि भावी प्रबल है निसदिन डोलै साथ ।
धरनी भावी भै नहो जो कृपावंत रघुनाथ ॥ ६ ॥
धरनी करता की कला परै न काहू जानि ।
ताते जग जैसी बनै सिर पर लीजै मानि ॥ ७ ॥

(अक्षर प्रसङ्ग)

धरनी अक्षर सब पढ़ो हिन्दुआन न तुरकान ।
निज अक्षर परचै भइ जितकित सबै भुलान ॥ १ ॥
बिनु अक्षर कै अक्षरा बिनु लिखनी का लेखु ।
बिनु जिभ्या का बांचना धरनी लखो अलेख ॥ २ ॥
धरनी कर पगु लिखनी लीजै लोक अनेक ।

नैनन्ह अच्छर जो लिखै सो जग है कोइ एक ॥ ३ ॥
लिखि लिखि सिखि सिखि का भयो पढ़ि गुनि गाय बजाय।
धरनी मूरति मोहनी जौ लगि हिय नसमाय ॥ ४ ॥
अच्छर सब घट उच्चरे जेती जिव संसार ।
लागि निरञ्जर जोर है ता अच्छर टकसार ॥ ५ ॥
धरनी सूरति करि धरो करो करे जो पाठ ।
लिखनी ऐसे अच्छरा पढ़ना पहरों आठ ॥ ६ ॥
धरनी अच्छर जहा लगी पढ़ि पढ़ि सब नर भूल ।
एतो अच्छर सार है सब अच्छर कै मूल ॥ ७ ॥
मजालिस तख्ता लै पढ़ै पटशाले भुंइ पाठ ।
धरनी अच्छर सो पढ़ो कागज पाट न काठ ॥ ८ ॥
धरनी धर मैं घर करो जहा सीत ना घाम ।
अच्छर अच्छुद्द परि हरो गहो निअच्छर नाम ॥ ९ ॥

(धरनेस्वर प्रसङ्ग)

करता राम कीया करो धरनेस्वर भी सोय ।
कहि गुर पुरानहि जौलो तेहो दरसेगो दोय ॥ १ ॥
धरनी जब ते लखि परी धरनेस्वर को मूर्ति ।
सोअत जागो आतमा लगी लगते सुर्ति ॥ २ ॥

धरनी घर में अधर है धरनेश्वर जेहि नाम ।
अविनासी बिनसै नही संत सुधारन काम ॥ ३ ॥
संत कथा दुनिया कहै संता करै बिलछानि ।
धरनी धोखा सब मिटो धरनेस्वर की जानि ॥ ४ ॥
काइक वाचिकमानसिक पूजा धरो न ध्यान ।
धरनेस्वर के नाम पर धरनी तन कुरबान ॥ ५ ॥
धरनेस्वर दाता बड़ो धरनी बड़े भिखारि ।
पायो भिछा भक्ति की नहो निबटै युग चारि ॥ ६ ॥
धरनी करनी नहि करो नहि कछु करो उपाये ।
धरनेस्वर दाया कीयो आपु लीयो अपनाये ॥ ७ ॥
धरनी धरनेस्वर मिले दिन दिन बाढ़ै नेह ।
जाननिहारे जानिहै अनावआहामो येह ॥ ८ ॥
दया बिराजी साधु की पाओ सब संसार ।
धरनेस्वर बिस्वास ते धरनी भौजल पार ॥ ९ ॥
धरनेस्वर जर जिन्ह धरो धन तिन्ह को अवतार ।
धरनी करत प्रदछिना प्रनवत बारंबार ॥ १० ॥
धरनेस्वर दाया करो धरनी धरी प्रतीति ।
संगति पकरी साधु की दियो नगारा जीति ॥ ११ ॥
धरनेस्वर आदिहींहु ते अब नहि धरनी मकास ।

प्रगट भये धरनेस्वरी जब ते धरनीदास ॥ १२ ॥

(सुमिरन प्रसङ्ग)

जो सुमिरन्ह संतन्ह कियो सुमिरो ध्रुव प्रह्लाद ।
धरनी सो सुमिरन कियो परिहरि बाद बिवाद ॥ १ ॥
मंत्र पढ़्यो माला जप्यो धरनी ते असरार ।
अजपा सुमिरन करतु है ते बिररे संसार ॥ २ ॥
धरनी सुमिरन कीजिये भीतर पैठि अवास ।
अग्नि पवन पानी नहीं धरनी नहीं अकास ॥ ३ ॥
धरनी सुमिरन सो भला जो धुनि उपजै घट माहि ।
जागत सोअत रैन दिन तनक बिसारै नाहि ॥ ४ ॥
धरनी सुमिरन सो भला जो काया माया बिसराये ।
आतम प्रमातम मिले जो जल जलहि समाये ॥ ५ ॥
दसन पाति मनिआवनो रसना बनो सुमेर ।
धरनी सुमिरन सहज को तव माला सबि केर ॥ ६ ॥

(ध्यान प्रसङ्ग)

धरनी निर्मल नासिका निरखु नैन के कोर ।
सहजै चंदा ऊगि है होइहै भवन अंजोर ॥ १ ॥

धरनी ध्यान तहाँ धरो उलटि पसारो द्रीष्टि ।
सहज सुभावहि होत जहाँ पुहुप माल की व्रिष्टि ॥ २ ॥
धरनी ध्यान तहाँ धरो प्रगट जोति बहराहि ।
मनि मानिक मोती झरै चुंगि चुंगि हंस अघाहि ॥ ३ ॥
धरनी ध्यानतहाँ धरो त्रिकुटी कुटी मझारि ।
धर के बाहर अधर है सनमुख सिरिजनिहार ॥ ४ ॥
धरनी अधरे ध्यान धरु निसिबासर लौलाइ ।
कर्म कीच मगु बीच है सो कांचन गच होये जाइ ॥ ५ ॥
शुकदेव ओदेव नाम देव सकल देव सुमीरंत ।
धरनी ध्यान न दूसरो आदि मध्य अरु अंत ॥ ६ ॥

(तत्व प्रसङ्ग)

तेरे मन में तत्व है तेअनंती कित धाउ ।
धरनी गुरु उपदेस ले घरहि माँह घर छाउ ॥ १ ॥
सहस सूर जो उगही चंदा चारि हजार ।
धरनी केवल तत्व बिना तबहु घर अँधिआर ॥ २ ॥
जो जन तत्व सनेहिआ धरनी कही बुझाये ।
रंग महल बिलु सारहीं जब तब आवै जाये ॥ ३ ॥
अर्ध कमल की ऊपरे तहाँ देवादस येक ।

धरनी भौजाल बूड़ते गुरगम पकरी टेक ॥ ४ ॥
दिया दीआ घर भीतरे बाती तेल न आगि ।
धरनी अनभव कर्मगा तासो रहना लागि ॥ ५ ॥
बिनु पगु निर्त करो तहां बिनु कर देवे तार ।
बिनु नैनन्ह छबि देखना बिना श्रवन झंझकार ॥ ६ ॥
देह देवघरा भीतरे सुरति जोति अनूप ।
मोती अच्छत चढ़तु है धरनी सहज सरूप ॥ ७ ॥
देह देवघरा भीतरे सुरति करो कल्यान ।
धरनी दरशन करत है बिरले संत सुजान ॥ ८ ॥
बहुत दुआरे सेवना बहुत भावना कीन्ह ।
धरनी मन संसै मिटौ तब परी जब चीन्ह ॥ ९ ॥
धरनी चहुदिस दौरियो जहां लो मन की दौर ।
एक आतमा तत्वबिनु भ्रमते पाइ न ठौर ॥ १० ॥
तबलगि प्रगट पुकारिया जब लगि निअरौ नाहि ।
धरनी जब निअरो परी मन की मनही माहि ॥ ११ ॥
धरनी हृदये पलंगरो प्रीतम पौढ़े आये ।
यमा सुनीये श्रवन ते कहि कवन पतिआये ॥ १२ ॥

(आरती प्रसङ्ग)

धरनी प्रभु की आरती   करिये मन चित लाये ।
जरा मरन दुनो छुटै   आवागवन नसाये ॥ १ ॥
धरनी प्रभु की आरती   करिये बारंबार ।
उठत बैठत सोवती   अरु निसि सांझ सकार ॥ २ ॥
पांच तत्व गुण तीनि लै   औ प्रकृत पचीस ।
धरनी आरति लाइये   वारि जहां जगदीस ॥ ३ ॥
बिना थाल के थार करि   बिना दीप के दीप ।
बिना हाथ धरि फिरना   धरनी राम समीप ॥ ४ ॥
सांझ समय कर जोरि के   आगे धरी यश गाय ।
धरनी सदा सुचित होए   हरि भक्तन्हि सिरनाव ॥ ५ ॥

(बीनय प्रसङ्ग)

धरनी जन की बीनती   कर करुना मे काम ।
दीजै दरशन आपनो   मांगो कछुवो न आन ॥ १ ॥
धरनी सरनी राम की   जीव पवन मन प्रान ।
मनसा वाचा कर्मना   धरो न दूजा ध्यान ॥ २ ॥
धरनी सरनी रावरो   राम गरीब नेवाज ।
कवन करैगा दुसरो   मोहि गरीब को काज ॥ ३ ॥
बार बार संसार मे   धरनी लागत चोट ।

अब पकरी परतच्छ है राम नाम की चोट ॥ ४ ॥
तिनुका दंत के अंतरे कर जोरे भुइ सीश ।
धरनी जन बिनती करै आन परि जगदीश ॥ ५ ॥
धरनी नहि बैराग बल नही जोग सन्यास ।
मनसा बाचा कर्मना बीसंभर बीस्वास ॥ ६ ॥
बिनती लिजे मानि करि जानि दास को दास ।
धरनी शरनी राखिये अब न दूसरी आस ॥ ७ ॥

(ब्राभन प्रसङ्ग)

धरनी देखो धरनी मे ब्राह्मन को बेवहार ।
सीधा मारग छोड़ि के बाझि मुए बनझार ॥ १ ॥
धरनी भरमी ब्राह्मने बसही भ्रम कै देश ।
कर्म चढ़ावहि आपु शीर अवरु जी लै उपदेश ॥ २ ॥
करनी पार उतारिहै धरनी कियो पुकार ।
साकत ब्राह्मन नहीं भला बैष्णो भला चमार ॥ ३ ॥
ब्राह्मन के कुल जन्मि कै राम भक्त जो होए ।
धरनी देखो धरनि मे ता सम तुलै न कोए ॥ ४ ॥
एक ब्राह्मन कुल उपजी दुजै प्रभु अनुराग ।
धरनी प्रगटे जानिए ता शिर मोटे भाग ॥ ५ ॥

मासु अहारी ब्राह्मना सो पापी बड़िजाउ ।
धरनी सुद्र बैष्णवा ताहि चरन शिरनाउ ॥ ६ ॥
देवा देइ पींडजल औ ग्रह तिथि वेहवार ।
धरनी ब्राह्मन बावरे बिनु व्रत शिरिजनिहार ॥ ७ ॥
कौड़ी कारन ब्राह्मने झूठ कहत हैं बीस ।
धरनी मुनि भावे नहीं चाहि चाहि जगदीस ॥ ८ ॥

(काएस्थ प्रसङ्ग)

काएस्थ करता पुत्र है धरनी शब्द प्रमान ।
देवी पुत्र कहाइ है जो मुरख अग्यान ॥ १ ॥
देवी पुत्र जो कहत है काएस्थ कुलहि बिचारि ।
धरनी ते नर पातकी अंत बौगुरचे झारि ॥ २ ॥
काएस्थ दास कहाइ कै दास भाय नहि होये ।
धरनी प्रभु ते चतुर हो जाए कमाइ खोये ॥ ३ ॥
धरनी चारिहु बरन में कली काएस्थ बुधिवंत ।
सो हरि भक्ति न जानि है ते फिरि पछतइहै अंत ॥ ४
धरनी काएस्थ धन्य है जो मद मासु नहि खाइ ।
परमारथ जिव भी बसै जीवतही तरिजाइ ॥ ५ ॥
धरनी लेखा समुझिबो मिटो पाप औ पुन्य ।

थाकी तरसो ना दीयो फाज़िल तरभि सुन्य ॥ ६ ॥
काएथ देखो पुत्र नहि है धरनीश्वर बंस ।
झूठ मानि है कागला सांच मानि है हंस ॥ ७ ॥

(मुसलमान प्रसङ्ग)

धरनी कही पुकारि कै सांच सुनो सब कोये ।
दर्दबंद दिल बंदगी मुसलमान है सोये ॥ १ ॥
धरनी एकै राम है सोइ खसम खोदाये ।
जो दुजा करि जानि है सो दोज़ख़ मो जाये ॥ २ ॥
दुनिआं करत जोरावरी कासो करिए जोर ।
धरनी ऐसो बेख़बरी जो बकरी सो बकरोद ॥ ३ ॥
धरनी मन मोलना करो अंदर बनी मसजीद ।
तहां निमाज़ गुज़ारिऐ जहां न रोज़ा ईद ॥ ४ ॥
धरनी हिन्दु तुरुकनि अपुवप अपेला राम ।
अपनो घर सूझै नहीं झगरि मरै बेकाम ॥ ५ ॥
धरनी चौदह तबक पर एक अजब मसजीद ।
खासे बंदह सुख कीयो मोक़बल करे मरजीद ॥ ६ ॥
धरनी सैयद ते भले जो सदा सनेही मूल ।
बहुत मेआमति छोड़ियो बीगरा करै क़बूल ॥ ७ ॥

धरनी शेख सो भले जो खुद मे लखै खोदाये ।
खूब कहै सबी काहु को जौ मदरसी त्यो गाये ॥ ८ ॥

धरनी मोगल ते भलो जो करै पांच को बंद ।
मन सो आसा तोरि कै आपु रहै निर्दंद ॥ ९ ॥

धरनी पैठान ते भले जो सांच पकरि दिल माहि ।
टेक निबाहै आपनो कैसहु छोड़ै नाहि ॥ १० ॥

धरनी जोलहा ते भले जो काया करिगह पैठि ।
पुरिया प्रेम सुधारि कै रहै निरतर बैठि ॥ ११ ॥

धरनी धुनिआ ते भले जो धुनै आपनो देह ।
गला ग्यान सुधारी लै मकठा रहै न देह ॥ १२ ॥

धरनी कसाइ ते भले जो मीथ्या गाइ पछारि ।
पकरै छुरी ग्यानकी जबह करै परचारि ॥ १३ ॥

धरनी कलावत ते भले जो गावै कला को अंत ।
गाइ बजाइ रीझाइ कै जाइ मिलै निजु कंत ॥ १४ ॥

धरनी भठीआरि ते भले जो आपु पीर सुख देहि ।
आगे आपहो अधीनता जन्ह का कछु नहि लेहि ॥ १५ ॥

ईस्वर सब जीव ते पकड़े एक पनाह ।
धरनी ताके जानिए खुबै खैर सलाह ॥ १६ ॥

(हिन्दु प्रकरण)

जाति सभी की एक है करनी ते बहु नाम ।
धरनी देखो धरनी मो फिरि सभ एकोहि ठाम ॥ १ ॥
सर्व जाति मो साधु है साधु माह सब जाति ।
राति माह ज्यों दीन है दीन मो रहती राति ॥ २ ॥
धरनी हिन्दु सो भला जो हद बेहद को जान ।
काया माह तीरथ करै दया धर्म परमान ॥ ३ ॥
धरनी बाम्हन ते भले जो ब्रह्म करै जजमान ।
सनमुख बैठारे निस दिन बांचे प्रेम पुरान ॥ ४ ॥
धरनी छत्री ते भले जो चढ़े राम रन माहि ।
परग परग आगे चले पाछे चितवत नाहि ॥ ५ ॥
धरनी बानी ते भले जो बनिजे राम को नाम ।
फेरि फेरि तौलत रहे पलु पलु आठो जाम ॥ ६ ॥
धरनी कायस्थ ते भले जो किलबिख रहै न कोए ।
ऐसा लेखा करि चले जो बहुरी ना लेखा होए ॥ ७ ॥
धरनी काछी ते भले जो काया कोआरी लेइ ।
तरकारी करि पांच फल राम दुआरे देइ ॥ ८ ॥
धरनी कुरमी ते भले जो खेती भक्ति कमाए ।
एक बार को उपजै दुख दालिद्र नसाए ॥ ९ ॥
धरनी ग्वाला ते भले, जो ठाकुर को ठटीवार ।

गोचरावै आतमा चौन माया संसार ॥ १० ॥
धरनी गड़ेरी ते भला जो गाडर बढ़ी बिबेक ।
ऊन उतारै सुन में रचै कामरी एक ॥ ११ ॥
धरनी सोनार ते भले जे हरि के नाम भौ हेम ।
गहना शब्द सुधारिआ पहिरै जातन प्रेम ॥ १२ ॥
धरनी गंधी ते भले जो शब्द सुगंध बसाये ।
अष्टगंध को अरगजा च्वौरी कैक शोराये ॥ १३ ॥
धरनी तंबोली भले जो पान पचीशो जोरि ।
ततु तार सो बांधि के त्रीगुण मसाला तोरि ॥ १४ ॥
धरनी माली ते भले जो प्रेम पुहुप को हार ।
तन डाली भरि तोरी कै पहुचावै प्रभु द्वार ॥ १५ ॥
धरनी भांट ते भले जो रहै ब्रह्म ब्रह्माये ।
महाराज राजी करै बिविध कवित बनाये ॥ १६ ॥
धरनी कथका ते भले जो प्रेम कथा परगास ।
चौत चौन्सा ब्यापे नहि संतत हृदय हुलास ॥ १७ ॥
धरनी तेली ते भले जो तन कोल्हु मन बैल ।
सत सुखल सरीसो करै ततु निकारै तेल ॥ १८ ॥
धरनी कलाल ते भले जो भठि काया चढ़ाये ।
समीता अमल चुआइलै मौतद्धन लाये ॥ १९ ॥

धरनी काछु ते भले जो भुजि कर्म कैराछ ।
बोये बछुरो न जपजि करै जो कोटि उपाउ ॥ २० ॥
धरनी कुंभार ते भले जो मन माटी चित चाक ।
बासन बुधि बिमल करैं ब्रह्म अगिन के पाक ॥ २१ ॥
धरनी लोहार ते भले जो हृदया धरै निहाये ।
भो का भौंडा तोरिकै बंको गढै बनाये ॥ २२ ॥
धरनी बढ़इ ते भले जो कर्म काठ ले फारि ।
जम जाड़ा ब्यापि नहीं ज्ञान अग्नि पर जारि ॥ २३ ॥
धरनी दरजी ते भले जो सूरति सुइ मन ताग ।
सदा सहज धर सीअना अभिअंतर अनुराग ॥ २४ ॥
धरनी पटवा ते भले जो पाट सुधारी प्रीति ।
पला पकरि कोइ ना सकै चले जगत को जीति ॥ २५ ॥
धरनी रंगी ते भले जो तन मन रंगी लाल ।
नीरषै लाली लालको छोड़ी लोक जंजाल ॥ २६ ॥
धरनी डोली अति भले जो तन डोली मन बास ।
रहै चढ़ाये ततु को छव रितु बारह मास ॥ २७ ॥
धरनी नाउ ते भले जो ज्ञान छुरा ले हाथ ।
ज्ञानी पारस लाये कै मन को मुड़ै माथ ॥ २८ ॥
धरनी धोबी ते भले जो सत को साबुन लाये ।

ऐसा टूका सुधारि ले जो बहुरि न धोखा जाये ॥ २९ ॥
धरनी बारी ते भले जो पिति पातरी लाए ।
जाइ पहुंचे कन्त घर संत को जूठन खाए ॥ ३० ॥
धरनी धीमर ते भले जो तन सरवर मन जाल ।
ततु तुमरी ज्ञान गुन घेरि बझावे काल ॥ ३१ ॥
धरनी मैना ते भले जो निसदीन करै पुकार ।
सोअत जागि आतमा परै न जम की धार ॥ ३२ ॥
धरनी मोंची ते भले जो निर्मल चित को चाम ।
करै प्रान की पानहो नहि छोड़ै बीस्राम ॥ ३३ ॥
धरनी सूपच ते भले जो लीए सहज का सुप ।
पंथ बुकारतही चले हरि मंदिल होये सुप ॥ ३४ ॥

(सोवाए प्रसङ्ग)

नाथ नाथ के हाथ है ताको फीरत अहार ।
धरनी तहां तहां जाइये जह जह अंस हमार ॥ १ ।
निरगुण को गुण सकल है औगुण धरीऔ काहि ।
परालब्धि जब जाहिसो धरनी मिलिऔ ताहि ॥ २ ॥
धरनी मनवचकर्मना सुरति करै जो जाहि ।
फिरि फार काहुको नहि अवसे परूो ताहि ॥ ३ ॥

अवलगि जो प्रभु रचि रह्यो भुक्त मान भी सोइ ।
आगे है धरनी कहै सो आजु न प्रगटा होय ॥ ४ ॥
धरनी काहि असीसिये औ दीजे काहि स्राप ।
दूजा कतहु न देखिए सब घट आये आप ॥ ५ ॥
इन्द्र कते को चलीगए देव इन्द्र कत जाहि ।
धरनी चरन सरन लीयो सो अमते कहां समाहि ॥ ६ ॥
बिमल बिनोदा नंदजी देह तजी तन जानि ।
धरनी के घट भीतरे प्रगट बिराजे आनि ॥ ७ ॥
धरनी कथनी लोक की ज्यों गिदर की ग्यान ।
आगम भाखि और के आपु परे मुख खान ॥ ८ ॥
धरनी सो पंडित नहि जो पढ़ि गुन कथि बनाए ।
पंडित ताहि सराहिये जो पढ़ा बिसरि सब जाए ॥ ६ ॥
धरनी कागद फारि कै कलम पवारे दूर ।
कया कचहरी बैठि कै बैठो रह्यो हजूर ॥ १० ॥
धरनी गाएन जानतो जब संसे संसार ।
पायो संवतो साधु की गावो बहुत प्रकार ॥ ११ ॥
धरनी जह लगि देखिए तहां लो सबै भीखारि ।
दाता केवल रामजी देत न मानै हारि ॥ १२ ॥
नहि चोरी करही न चाकरी नहि खेती बैपार ।

धरनी भीक्षा सहज की भीले सहज प्रकार ॥ १३ ॥

धरनी मन मिलनी कहा जो तनक माह बिलगाए ।
मन को मिलन सराहिये जो एक में एक होजाए ॥ १४ ॥

धरनी कोउ निन्दा करे तू निन्दा जनि भाखु ।
जो कुछ कहे सो आपु को एहि जानि जिय राखु ॥ १५ ॥

धरनी कोउ निन्दा करे तु असतुति करु ताहि ।
तुरित तमाशा देखिए एहि साधु मत आहि ॥ १६ ॥

नवरात्री कलसा कहा जो दशए देत उठाए ।
धरनी सो कलशा धरो जन्मान्त नहि जाए ॥ १७ ॥

धरनी नैन्ह निरखि के हृदए कियो बिचारि ।
नाता काहु ते नही संगति है दिन चारि ॥ १८ ॥

धरनी सो घर जो कीयो गढ धवराहर पूर ।
जो धर में घर नहि कीयो तो सहज सबै घर धुरि ॥ १९ ॥

धरनी खेती भक्ति की उपजै होत निहाल ।
खाए खरच निघरै नहि परै न दूख दुकाल ॥ २० ॥

सवति साल संतन्ह दीयो सामि सेवा सुख पाऊ ।
धरनी ता प्रभु बिसरै अब जिय रहो कि जाऊ ॥ २१ ॥

तीनि लोक पर स्वर्ग है ता ऊपर सुर धाम ।
धरनी ताउपर साधु है ताउपर है राम ॥ २२ ॥

काम प्रस्त गिरहस्त है दंड जोग सन्यास ।
सब ऊपर हरि भक्ति है धरनी गहु बिस्वास ॥ २३ ॥
धरनी एह मन जंतु का बहुत कुभोजन खात ।
साधु संगती मृग होए रहो शब्द सुगंध बसात ॥ २४ ॥
धरनी जो अभिअंतर सो जानत है राम ।
हाथी को हंकार लो चिउटी को चिनगार ॥ २५ ॥
मूल मंत्र मथि एक मधु धरनी अमृत सार ।
मन माखी लुबुधो तहां सो कौन छोड़ावनिहार ॥ २६ ॥
एक एक सब कोइ करै भेद्दी बिरले कोइ ।
कहे धरनी कहवा बसैं कौन सरुपि होइ ॥ २७ ॥
एक बसै सब जीव में सब एकहि मो आहि ।
गुरगंम परचै जेहि भइ धरनी बंदै ताहि ॥ २८ ॥
जब लगि पिय परदेसिआ बहुत बढ़ि जीव दंदु ।
नेह समुझि दया करी धरनी धनि आनंदु ॥ २९ ॥
दीयो दया करि जिन्ह तिलक कीआ श्याम तन लाल ।
धरनी ता बीस्वास है जो बड़ो दयाल दयाल ॥ ३० ॥
जपसी तपसी राजसी पंडित काव्य तबीब ।
धरनी देखो धरनि मों सब ते बड़ो ग़रीब ॥ ३१ ॥
सब ते बड़ो ग़रीब है बड़ो ग़रीबनेवाज ।

धरनी जाके मौज तें बहुत गरीबाराज ॥ ३२ ॥
धरनीं एकै गांव है टोक टाक बस लोग ।
धरनी चलि फिरि देखाना बिनु संसै दिनु सोग ॥ ३३ ॥
धरनी एकै बानिया किए अनंत दोकान ।
जो आपुहि जह डाइ है सो हमरे मन मान ॥ ३४ ॥
सुरति बास बैकुंठ नहीं धरनी नहीं अकास ।
रामानंद कबीर जहा पीया औरै दास ॥ ३५ ॥
धरनी तेही बरनी नहीं जो महिमंडल को राज ।
सो सपुत एहि जगत में जो हरि भक्ति दिढ़ाऊ ॥ ३६ ॥
मज्या कुष्टि कोटि जौ गाड़ै गंगा मांहि ।
धरनी पावन गंगाजल होत अपावन नाहि ॥ ३७ ॥
देह द्वारिका भितरे राजत है रनछोर ।
धरनी अंत जाइये इहां होये जो और ॥ ३८ ॥
जगनाथ जगमग करैं हरिजनही के मांहि ।
धरनी मर परचै बिना पुरसोत्तमपुर जाहि ॥ ३९ ॥
धरनी कहि पुकारि कै सुनो सकल संसार ।
जन्म जन्म के आंधरा अब कै भये डिठार ॥ ४० ॥
धरनी बाहर धुंधरो भीतर जागो चन्द ।
भयो भलो को अतिभलो है मंदे को मन्द ॥ ४१ ॥

धरनी नव दस द्वार लो खबरदार नरलोइ ।
शुभ द्वार एकादशा सो आनै बिरलै कोइ ॥ ४२ ॥
धरनी जहां जहां भक्त जन साधु चलै तेहि गैल ।
बिनु बैष्णव का गांव जौ बिना पोंछि का बैल ॥ ४३ ॥
कनखो मटको भेटियो धरनी कुटी कुबानि ।
खुली केवारी लागि गइ रहे ततु पहिचानि ॥ ४४ ॥
उदधि नदी पोखरीकुआं धरनी बरनी न जाइ ।
जब लगि बरिसे आकास नहीं घेरि घमंड घहराइ ॥ ४५ ॥
धरती नारि सरूप है स्वामी सरूप अकास ।
सहज प्रेम की सोचनी सदा बसै जनु पास ॥ ४६ ॥
परमारथ के पंथ चढ़ि माया लगावै ब्याज ।
धरनी तेहि समुझावती आपुहि मरिये लाज ॥ ४७ ॥
परमारथ के पंथ चढ़ि बहुरि करै बेवहार ।
धरनी देखो धरनि मों तासों कौन गंवार ॥ ४८ ॥
पुरब पश्चिम दखिन उदधी जगत बड़ी जाहि ।
धरनी मंडल बनि रहो हरिजन खेलहि खाहि ॥ ४९ ॥
जगनाथ रन छोरजी रामनाथ बद्रीस ।
धरनी हरिजन हरिघरी लिए फिरत है शीस ॥ ५० ॥
रामानन्द निज दास जो सखा सघन चहुओर ।

धरनी वाही मूल ते बहुत भये भुइफोर ॥ ५१ ॥
राम राम सुमिरन जहां जीव दया सत संग ।
धरनी सदा अन्हात जनु प्रात वार जल गंग ॥ ५२ ॥
बिखि लागी दुनिआ मरै अमृत लागी साधु ।
धरनी ऐसी जानि है जा की मता अगाधु ॥ ५३ ॥
अवर देव की सेवना लखु निकट जनि जाइ ।
धरनी राम के नाम पर भिखि माँगि करि खाइ ॥ ५४ ॥
आये हैं हरि द्वार सों फिरि जैहैं हरि द्वार ।
धरनी कछु दिन देखना प्रेम भाव संसार ॥ ५५ ॥
सुरति मुरति सों लाइये जो सुरति है मूल ।
धरनी देखि न भूलिये लघु दिरीघ अस्थूल ॥ ५६ ॥
धरनी आपु स्वारथे कछु न करिये काज ।
परमारथ के कारने पर के धरिये पाज ॥ ५७ ॥
मद मिसिआइ कसतुरी छुमरि चुना सीप ।
धरनी सो नर खातु हैं जाहि न राम समीप ॥ ५८ ॥
निरदाये का कपरा निरदाये का बास ।
निरदाये का बोलना धरनी नौखंड दास ॥ ५९ ॥
संसारी सत सालनी धरनी धरिये दूर ।
साधु संगति मिलि पाइये रमावटी मंजुर ॥ ६० ॥

आवनिहारे आवही जानिहार सो जाहि ।
धरनी हरि हरि सुमिरना हरष शोक कछु नाहि ॥ ६१ ॥
गर्भ महा प्रति पालियो लोका माह प्रतिपाल ।
धरनी आगे सोइ प्रभु ताते मन खुसिहाल ॥ ६२ ॥
धरनी सिर पर सर्वदा श्री रघुनाथ सहाइ ।
जहा जहा चलो कुपथ देत सुपथ चलाइ ॥ ६३ ॥
बहुत बिनोदी जगत में बहुत बिनोदा नाम ।
बिमल बिनोदा नन्द के धरनी दास गुलाम ॥ ६४ ॥
धरनी चहु दिस देखियो बहुबिध मानुष टोइ ।
सुख होइ जिन्ह मुख देखत मिले बिरला कोइ ॥ ६५ ॥
मति कोइ बैरी गनै मति कोइ जानै इयार ।
धरनी करनी आपनी सब कोइ उतरै पार ॥ ६६ ॥
तानी कथनी सब करै धरनी बरनी नाजाए ।
तानी भरनी जो नहीं तानी तौलि बिकाए ॥ ६७ ॥
तानी कथनी जो करै करनी भरनी छाड़ि ।
धरनी देखो धरनि में ता सरि तुलै न कोइ ॥ ६८ ॥
बरबस जग जीती चहै अंत हारिहैं सोइ ।
हरि बिना धरनी कहै जग जीतमो न कोइ ॥ ६९ ॥
अपने अपने काज को धरनी सभै सेयान ॥ ।

बिरले कोइ परमारथी देखो सकल जहान ॥ ७० ॥
कासों किजिए बैरता धरनी येह संसार ।
जो देखा तहकीक कै सभी हमार हमार ॥ ७१ ॥
का इक बांचि कमानसि बिध कर्म बेवहार ।
धरनी अर्पो ताहि को जासु नाम करतार ॥ ७२ ॥
जो गङ्गा हरि द्वार मो सो गङ्गा परिआग ।
सो गङ्गा है ब्रहमपुर लमेल जाहा लाग ॥ ७३ ॥
पछिम द्दरी छेत्र प्रधान पुरब हरिहर छेत्र बखान ।
मध्य सो ब्रहम छेत्र स्थान धरनीधन जो कर स्नान ॥ ७४ ॥
धरनी रमति धरनि में अस्थल है बैकुंठ ।
सांच सांच करि मानि है झुठ जनि है झूठ ॥ ७५ ॥
धरती एकै गांव है एक कोस परमान ।
धरनी लीजे समुझि कै कहा कहीजे आन ॥ ७६ ॥
जिन्ह हरि भक्ति न जानिअ धरनी है नर सूर ।
अंत गाड़ मो जाइहै है मसला मशहूर ॥ ७७ ॥
धन्य महिमा वोहि रामको जो औरन तारनहार ।
धरतिहि में तीनो रचे धरनी सरग पतार ॥ ७८ ॥
तन न गयो तीरथ कहीं मन दौरो नौखंड ।
धरनी गुरुगम लखि परो घट भीतर ब्रहमण्ड ॥ ७९ ॥

(सोरठा)

करत न लागै बार करता चाहै सो करै । फैलि गयो संसार धरनीस्वर की संप्रदा ॥ १ ॥

(शब्द प्रसङ्ग)

धरनी शब्द प्रसंङ्ग लखी जाको जिअरा जाग ।
सात दीप नवखङ्ग में तासिर मोटे भाग ॥ १ ॥
ताको शब्द सराहिये कहै जो समुझा जानि ।
धरनी सो पुनि धन्य है लेत शब्द को मानि ॥ २ ॥
धरनी शब्द परतित बिनु कैसहु कारज नाहि ।
शब्द सीढ़ी बिनु को चढ़ै गगन झरोखा माहि ॥ ३ ॥
शब्द शब्द सब कोइ कहै धरनी किये बिचार ।
जो लागै निज शब्द को ताको मता अपार ॥ ४ ॥
शब्द सकल घट ऊचरै धरनी बहुत प्रकार ।
जो जानै निज शब्द को तासु शब्द टकसार ॥ ५ ॥
शब्द सरूपी राम जो बसैं सकल घट माहि ।
धरनी पशु सो मानइ शब्द बिवेकी नाहि ॥ ६ ॥
कवित कथा पद ग्रथ गुन साखी शब्द अनेक ।

धरनी बहु घट उचरिपै हरिजन हाय बिबेक ॥ ७ ॥
धरनी धरिये टेक नहीं करिये शब्द बिबेक ।
भीतम राम अनेक है रता राम सो एक ॥ ८ ॥
बोले ते अच्छर भआ बोले ते भाशब्द ।
धरनी जो नहिं बोलना तब अच्छर न शब्द ॥ ९ ॥

(समीता प्रसङ्ग)

धरनी जाहां लो जीव है नौग्रह भुत बैतार ।
चौवगुण जमसुर असुर सकले होत हमार ॥ १ ॥
रवि ससीमण्डल बुध गुरू शुक्र शनि राहु औ केतु ।
बाउर बैरी करि गने धरनी सब सो हेतु ॥ २ ॥
बायस जंबुक स्वान खर मृगा छेम करी छीक ।
धरनी सगुण सन्देसरा सभै कहत हैं नीक ॥ ३ ॥
गज तुरंग महिषा वृष भखर खचर अरु उट ।
धरनी देखु पती मिही देह धरे बहु खूंट ॥ ४ ॥
पुरनवासी सर्ब्बदा सदा अमावस बुझि ।
धरनी सदा एकादशी जाहि परी है सुझि ॥ ५ ॥
धरनी सभ दिन सुदिन है कबहि कू दिन नाहि ।
चहुदिस लाभ चउगुनी जो हरि सुमिरन हियमाहि ॥ ६ ॥

धरनी तिल तंदुल जल घृत मधु मिसरी आदि ।
दिन्हो अपने पीत्र को एकै पिण्ड संवारि ॥ ७ ॥
गङ्गा जमुना गोमती गलि काउ दधि अपार ।
धरनी अपनैं पीत्र को अर्पै एकहि बार ॥ ८ ॥
कर्म रेख आवा गवन नर्क बास जम त्रास ।
धरनी ताकी सब मिटी जाकि हरि बिस्वास ॥ ९ ॥

(रत्नावली)

राम नगर में बनो बनावो धरनेस्वर को द्वारा ।
लै हैं जानि मानि महि मण्डल साधु संत संचारा ॥ १ ॥
चारि संप्रदा एवा संघती चारी खुट जम पैहैं ।
बास गोपाल दास धरनी के धरनेस्वरी कहइहैं ॥ २ ॥

(मंत्र प्रसङ्ग)

ओं प्रान उठंत धरंत भुमि पग श्री गुरु चरनउ चरना ।
धरनी आदि अंत मध्य तिन्ह कै जुग जुग जा राम मरना ॥ १ ॥
ओं तुलीसोकंठ तीलक हरी मन्दिर धरनी धरन सो देखी ।
रामा नन्द अवतार छाप कसी मुक्ति को मारग एकी ॥ २ ॥
ओं आतम राम राम रस पीवे पीवे प्रेम पीआला ।

धरनी बरोसे धार सुधार सहर से दिन देआल ॥ ३ ॥
औ हरीजन आतम राम पुजैरो प्रमाला को भाखे ।
धरनी परे कबुलि कमाइ जो पाती पहुचावे ॥ ४ ॥
औ पारब्रम्ह प्रमातम आतम कष्ट सकल उपजाए ।
धरनी सो प्रभु दाता भुगुता जनम सुफल सेवकाइ ॥ ५ ॥
औ साधु के चरनामृत उठ लीजै पीजै प्रीति बढ़ाइ ।
धरनी कर्म कबहु नहि लागे भवसागर तरि जाइ ॥ ६ ॥
महा प्रसाद माहातम कलिकाले मुख मध्य चलावे ।
औ धरनी तीरथ ब्रत फल जेघर बैठे फल पावे ॥ ७ ॥
जीव पवन मन प्रान समरपन सैन समीसब कीजै ।
धरनी हृदय कमल जहां के सो तहां सनीगत लीजै ॥ ८ ॥
औ कसना करो लाख को सुमिरो चलो संत के साथे ।
धरनी आगे पाछे जनि सोचो गुरु प्रसाद धरि माथे ॥ ९ ॥
कस ना खोलो हरि हरि बोलो मंमा आस न राखो ।
धरनी चरन खटारी संख धुनि जग जीवन जस भाखो ॥ १० ॥
औ राम राम कहि धुइ सकेलो हरि हरि कारत जगाइ ।
धरनी आसन बैठो आपनो सुरति धनी सो लाइ ॥ ११ ॥
बिनु जल जला कमल बिनु फुला सरवर एक सोहाइ ।
धरनी गुरु गम तन मन तामें प्रती दिन पैठी नहाइ ॥ १२ ॥

जिन्ह जाना सो भये जानकी जिन्ही राधा सोइ राधा ।
धरनी सो जन भेद जानी है परम तंतु जो साधा ॥ १३ ॥
औं गङ्गा को जल आनी पात्र भरी सन्त को चरन खटारि ।
धरनी जो अचवन करि तो बिना अस्त्र अरि मारि ॥ १४ ॥

(देव प्रबोधन मन्त्र)

औं सुनु सुनु सोखा भाइ, जनि खोटी करो कमाइ ।
करू जीव घात मनहाइ, श्री रामानन्द दोहाइ ॥ १ ॥
औं सुनु बोर सावर काहू, जनी आपन काम बिगाहू ।
करू मद मांस मनहाइ, श्री राम नन्द दोहाइ ॥ २ ॥
औं सुनु गोरइआ भाइ, जो चाहो आपु भलाइ ।
करू मद मांस मनहाइ, श्री राम नन्द दोहाइ ॥ ३ ॥
औं सुनु माइ पचंप्रीआ, तोहि मता पिता के किरिआ ।
करू मद मांस मनहाइ, श्री रामा नन्द दोहाइ ॥ ४ ॥
औं सुनु परमेस्वर रानी, तु कहां फिरहु बौरानी ।
करू मद मांस मनहाइ, श्री रामा नन्द दोहाइ ॥ ५ ॥
औं दुरू मत छोरो दुर्गा, तजो भेड़ा भइसा मुरगा ॥
करू मद मांस मनहाइ, श्री रामा नन्द दोहाइ ॥ ६ ॥

(उधवा प्रसङ्ग)

धरनी धर्म कर्म कलोहो कछुवो न काम ।
मन बच कर्म भजु केवल हो करता राम ॥ १ ॥
धरनी धुआ के धवरहर हो धुरी कर धाम ।
तइसन जीवन जगत मह हो बिनु हरि नाम ॥ २ ॥
बन मृग और अहेरी आहो बड़ बटवार ।
धरनी मन मृग जो बधोहो धन अवतार ॥ ३ ॥
धरनी जीव जनि मारहुहो मांसु जनि खाहु ।
नंगी पाव बबुर बनहो नहीं नीरबाह ॥ ४ ॥
धरनी एह मन मृग भैला हो गुरू भैला व्याध ।
बान शब्द हिए चुभी गैला हो दरसन साधु ॥ ५ ॥
धरनीजि हो धनी बीर हिनहो धरइ न धीर ।
बिहबल बिकल बिलखि चित हो दुबर शरीर ॥ ६ ॥
धरनी धीरज ना रहै हो बिनु बनवारी ।
रोअत रक्त के असुअन हो पन्थ नीहारी ॥ ७ ॥
धरनी पीआ परवत पर हो चढ़त डेराउ ।
कबहु के पाव डगामग हो तब कहां ठाउ ॥ ८ ॥
धरनी धरकत होये जनु हो कर जे करेज ।
ढरकत भरी भरी लोचन हो पीआ नहीं सेज ॥ ९ ॥
धरनी धवल धवरहर हो चढ़ी चढ़ी हेर ।
आवत पीअहो न देखीं हो भैली अबेर ॥ १० ॥
धरनी छुग से हो जीवन हो जाउ बोहाए ।
परि पुरुष तर आंचर हो दीहल डसाए ॥ ११ ॥

धरनी धग धन से हो दिनहो मिलय जेनाह ।
संग पवढ़ि सुख वैलसम हो सिर धरि बांह ॥ १२ ॥
धरनी ध्यान तहां धरु हो खुलइ केवार ।
निरखि निरखि परिखत रहु हो बारमबार ॥ १२ ॥
धरनो धरो रहु हरि ब्रत हो परो हरि मोह ।
धनिसुत बन्धु कोभवजत हो अन्त कोछोह ॥ १४ ॥
धरनी धोख जनि लावहु हो अपनी वोर ।
प्रभु सो प्रीति निबाहिए हो जीवन थोर ॥ १५ ॥
धरनी अधर उदे भैला हो जोती सरूप ।
देखल मनोहर मुरती हो रूप अनुप ॥ १६ ॥
धरनी धर्म करे नहो हो डरइना पाप ।
संत गुर जीन्हहो लखावल हो अजपा जाप ॥ १७ ॥
धरनी फिरहो देसंत रहो धरो धरो भेस ।
कोइ कोइ देखो अरेहंत रहो गुरू उपदेस ॥ १८ ॥
धरनी घनी गनोका भै कोहो रसोआ राम ।
सहज सुरंग रंग भीजी गैला होवनी गेला काम ॥ १९ ॥
धरनी धनो केर बालमु हो बरनी ना जाए ।
सनमुख रहत रइनी दीन हो मोलत न धाए ॥ २० ॥
धरनी जीन्ह पीया पावल हो मिटो गैलो दंद ।
उधवा उरध सर गाएउ हो हृदये आनन्द ॥ २१ ॥
धरनी चहुदिस चरचो अहो करिये पुकार ।
ना हम काहु के हो केहु ना हमार ॥ २२ ॥

धरनी धाइ चलहु जनि हो पीअनी बाट ।
खोटैं दाम कवन सौधौ हो नागरी हाट ॥ २३ ॥
धरनी पलक परै नहीं हो झलक सोहाए ।
पुनि पुनि पीअत प्रेम रस हो प्यास न जाए ॥ २४ ॥
धरनी धन तन जोवन हो रहउ की जाउ ।
हरि के चरन हृदये धरि हो हेतु जड़ाउ ॥ २५ ॥
गोरीआ गरभ करहु जनि हो गोरे गात ।
कालिह परो भरी जइहे हो पिअरे पात ॥ २६ ॥
धरनी बिलखि बिनति करै हो सुनहु मुरारि ।
सभ अपराध छेमा करु हो सरन तोहारि ॥ २७ ॥
हाथी टेल हठीले हो सिपह सलार ।
दिन चारि चहल पहल भैले हो पुनि सुख छार ॥ २८ ॥
धरनी अैठली पगरीआ हो दुइ तरुआरि ।
सो तन पनीआ पवारहो हो आगि भोकारि ॥ २९ ॥
धरनी धन धन से हो धनी हो कुल उजिआर ।
जाकर बहिआं धइले प्रभु हो हाथ पसार ॥ ३० ॥
धरनेस्वर ब्रत चित धरु हो धरनी दास ।
तासु चरन बलि बलि जाउ हो प्रेम प्रगास ॥ ३१ ॥
धरनेस्वर गुन गावल हो धरनी दास ।
जहां जैदेव नाम देव कबिरा हो ताहां देहु बास ॥ ३२ ॥
धरनी आपन मरम कलि, हो कहिए काहि ।
जाननिहार सो जानिहे हो जस कछु आहि ॥ ३३ ॥

उधवा कइहु से सुधवा हो तपति बुझाए ।
धरनी धनी दरसन बिनु हो अति अकुलाए ॥ ३४ ॥
उधवहि देउ दही दुधवा हो कुल हंकाइ ।
धरनेस्वर हि लेआवहु हो बेरी जाइ ॥ ३५ ॥
जोबन रतन जतन करि हो धरेउ जोगाइ ।
धरनेस्वर येहि अवसर हो बेलसहु आइ ॥ ३६ ॥
हिन्दु तुरुक जनि छोड़हु हो धरम इमान ।
धरनी दास पुकारै हो मोअत निदान ॥ ३७ ॥
धरनी अतिथ कहाएउ हो धन बेवहार ।
सहजहि सुपंथ बोसरी गेला हो पर बनझार ॥ ३८ ॥
परमारथ पंथ चढ़ि कै हो वामें किसान ।
जनु घर घोड़वा अछइत हो गदहा पलान ॥ ३९ ॥
काहु के बहुत बिभव बल हो काहु परिवार ।
धरनी कहत 'हमहि बल हो राम तोहार ॥ ४० ॥
सबुजा सोभित सिर पर हो दुइ समसेर ।
नेहितन उपर देखिए हो मटिआ के ढेर ॥ ४१ ॥

उधवा प्रसङ्ग संपूर्ण ।

(पेहानी प्रसङ्ग)

नारि पुरुष समतुल चलै नहि पावपिआदे ।
सतिवंता अति दुनो खाहि सो आधे आधे ॥
तिनि पुरुष समसुल हो सब सेज सुतावही ।

अंतरीक्ष जोरीआही बहुरो जन दुइ बेगरावही ॥ १ ॥
नारी एक संसार पीआरी पांच भतार करे बरिआरी ।
जो ना बुझे सो हारे छोड़ आन अंग नहि बाइस गोड़ ॥ २ ॥
रुख ना बृच्छ बसे तहां सुगा अंग बिराजि पहिरे लुगा ।
मुख पर मासा लछनमान जो बुझे सो बड़ा सेआन ॥ ३ ॥
राउ अकेला रहे गढ़ माह आपु सवारे बिलसे छांह ।
बुझो दुआरी लगी न चोट भीतर खंदक बाहर कोट ॥ ४ ॥
नारी एक बहुतन्ह सुखदाइ पीऐ न पानी पेट भरि खाइ ।
चारि महीना ताकरि चाउ पंचवें मास रहीं की जाउ ॥ ५ ॥
जव भरि ताज न गज भरिडंडी धरनी दास पेहानी मंडी ।
बिना बीज एक जमे जुआरी ना हर चले ना परे कुदारी ॥ ६ ॥
उपजो सघन कोआरी छोटी सात हाथ होए ताकर रोटी ।
देखो दुआरी अजब तमाशा कनिआं लांगट बर बहुआसा ॥ ७ ॥
एक गज पूरुष सात गज नारी पंडीत होय सो लेइ बीचारी ॥
जुध एक अपने मगु आउ सात पांच मिलि करही बधाउ ॥ ८ ॥
घर आगन को लेही बोलाये हाथही मागही दाम चुकाये ॥
एक बसे नगर एक बसे पानी एक घर में एक बने सेआनी ॥ ९ ॥
खेडा भेडा बोदर माह आठो भीत जानि लेहु तुह ॥
बुझो मनोहर इहे पेहानी कहतही मिले दुध अरु पानी ॥
हाथी चढी के मोल बिकाए उहवा होए तौउ देहु पठाए ॥
धरनि देखो धरनी में एक अजुबा बात सुख सुने दुख होत है
कठिन कहीअनही जात ॥ ११ ॥ पेहानी संपुर्ण ।

(कवित प्रकासक पोथी छंडीका)

सहजही ग्रोष्टी को इष्टो लागो रहे सादा सर्बदा भरी पुरी भरता ॥ अर्थ धर्म काम मही मोख्य बीस्राम सुख देत प्रभु जाही ताही कवन हरता ॥ कर्म काटीजात भव सागर सुखात कही धरनी येह बात नही कही भरता ॥ सरग पताल महीमण्ड ब्रह्मण्ड जत कामीनो सकल एक पूरुष करता ॥ १ ॥ कीवो षट कर्म नही दया धर्म तन तजो नहि भ्रम कोमो कर्म कुटै । दीवो बहु दान करी बीधीध बिधान मन बढो अभीमान जम प्रान लुटै ॥ यग अरु योग तप तीर्थ ब्रत नेम करी बिना प्रभु प्रेम कालोकाल कुटै । दास धरनी कहै कौन बिधी निर्बहै जौन गुरु ग्यान तब गगन फुटै ॥ २ ॥ उठो ओंकार दस द्वार के देव हरै पांच पचीस मिली करी कलोलि । अधर अस्थान जाहां द्वादस प्रवान ताहां धरनी धरी ध्यान नीवाँग बोलि ॥ हृदै कमला-सनो सकल मल नासनो बिना गुर बीकट पट कोन खोलि । जागते सोअते दसो दिस रैनो दीन रह सरयु नाथ जन साथ डोले ॥ ३ ॥ कीवो नही यग्य जग योग जप तप कछु तीर्थ ब्रत नेम साधो न कोइ । पढो पुरान गुन ग्यान जानो नहीं धरी नहीं ध्यान अभिमान खोइ ॥ पांच परिपन्च तें साच भाखो नहीं नाच नाचो कपट बिज बोइ । सांभल जगाए अपनाए आपुहि लिवो धरनि कह धरनि भो

धन्य सोइ ॥ ४ ॥ जीव की दया जिहि जीव व्यापै नही भुखै न अहांर प्यासै न पानी। साधु से संग नही सब्द सो रंग नहीं वांली जानै न सुख मधुर बानी ॥ एक जगदीस को सीस अरपै नही पाच प्रचीस बहु बात ठानी ॥ राम को नाम नीज धाम बीस्राम नही धरनीकह धरनि मो छग सो प्रानी ॥ ५ ॥ सरग को अन्त पाताल को अन्त महीमेर को अन्त कबीलास राखो। चौगुन को अन्त तीहु देव को अन्त काल्लास को अन्त ससी सुरज सैखो ॥ अग्नी को अन्त जल पवन को अन्त चहु बेद को अन्त परजंत पेखो ॥ दास धरनी कहै अलख आपै रहै सत को अंत नही समुझी देखो ६, राय राना जीति बाधी नाकीते झूठ झोनापसे ना कोइन बाचे ॥ झूठ पण्डित कहै काव्य झूठा चहै अवर को निरखै पीडकाचे ॥ भेख रचौ पचौ करै झूठ नही परीहरै देखी परौ पंचमन मगन नाचे ॥ झूठ संसार बेवहार धरनी कहै जक्त में कोइ कोइ भक्त सांचे ॥ ७ ॥ अर्ध सुख बासद समाश अवकास नही जठर में अनल की आचवारि। बाल पन बितीगो तरुन पन तेज भौ परै गिख खाद धन धाम नारि ॥ व्रुध पन आइगो चौकि चित चेत भो बिना जगदीस जम त्रास भारि ॥ बुझि मन देखु तीही सुझि कछु परत नाहिं धरनी तजि चलैगो हाथ झारि ॥ ८ ॥ पुरुब पगु परत परसीतम की पन्थ जनु पच्छिम फिरत रन छोर धौरै । दच्छीण रमत रमनाथ के साथ जनु उतर फिरत बहु सजौरै ॥ दास

धरनी कहत साधु संघति रहत भवन कै भितरै मन बटोरे । करे बिलछानि जेहि आनि संगत गुरु मिलो कहीं नहीं जात यह बात मोरे ॥ ८ ॥ हुतो जब सुन आकास बिस्तार नहीं किवो करता खरु नरक देवा । जोति उदोति जग बिदित दुहु दिस भवो पुरन प्रगास तम तिमिर छोया ॥ सारदा सम्भु सनकादि निगमादि जत सहित सुर असुर मर मुनि मुनेवा । धरनी जन करत कर जोरि उर दंडवत मेटि दुख दंद प्रभु मानि सेवा ॥ १० ॥

कबित्त सवैया

सुंदर देह सो आन पदारथ पाइ अकारथ काहे बहो । जो धन पावहु खाहु खिगावहु काहे अगारि संभारि गहो ॥ धरनी फिरि आवन दुरलभ है अवगो इनि को अमोले बिबहो । दिन चारी को भ्रम काहा भुलना भाइ राम कहो भाइ राम कहो ॥ १ ॥ दुर्लभ देह बिदेह कहा भवो अन्तहु है पुहु मिसटना । छित छार परो सुख भार जरो तन गार परो प्रभु जाघटना ॥ धरनी धरनि धरु एक धनी पगु जो कलि भ्रम को फंदचाहे कटना । तप तीरथ यज्ञ बिधान सभे करि गोबिन्द गोविन्द को रटना ॥ २ ॥ निरमल नाम निरंजन को अभि अन्तर ध्यान सदा धरुरे । भिलनी गनिका, गज गिध तरे मृगराज अजामिल ब्याध हुरे ॥ सावज कारण स्वान मरे तिमो तु नाम रोज गन्ध धहुरे ॥

धरनी धन सक्कती साधुन्ह को जपु माधव माधव माधवरे ॥ ३ ॥ मातु पिता सुत मीत सभै तग्र काहे ना दुइ दिन टेकि धरो । जम चोर हुतासन राज हरो धन मीजत क्षित हाथ खरो ॥ अजहु पकरो प्रभु की स्वरनो धरनी जनी धन्धही बुडी मरो । नर लोहि के ताव सो जन्म सुभाव गोपाल गोपाल गोपाल कहो ॥ ४ ॥ मोत महा उत-कान्ध चढे नही सुभत अन्ध अभाग हुरे । चित चेतु गमार बिकार तजो जनी खेत चढे क्षित भागहुरे ॥ जिन्ह बुन्ह बिकार सुधार किवो तन व्यान दिवो पगु त्यागहुरे । धरनी अपने अपने पहरे उठि जागहु २ रे ॥ ५ ॥ पानी तें पिण्ड बानइ दीवो जिअ मास छिगा प्रतिपालो पटासो ॥ निकरै भव मातु पिता सुत नारी औहो गजराज तुरंग छटासो ॥ चेतु अचेतु कहाँते भवो कोरीजे हो वाहा परीहों झपटा सो ॥ ध्यान धरो धरनेस्वर को दिन जात चला चलनी को अटा सो ॥ ६ ॥ जग जन्म भइ संगही संग औसंगही इस खेडी कोती आरिये ॥ संगही संग गो मन छोड़ो सखे संगही मन काहुन ते डरिये ॥ संगहि जमुना जल कोलि कोयो संगहि सुख सोइ निसा भरिये ॥ अब औसे भये सपनेहु नहि धरनी मन धीरज कैव धरिये ॥ ७ ॥ तीरथ राज के पंथ चले जन जो जन जो जन जन्न करे ॥ जमुना जल गङ्ग सरोस्वती संगम प्रेम की पौड़ ते पोच तरे ॥ माधव को मुख देखतही दुख दुरि दुरे सुख पुरि भरे ॥ धरनी धन ते धरनि में गनितन माह

जीबिनो परतीति करै ॥ ८ ॥ धरनी अति मान गुमान भरे दिन राति खिये रस को पिवना ॥ करी बिनती जीव जराव अनाथ मनी मन मान चिनी बिव ना ॥ छग सो धन से जिन्ह राह गही रदवे पद भारि भगा सिवना ॥ भाइ एक खोदाये के पाये गही बरहक बिसारि हथा जीवना ॥ ८ ॥ दिन चारि को संपति संघति है येतनो लगि कौन मनी करना ॥ एक मालिक नाम धरो दिल में धरनी भवसागर जो तरना ॥ निज बंक यह चालुह की कतिजालु न छोडु इमान दुनी घरना ॥ पशु पीर गहो परपीर करो जिवना न कछु हक है मरना ॥ १० ॥ कावल करार बिसारत हो जित लागत बात बरबकरै ॥ एक मालिक नाम गयदहो छोड़ि बखानत टारये रटंबरकरै ॥ संपति है बन संपती ठेक कहो कछु लेगे जीवबुरे ॥ धरनी नर देह कहा फल जो नहि जासु अलाह एक बकरै ॥ ११ ॥ आदि जो एक सो अंतहु एक जपो कलिआतिन्ह एक गहो ॥ हिन्दु मलेछ मिलेछ नहो कछु दोपट जो पलरापट हो ॥ धर्म इमान जमान सबै गुर पीर पुकारि पुकारि रहो ॥ धरनी सब सों सम्भाइ कहै भाइ क्यौं न सलामअलेक कहो ॥ १२ ॥ मोहो ना चेत अचेत छोतिय लंगा पर पौढी परो पटसारी ॥ आइ गयो तेहि अन्तर नाह अचानक हो गही अवर टारी ॥ नैन पलाउ धरी धरनी धपि धाइ चढीमन उर्ध अटारी ॥ मोहन मुरति मोहो लइ मोहि मोहि रहै हरि मोहि निहारी ॥ १३ ॥ चंचल चोर फीरै चहुंचीर अब सोइ रहै पहरी जिमि ठाढो ॥

जासन वैर बिरोध भयो प्रमोध भयो सोइ शेवश गाढो ॥ जासहु
.सो तों देआल भयो धरनी मन मानो है मोर अखाढो ॥ जा
दिन ते हरि नाम बसो हिय.तादिन से उर आनंद बाढो ॥ १४ ॥
काजन पण्डित डण्डित मुंडित दान दिय तप तीरथ अन्हाये.॥
काज नहीं कलि काम्य कीये कछु व्याज बढे तन तोरि नचाये ॥
काज नहीं धन जोरि करो रौन्हो फैलो फिरै थिरिमा थिरिकाये ॥
लै गुरु ज्ञान कहै धरनी निजु काज है केवल तंतु के पाये ॥ १५ ॥
जीवन थोर बचा भव भोर कहां धन जोर शरीर बढाये ॥
जीव दया धरि साधु को संघति पैहौ अभै पद दास कहाये ॥
जासन कर्म छपावत हो सोतो देखत है घट में घर छाये ॥
बेगि भजो धरनी सरनी नातो आवत काल कमान चढाये ॥ १६ ॥
साच लिये संत संग किये जो हिये हरि नाम नोरंतर लेते ॥
पांचहु को परिपंच गवो पचिआसन को ममिता नहि देते ॥
धरनी कह राम प्रताप दसो दिस अस्तुति भाव करै जन जेते ॥
काह कपुत बहुत भये औसो एक सपुत तारै कुल केते ॥ १७ ॥
आवत जात परवाह सदा धन जोरि बटोरि धरो नकवाही ॥
तु महाराज गरीब नेवाज अकाज सुकाज के लाज तुमाही ॥
जो हृदये हरि को पद पंकज सो मतिमो मन ते बिसराही ॥
कहै धरनी मनसावच कर्मना मोहि अवर औलंबन नाही ॥ १८ ॥
जानत नाही न देव देवाइ ना पांच पचाइनो को समुझउआ ॥
जानत नाहि न बेद मता गति नेम अचार सकार नहउआ ॥
धरनी नट नाटक चाटक आटक्ता तान तनी नहि ज्ञान कथउआ॥

माजा मन को कहो आउर बाउर छाउर कीतिक बार पेवारो ॥
जात है मन साधु के संघति जानत है एक राम रमउआ ॥ १९ ॥
जामन को कहि मुख लंपट चोर कठोर छकार छकारो ॥
जामन को कहि चोटिय रोटी कसोटो खसोटी कमान कटारी ॥
तामन तेमन मान अबै धरनी जन जानत प्रान ते प्यारो ॥ २० ॥
ज्ञान को बान लगो धरनी जन सोअत चौंकि अचानक जागी ॥
छुटि गयो बिखया बिख बंधन पूरन प्रेम सुधा रस पागी ॥
भावत बाद बिवाद बिखाद नखाद जहां लगि सो सब त्यागी ॥
मुंदि गइ अखिआ तब ते जबते हिय में कछु हेरन लागी ॥ २१ ॥
नैन को हाट कपाट लगो धरनी सुनि स्रवन पुकार पुकारो ॥
नाक सुबास कुबास न चाहत जीभ्य घनी बकबादि न पारो ॥
हाथ हथियार छुवत नहो चपि चर्ननहु चलनार बिसारो ॥
इन्द्री अधोमुख औधी रही मन मोहि रह्यो मनमोहन प्यारो ॥ २२ ॥
मोह मया बिखया जल बुड़त साधु भले गहि बाह बचाया ॥
दीन्ह सरूप अनुप बनाइ के लाइ के पारस भेद बताया ॥
छुटि गइ मन के दोबिधा धरनी निरभौ अनुभौ पद गाया ॥
पाच भये बसि सांच सुनो सभ साधु भये सभ साधु के छाया ॥
२३ ॥ धन दसारथ कौसिलजी धरनी जहां राम लियो अवतारा ॥
धन सो अवधपुरी धन लच्छमण भरथ सत्रुघन ज्ञान बिचारा ॥
सुग्रीव आगन्द औ जामवंत लीये हनिवंत जो सैन उतारा ॥
मारि दसानन थापि भभीषण सीआ समेत मिले परिवारा ॥ २४ ॥
धन स्री नन्द जसोमतिजी धरनी जहां कृष्ण लियो अवतारा ॥

धन सो गोखुल ग्वाल सखा धन ग्वालिनि अव जमुना जलधारा। कवतुक हेतु हनो जिन्हि कांस विधंस कियो महि भार उतारा। राज समाज दियो उग्रसेनन्हि आपु सोभ्रन पुरी पगु धारा॥ २५॥ जननी पितु बंधु सुता सुत संपति मित माहा हित संतत जोइ। आवत संगन संग सिधावत फांस मया परि नाहक खोइ। केवल नाम निरंजन को जपु चारि पदारथ जाहिते होइ। बुझि बिचारि कहे धरनी जग कोइन काहु के संग सगोइ॥ २६॥ दियो जिन्हि प्रान कया सुख संपति बीच मिले बहु नेह न कोरे। होतो कहां औ कहां कहि आये सो केव बिसराये करो कछु औरे। जोग औ त्याग बैराग गहो धरनी धन काज कहां पचिदौरे। अंतहु तो तजो है सब तोहि सो तुना तजो अबही केव ना बौरे॥ २७॥ ब्रम्हा अव बिष्णु महेस थपो जिन्ह सुर असुर सुरेस सोताहु। बारि अव पवन पहार भसंदर अवर सागर अव नरनाहु। जोव अजीव रचो कत कवतुक देखो न बुझि कहां बिलखाहु। कहे धरनो भजु आगतहो करता हरता भरता नहो काहु॥ २८॥ बाभन बेद पूरान पढ़ि पढ़ि कुति कहे ग्रसो नहि कोइ बैस बैसाह बिग्राह के काजहि सुद्र सदाक गदाव करोइ। कहि धरनी नर मुक्ति के कारन मारग पाव हजार में कोइ। भुलि परे सब आपुहि आपु को पाप बढ़ो तन ताप ते खोइ॥ २९॥

॥ भक्त महातम ॥

टुतन्ह टेरि कहो जमराज करो कछु काज सुनो हित हमारो।

जाहु जहां सुतलोक वसे नवखंड प्रचंड प्रताप हमारो । जीवन पावहि जान कहो समझो धरो आनि भरो बंदिसारो । जो कहि है हरि की भक्ता तिन्हि के पोहो तु जनि हाथ पसारो ॥ १ ॥ दुत कहै कर जोरि कहां भक्ता गुन कवन सुने हम पावो । दानी कवेश्वर सुर जोगिसर को तपसा तिरथादिक धावो । काहीं पढ़ि पण्डित काहीं सिर मुंडित पूजित देव जो घंट बजायो । कै उन्ह को कारनो कछु और जेते सब के सिरताज कहावो ॥ २ ॥ दास कहैं सुख पावत है गुन गावत है उमगी अनुरागी । तुलसी तुलसी हिये हार लसी हरि मंदिर रेख लिलाटहि लागी । जीव दया जिन्हि के जिव में सुख राम सुधारस ना रसपागो । जो जग में इन्ह भांति रहे धरनी ते बड़े दरबार के दागो ॥ ३ ॥ ताछन दुत २ जाइ सह सिर नाइ चले महिमण्डल आये । जीवपूरे अपराधि भरे कर बांधि केते जमलोक चलाये । भक्त के द्वार पूकार कियो पिट पाली ताहां प्रभुता जो जनाये । राम के दुत दइ मजगुत चले भजि दंड कमंड गवाये ॥ ४ ॥ नैनन्ह नीर विरूप सरीर गयो जम नीर कहो लट छुटो । बाजत ताल मृदंग सुनो चलि कौतुक हेतु ताहा हम जुटो । आनि अनेक परे सिर उपर जानि परो तिन्ह भांतिन्ह कुटो । मुंड चले मुडिआवलो बंडजो डंड कमंडल ता सम लुटो ॥ ५ ॥ सुनि के सनमान कियो जमराज अन्हाये सबे पट फेरि पेन्हाए । जो उपदेस दियो हम आदि कियो बरवादो सबे बिसराए । जिन्हि ते हमरो न बसाए काहु

तिन्ह ते धो कहो तुम कौन कहाए । फिरि सुनो एक बात खरी कुसलात परो जो इहा लगि आए ॥ ६ ॥ दुत बहुत करि बिनती सुनिए जमुराज बड़े भुअपाला । जो हम ते सुख मानत हो करिदेहु हमै हरि मंदिर माला । जीव दया करि होहमहु सबहु अबहु लगि अवसर भाला । भक्ति महातम देखि हमै नहि भावत है रमनी रमसाला ॥ ७ ॥ हिय मे हसि के जमराज कहो तुम काहे उदास कहो मेरो भाइ । साधु जो आवत है हमरे घोहो जानि करो तिन्ह की सेवकाइ । इआहि मते बनी है सभ काम तजो मति खास करो फरमाइ । दोस कछु हम के तुम के नहि भुजत है सब आपु कमाइ ॥ ८ ॥ मानि रहे जिय जानि सबे खिलखानि परो जिमि धान पछोरे । मोल अटा अरु चाउर कोसो परोस सुभि बहुतै भावे न थोरे । धरनी तब ते जमदुत कहो कबहि ऐसो काम कियो नहि भोरे । ले भक्त के नाम खिसोखित धाम करि प्रनाम दुनो कर जोरि ॥ ९ ॥ भक्ति महातम जानि पड़े नर तापर भक्ति महातम बाढ़ो । नवग्रह भुत न दुत दुखावत गावत गोन्द के गुन गाढ़ो । धरनी कह रामप्रताप ताहा दिन राति रहो सिर उपर ठाढ़ो कोउन्ह के सीव चापि सके तेहि गाढ़ परे पल मे गहि काढ़ो ॥ १० ॥

॥ घनाक्षरी ॥

अगम अगोचर अलख अबिनासी प्रभ अजर अमर अरबन

के सरन हो । अभनै अंस अनतहो गती पतीतानो अचल अनाथ बन्धु अडर करन हो ॥ अछ्ये अजोनीअौ अजाचो हो अचित रुप आदि अंत धरनी के तारन तरनहो ॥ अचुत अपार अबिनासी सन्त के आधार भुअन भरनीहार अञ्जन गञ्जन हो ॥ १ ॥ तारन अजामील नेवारन भक्त भिर असुर संघारन उपारन दोउ तरु के । आरन बीलासी प्रभु ढारन सुरे सदा पचारन सो काम धेनु मारन मगरु के ॥ बली नृप छारन कलंक लञ जारन सुदामा रंक भार जो धारन पहरु के । बारन उबारन धरनी जन वारन आनन्द बार पार कुमार द घरु के ॥ २ ॥ धरनी गहये ईनबाजि जो तोरि समुद्र काहा होरा हिम कुन्द भारी सुत शीप के । पावरी पाटम्बर काहा चढी सुख वर कियो जो आप उंवर पिये काहा अमिय के ॥ कियो न ध्यान नाथ को गवावो गाठी हाथ को लियो न साथि याथ को भरोसे जाय जिय के । भजो न जौलो नात गात अन्त है वसन्त पात को धिमिशो रात जात जैसे तैल दीपक के ॥ ३ ॥ गये दसो अवतार जाको महीमा अपार तारन तनिहार वारउ न लावते । गयेन वो नाथ सिध साधक संबूह सुनि सुनी रिषी जोगी जती शागर सुखावते ॥ गए छव चकवी बीक्रम भोज खोज नही किन्हो जिन्ह येती ताही बेर बिसरावते । धरनी धनी न मिलखाते मिहसाते ताते काली चले जाते तेउ साहिम कहावसि ॥ ४ ॥ गो बधी गावाराजी अम्हात हैं ग्रथाथा

पाप ताप को निवारा ताको पुन्य को पसारा है। ब्रम्ह रहा चोरा परदारा को रमनि हारा घने जंतु मारा भवन जारा ताहु तारा है। बाटे बटवारा शरावारा पिच तें बिगारा ताहु ना बिसारा धरनी को धरे भारा है। बिष्णु पद को पखारा ताते ध्यान है हमारा गंगाजी की धारा सोउ धारा मूक्ति द्वारा है ॥ ५ ॥ माथे माहताब औ जटा में गंग औ जाकी जेरदस्त ज्वाब रोज रोज मौज केतें है। गाव की सवार गाजी कंठ हार मार काल बुंद लाय छार चोर ढार भूत प्रेत है। लोचन से लाल शेर खाल मे निहाल मुंड माल है बिशाल धरनी हिया मे हेत है। बेल के पताय गाल ताल के बजाये भोरा भंग के चढाये दान ब्रम्ह ग्यान देत है ॥ ६ ॥ बारन-बदनये बरदन अनेक पलु पलु जो प्रशन्न होत करत धनेशजी। बिघिनि हरन सुख करन मरन नाही जाके सुमिरत तन होत ना कलेस जो। सिधि रिधि दायक बिनायक सहायक हो धरनी रचत पशु पूजत सुरेस जो। इंदुर बाहन जाके सिंदुर सोभाये मान ग्यान ध्यान को निधान देवता गनेश जी ॥ ७ ॥ धन धन नाम तेरो धरनी चरन चेरो कछु अपराध मेरो मन में ना आनिये। तुत प्रभु माहाराज हो तो निपट नोकाज करिबे को कीजे लाज दोसरो न ठानिये। तप ना तीरथ जाप जाही से कटेगो पाप पूरन प्रताप राम रावरो बखानिये। दासन्हि को दास कीजे मेरो कछु नाही छीजे आपुही समुझी लीजे आपनो कैजानीये ॥ ८ ॥ कवल करीजो आये शोसी

जीते बिसराय बिखया सो लपटाये और और इद्लत हो।
रहैगो न ऐसो देह आगमो सुधारो गेह दिन चारो को
अनेह खेह होय जलत हो। धरनी कहत चिंता मनित
चिन्हारो करो बार बार बार पार हारे हेलत हो। बावरो
परत बेढ सुझत ना टेढ मेढ डेढ दिन लागी काहे टेढ होय
चलत हो ॥ ९ ॥ भरे अभिमान आन आन के गुमान ज्ञान
गुरु छोड़ि कुर केतिक रजायेगो। अवचक गहैगो आनि
तोहि ना परेगो जानि भाजिबे को नाही पंथ कैसे के
भजाहिगो। हेम रज बाजी बाज बारन बिस्वास आस नारी सुत
मित हित अंतहु लजायगो। अवचक गहैगो आनि तोही
ना परेगो जानी भाजीबे को नाही पंथ कैसे के भजाहीगो।
चेतु चित लाये आदि अंत जो सहाइ ना तोरी ते हाथ पाये
बुड धरनी तजहीगो ॥ १० ॥ भुलि रहै नारी चौम सारी
फुलवारी बारी है बर सुरंग अंग सोधि लपटाइ हो। धरनी
समुझि देखु धुआ धाम कैसो लेखु आवो काछु लेत औन अंत
साथ जयेहो। बासन परास फूल रंग देखी काहा भुल अंत
होइहेगो सुल कौन तादिना सहाय हो। आयेहो काहा
कारन सुझत नाही मरण बिना राम को सरन पापी पछताय-
हो ॥ ११ ॥ कौरया अथाइ अपताइ कै दुशासन सो द्रोपत
सुता को पट खेचो काहि ठाहरे। नारी सुकुमारी हिये
हारी न संभारी तन को इन सहाइ मानो गाइ गहि ना
हरे। अपती की पति जदु पती पति राखी अब मन बचकर्म

तुम तें कारति हाहरे । धरनी कें धरी लाज राखी पति माहाराज ना तो होतिहु पतिहु के हाथ बाहरे ॥ १२ ॥ द्रोपती हिया में हरि को सुमिरन कीन्हो तब अंतर जनैश्रा जानी मानो लवो भावरे । अक्षये बचन श्रावो अवर अमुह लावो पूरी लाज ते लजावो दुसासन बावरे । धरनी काहत जाको पौरुष प्रजत नाही ता को बाह थाको परी श्राइ तन तावरो । गोहन त्रिया को मन मोहन छोड़ावो श्रानि लावो सुख अपत सपत ब्रत सावरो ॥ १३ ॥ सुतली श्रक्ष लिखनि अलहु गोश्राइ साइ छलिहु अचेत पौढ चेत भैल तेखना । माथे हाथ दे लछि जगाये जनु ले लछि अनेग काला के लछी नश्राजी श्रावे येखना । जेहि गते छलिहु उठि लिहु तेहि गते पावन पुरुष पावली के भेल देखना । धरनी कहैं छिविसरे छिनक नाका मोहि हिया मे छपाल छीकरे छिकोटी पेखना ॥ १४ ॥ हाथ गोड़ पेट पीठ कान आंखि नाक नीक मांथ मुंह दांत जीभ वोठ बाट असना । जीवन्हि संताइला कुभक्ष भक्ष खाइला कुलीनता जनाइला कुसंग संग बैसना । चलीला कुचाल चाल ऊपर फीरेला काल साधु को सुसंत बिसराइला से कैसना । धरनी कहैला भैश्रा असन नाचेति ला त जानि लेम तादिना चिरारि गोरी पैसना ॥ १५ ॥ काहे कोइ पुरुष जालों हाट बाट भात खाला पक्षिम प्रतक्ष होला देह का बिधंसना । का चढ़े सुमेरु स्रोंग पुजे का पखान लिंग कवन काज हिंगुलाज जिभि काटि बैसना । ठाढ़

होला काहेलागि आस पास बारे आगि काहे काहु भाबिला जी भुइआ खोदि बैसना । धरनी कहिला परिपंच पंच काहे लागि हिय ना जपिला पुनि राम राम कैसना ॥ १६ ॥ बाजिगर पूतरी की काहा विस डारी सकी जैसही फिरावै सोइ नाच नाचिये । कोइ ना करत धक देखत अनेक नक दिनानाथ दया करु कैसे काल बाचिये ॥ दवी तन मन प्रान सकल जहान ज्ञान सोइ अब करै आन धरनी होये साचिये । जैति सान मधिमहि काहुकि न शंका रही दिन बन्धु तेरी बिनु अवर काहि जाचीये ॥ १७ ॥ मनि एक जोरि जोरि बुलत हलिहु खुमे गावही गोवारि पूतेहारी तोरी लेलही । बातसे कहहि जी सुनिते गात तात होत डिठी के देखेते पिठी छोरि पौरि लेलही ॥ एखने की नाकहि आंजि अहि कांदाइ आव किमा अपराध लाए हाल मोरि के लही ॥ मैली जवनि जवनि कला धरनी देखत ख्याल सारी खुट फारी के कतारी आरी गेलही ॥ १८ ॥ दवरता भुलाना तु ठेकाना फारा मोसकि आजाना है जाहाको ताहा का जवाब करैगा । किआ था करार जो अजार काहु को न देउगा लेउगा तेरा नाम जो तमाम अयब जरैगा । कौड़ी पीछे धावता है हीरा बिसरावता है बोअता है बबुर सो अंगूर कैसे फरैगा । धरनी पुकारता है आजु न संभारता है बड़ी बाजी हारता है काहा ताइ भरैगा ॥ १९ ॥ आछा जनमासा तजि पाखंड को पासा मतिरा सो रति माशा आंस बाजी को उबासा है ।

चोरी पर नारी मद मासा है काम फासा धरो निजु नाश आसा खासा जो खुलासा है । डोलो हंस दासा मुख बोलो पिक भाषा जहां जहां जा को आसा तहां तहो को उधासा है धरनी काहां साज गुजानो धंधला सा ढंढी देखो पोर पासा जो तमाशी का तमाशा है ॥ २० ॥ जानो होना जश जाप तीरथ ब्रत नेम कोरत होन दोन कोधहो भरा रहै । विखया में लपटाने निन्दक कुटिल खलु पलकु ना जानो प्रभु सांभकृ सकारे है । गुरु पितु कौन सेवा गीत ग्रंथ जानो नाहि दोन्हो काछु दान उन संसये आहराये है । औगुन गुनो ना जाय गुन सो काहां समाये गुरु उपदेस एक धरनी अधार है ॥ २१ ॥ दरस ते दूत जमराजन्हि के लाज होत परसत पलु माह हरे रासी पाप को । एक बुंद जल पीये होये सुध सिधि होत धरनी कहत कहां चलो कोटि जाप को । वासव विरंचि सनकादि सिव आदि गहे कहे और कौन महिमा तिहारे आध को । येउ मोरे सीस इस जटा बासी मध्य अगति तजले तले बेंगुलो ज्यौ सांप को ॥ २२ ॥ भुमि सो पवित्र होत साधु के प्रसाद पाये साधु केत अंश कांश कीरथो तरात है । साधु के सनेह तेहु तासु को प्रगास होत साधु के सुदिष्टि पौन सोस्ह को सोहात है । आसमान आसथीर साधु के तमासा गिर होए रहे मगन ताते नहो बिनसात है । धरनी कहत सो बुभत कोइ कोइ भाइ साधु जो दिखाइ मात सोइ बात मात है ॥ २३ ॥ जहा बसे विष्णु

औ बिरचि माहादेव देव तैंतीसो बिराजमान ठौर ठौर गाया है । लिंग जाकी बेसुमार आगी पवन पानी छार कीते लोक २ टोंक टोंक की बसाया है । आतमा अनुप आपु रुप है सरुप धरे देखिए बिचारि चारि बेद भेद गाया है । धरनी कहत साधु संत को सुमंत जानि सानि को सुमेरु सोइ साधुन्ह की काआ है ॥ २४ ॥ कटहरा है सीस औ हरीस पीठि पाँरि साथ पारोहथ हथ ज्वाठ पेट नार चाम है । बरन सो कान नाक कपाट नैन ग्रामइल पाव बैल छैल जोत भौहन्हि को नाम है । कार फार सार करुआर अंड सो प्रचंड दायेन प्रओग हल ग्राहि मन काम है । धरनी कही है निरुआरि सो बिचारि देखो नारि है कोआरि गारी हस्त एक राम है ॥ २५ ॥ धरनो सुनाइ भाइ लीजे सभ सों भलाइ कीजे सेवकाइ दुनिआइ जौलों जी जीये । माआ जगदीस की जहांलों जगु देखो आनि दानि कीन बापुरे बखाइ जाकी कीजिये । साधु की न संघति भक्ति जाही भावे नाहि ताको मुख देखिये ना पानी जानि पीजीये । छाजन औ भोजन धरावो धरो ठाम ठाम आनी राम को गुलाम जानि देइ ताको कीजिये ॥ २६ ॥ छोड़ि सुत नारी तात मात भ्रात गोत नात झुठ न सोहात बात के बिबेक बोलहो । काम क्रोध बोध भये सील वो संतोष लये कर्म बीज भुजि बोये काया मे कलोलहो । धरनो हिए सोहात साइ की सुरंग राति राव रंक ते निसंक तौलि तौलि मोलहि । काहु ते न बैरता

ना काहु ते सनेहता प्यारे को पीयारे ते निनारे पंथ डोलही ॥ २७ ॥ त्यागी घर बार लोक चार माया मोह जार धरनी बिना बिकार सार बैन बोलही । जीव दया जीव धरे हिया मे हुलासा करे हिरा मणि मोती भरे मोल की अमोलही । अनसुन सुनहि अदेखो देखि देखि कहे अगम को सुगम अखोल द्वार खोलही । बावरे वेचारे मनियारे मतवारे प्यारे के पियारे ते निनारे पंथ डोलही ॥ २८ ॥ पुरे ग्यान ध्यान पाये दया दोढ कै दिढाय संत को सुमन्त गाए छोड़ि छन्द बन्द को । कामिनि कनक दोउ तोरि डारो फंद वो उदेखो बात बुझि कोउ आसरा गोबिन्द को । धरनी सुढार ढार लोक चार ते निनार ताहां ना अधार जहां चान्दनी है चन्द को । भावे साधु संघति भक्ति भगवंतजी की जानिए छपा भलो बसो बिनोदा नन्द को २९ ॥ काआ लागी कायस्थ कहावो जाति पाति बैठो मेरी तेरी छेरी धो पुजेरी परमेस्वरी । सोइ जागो आतमा अभागो ते सुभगो भइ जैसे अवर केते भए रंक ते लखेस्वरी । इस्त तंत्र मंत्र कूटो धाम राम दीन्हों है बनाए आदि अंत लो सुधेस्वरी । अग्र चालि साधु है प्रनालि सो बिनोदा नन्द भौन रामा नन्द जी को डोरि धरनेस्वरी ॥ ३० ॥ मन मेरा लाडिलो हो सुन्दर सुघर सुर हो तो निसुदिन छोन छोनही लडाइ हो । मन मेरा मोहन मे गोहन तजो न आलो जो जो मन मांगी है सो आनी पहुचाइ हो । मन मेरा रसीक मे वाके रस

बसि भइ गाइयी बजाइ नाचि काछि कै रीभाइ हैं। धरनी
श्री मन वच कर्म मनहो प्रत प्यारि मन आपनी कै वारि लैहो
जाइ हो। ॥ ३१ ॥ नैन स्वाद कारने पतंग अंग अंग होत
स्रवन स्वाद कारनै मृगा को खाल खेंचते। नासिका के
स्वाद भवर भक्सो भराए जात जीभ स्वाद कारने जो मीन
नहीं बांचते। इन्द्रीश्रा के स्वाद ते गयन्द को गिराय देत
होय रहे अचेत सो नचाए नाच नाचते। धरनी कहो
पुकारि जो क्रपा करि मुरारि धन जीवन सोइ जो एक बेर
सो जो बांचते ॥ ३२ ॥ प्रात के नहाए कुशमुद्रिका बनाए
दवरी देवहरा मे जाय फुल पात मौन को भरे। कन्द मुल
खाय कौन कन्दला छपाय जाग कौन धीक माथ जाइ गुइहरा
मे को परे। आगि को बराइ देह बांधि कै भुलाइ को
देसांतरी कहाए कि होमाल जाल को जरे। एक राम राय
जो हिया मो ठहराय धरनी कहै बजाय तौलाइ धंधके
मरे ॥ ३३ ॥ हाथी कंध पाइ सो न खान ते अंकाइ बाम
चंद को चलाए तो जलाए आपुहि टरे। रूखी जो सखाय
कष्ट सुखी तोन जाय धरनी कहै बजाइ खार सिंह लार को
खरे। छैरी सुख माइ तोन को हठो समाइ जीम्ह जाल क्यों
अभाइ जो उपाय कोटि को मरे। मेढुकी सुश्राय जोट उठ
ते न खाए एक राम जो सहाय तो रिसाय कोउ का
करे ॥ ३४ ॥ संकट परे ते प्रह्लाद सुमिरन करि धरि
नरसिंह रूप भक्त को बचाश्रा है। जात पति द्रौपति दोउ-

कुल हेरी टेरी कोन्ही अंबर अंबुद लावो अंतहु न पावो है। ग्राह के ग्रसत गजराज काज महाराज उर में अंकुर होत हुर होति धावो है। धरनी पुकार बार बार काधर खवार मेरो बार दीन बन्धु बार काहां लायो है ॥ ३५ ॥ पतित उधारन है बान भगवान तेरा मेरा गुन औगुन जोनि कुन बिचारो है। जो देयाल देव दीन जानो दया करो तो मे धर्मराज चारो भिस चारि ते उबारो हो। करनी गुनो न मेरो धरनी कहे पुकारि सरनो होलड़ गुरु सो जो न बिसारो हो। तारे हो अनेक अपराधो अकलंको देवतो मे तुम्हे जानोहो जो मोसे मुढ तारो हो ॥ ३६ ॥

छपै।

ससा ग्रोन्द सोस मनो मुकुट कांका ग्रोन्द कुंडल कलोल कर। तता ग्रोन्द तिलक अति बनो गङ्गा ग्रोन्द ग्रोव माल मनोहर। बंबा ग्रोन्द बासुलो अधर चंचा ग्रोन्द चंदन तन राजित। मंमा ग्रोन्द मोर पक्ष धर पंपा ग्रोन्द पट पीत बीराजित। अंआ ग्रोन्द अंधेरो मिट गयो सो झंझा ग्रोन्द जोति झगमगो रहो। नाना ग्रोन्द निरखो ध्यान धरो सो दंदा ग्रोन्द दास धरनी कहो ॥ १ ॥ प्रथमहि गुरु कायस्त भयो जिन्ह लिखा दीन्हो। दुजे गुरु सन्यास पास जेहि मारग चिन्हो तिजे गुरु बैराग भाग काहु भलो जनावो। चौथे गुरु गोबिन्द साधु संमति लखि पावो। धरनी धोखा मोटि गयो जो मिलो सनेहो आपनो।

जागत सपन सुखो पतो सो जत देखो तत सापनो ॥ २ ॥
संत रहसे संवत सिखंत तेरे अधिकानो । समे नाम असाढ
पच्छ उजिआर बखानो । तिथि परिवा बुधवार गंग सरजु
अन्हाये । परसुराम तन तजो बाम बैकुंठ सिधाये । भारग
योद्दर बार को सो राज रोति सबुझि लटो । तादिन ते जग
जानि सब जो माझी की महिमा घटो ॥ ३ ॥ तोरथ को
जगनाथ बराह लछन रामेस्वरे चलु मन । पदुम नाभ
गोदावरो राये रनछोर संकरषन । हिंगुलाज बद्रीस मानस्वर
गङ्गा सागर । गया बनारस निमखाड़ हरिद्वार उजागर ।
पुहुकर राज सुतोस्वरा सो मथुरा अवध परेयाग पुनो । बैठि
रहो घट भीतरे सो धरनो सतगुर शब्द सुनो ॥ ४ ॥ जाकी
जिअत सुवास बास दस दिसहि पसारा । जाकी बदन
बिलोकि बिमल सुख होय अधिकारा । जाको सग से हेतु बैर
काहु ते नाही । जाको प्रभु सो प्रतित रोति संतत हिय माही ।
प्रगट कला भगवंत को जो भाव भक्ति सभ कोइ करे ।
धरनी पुरन ब्रम्ह गति सो बहुरि भरे ना अवतरे ॥ ५ ॥
प्रीति मीन अरु जलहि प्रीति मधुकर अरु कमलहो । प्रीति कनक
अरु कामिनि प्रीति अमलो अरु अमलहो । प्रीति पपीहा
स्वाती प्रीति पुनि दोप फतिंगहों । चंद्र चकोरहो प्रीति
प्रीति प्रति मनो औरु भुअंगहि । प्रीति हंस अरु मान स्वर
प्रीति जुवति अरु कांत सो । धरनो मनवच कर्मना सो प्रीति
भक्त भगवन्त सो ॥ ६ ॥ कोइ कह एक अनेक कोइ

कहुतिनि बिसेखि। कोइ कहे दस है आदि कोइ चौबीस परिखि।
कोइ कह सत है नाम कोई कोई सहस्र सुनावे।
कोइ भाखे सुख लाख कोइ कोइ कोटि बतावे।
कोइ कह नाम अनंत है सो काहि कहिअ पंडित मूरख।
ध्यान धरि धरनी जपे सो तत नाम कर्त्ता पुरुष ॥ ७ ॥

दसो औतार के नाम।

नारायेन ब्राह्म जग्य अवतार कपिल मुनी। दातात्रेइ सनकादि मोहनी रीषभदेव सुनी। पृथु हंस रघुनाथ धनंतर नारद गाउ। हरि गिरि मी अरु मच्छ कच्छ नरसिंह सुनाउ। विद्या पति गजमोचनो सो बावन परसुराम उर। कृष्ण संकरषन धरनी कह सो जग्रनाथ निकलंक गुरु ॥ ८ ॥
सत गुरु रामा नन्द चन्द पुरन प्रगासो। सुजस सुरु सुरा नन्द बेइलि धानन्द बिलासो। सुकृत सुरीआ नन्द चेतना नन्द चेतावो। बिरुद बिहारी दास राम दास मसनद रहावो। बिमल बिनोदा नन्द प्रभु सो दरस परस पातग गयो। धरनी दास प्रकाश उर सो गुरु परनालो गहि लियो ॥ ३ ॥
अनंता नन्द कबीर सुरसुरा नन्द सराही। भवा नन्द रविदास गलगला नन्द नौबाही। नर हरि सदना सुखा नन्द पदुमा सब जानि। पीपा सेना धना दास दस दिसा बखानि। सेवक रामा नन्द को सो नाम लेत पातख हरे। करनी बरनी सकि नहीं सो धरनी ध्यान सदा धरै ॥ ४ ॥

काया कनक गढ लंक बंक भौसुना दधि जानी। रावन है हंकार सो माया मन्दोदरी रानी। रामचन्द्र गुरु ज्ञान छिमा है लछमण सोइ। मन मानो हनुमान सत्य सीता है सोइ। कुंभकरन नीन्द्रा भये सो भाव बिभीषण लेखिआ। धरनी अंग प्रसंग करि रामायण कहु देखिआ ॥ ५ ॥ मथुरा मानुष देह क्रोध कंसा सुर जानो। जमुना जीव को दया भौगुन बिन्द्रा बन मानो। गोपी पांच पचीस पवन है हलधर भाइ। जोति सरुपि कृष्ण कोलाहल करत सादाइ। जसु नन्द आनन्द उर सो ज्ञान गोवरधन धारिआ। धरनी अंग प्रसंग करि श्री भागवत बिचारिआ ॥ ६ ॥ मन की माला बिमल तनु को तिलक चढावे। दया टोप सिर धरे ज्ञान गुदरा सोहावे। आसन दीढ कै आरबंद लउआ लै लावे। मोरपछ की माला संतोष सहज कुबरी करावे। धुनि धनि को ध्यान करी सो साधु की संगति कुसल तरु। धरनी जो अनुराग होये तो असी बिधि बैराग करु ॥ ७ ॥ बचन बिबेक बिभुति साच सिर जटा जमावे। सतगुरु शब्द सनेह स्रवण मुन्द्रा पहिरावे। सींगी पुरे अलोप चोप चोक्त चक्र चलावे। ज्ञान गोफा में बैठि छिमा को छला बिछावे। अष्ट कमल दल उलिटि के सो प्रीतम सो परिचै करे। धरनी सोइ जोगीस्वरा जो जीवतहि जग निसतरे ॥ ८ ॥ छोड़ि तात अरु मातु भ्रात सुत संपति नारी। जाति पांति गुन ज्ञाति भांति कुल बरन बिचारी। लोक लाज ग्रीह काज साज समाज बडापन। निरधन नीरु

औहाल बहुरि जागी सब सज्जन । पाचहु को परिपंच तजि सो हरि को नाम निजु हृदये धरु । धरनी चाहे प्रम सुख तौ प्रभु सनेही साधु करु ॥ ९ ॥ कोटि गउ दैदान, सींगी सुमर्ण मढ़ावै । गज तुरंग रथ साजी बीप्र निज कंध चढ़ावै । लहलहात लखराव प्रबल पोखरो खनावै । तोला तौलावै देह नेह करि गंग अन्हावै । जोइनि जनमि फल पाइहे सो पढ़ि पुरान पुनि रैन दिनु । धरनी धर्म अनेक करि पै मुक्ति ना आतम राम बिनु ॥ १० ॥ मूल मन्त्र अवलोकि आतमा सोवत जागी । तोरि बन्धन मोह साधु को पारस लागी । ध्यान धरै तेहि ठौर जहां ते जोति प्रगासै । खुले ललाट कपाट बीरब्रह्मंडे भासै । दरस देखि मन मगन होये सो गुन इन्द्री सहज मरै । धरनी तापगु बंदिये जो भौसागर अैसे तरै ॥ ११ ॥ काम क्रोध बसि करै दाम धरि धाम न राखै । दया धर्म सामर्थ अर्थ सुख झुठ न भाखै । पर निन्दा परिहरै करै ममिता कछु नाही । नहि बिलखै नहि हंसै बसै सतसंगति माहो । सहज भाव सब सो मिलै सों दाव बीन्द्राबन बीग्रही । धरनी धन सो आतमा जो अैसो राम अनुग्रही ॥ १२ ॥ सो कायेस्थ हम नाहीं जो देवी पुत्र कहावै । सो कायेस्थ हम नाही जो मिथ्या बानी बोलावै । सो कायेस्थ हम नाही जो काहु के लेख धरावै । सेवक है सभ साधु को सो बिंदु मसो अंक सनेहिआ । धरनी गुरु उपदेस ते जाहा अगम रहा ताहा गम किआ ॥ १३ ॥ सतरह से एकतिस भयो

ससात सरसोमो । कृष्ण पच्छ परतछ सुभग सावन तिथ
भोमो । करि निचार भ्रौगु बार 'बिनोदा नन्द' पधारे ।
सुर मुनि गंधर्ब अपछरिन्हि आरति वारे । सकले बाल
गोपाल कहु सो अगु मन आसिर बचन दिहु । तब चढ़ि
बिमान सिर मकुट धरी सो आपु गवन निजु भवन किहु ॥ १४ ॥
जाग्रिन्द गोति जग बिदित दा ग्रिन्द देवन्हि को देत बर ।
अंग्रा ग्रोन्द असुर संघारन । भाग्रोन्द भक्तिन्हि आनंद कर ।
तंता ग्रोंद तरनी तव तेजामा ग्रोंद सिव सक्ति महाबल ।
हंहा ग्रोंद होन फल चारो पा ग्रोंद परसनी जो अरध फल ।
धंधा ग्रोंद धरनी कहु कर क्रपा बंबा ग्रोंद बिनति अति
मामिले । छंछा ग्रन्द छिमा अपराध करि मंमा ग्रोंद मोहि
निजु दरसन दे ॥ १५ ॥ बरषा प्रथम जो मास पिता
हनुमान कहि जी । कलजुग भक्त प्रसिध काम को नाम गुनोजी ।
भुप भवो दिज रंक बरत चौदसी भादों जहां । राम चन्द्र
कहि दानी दिवो हनुमान सिय कहु । सन्त नाम एक ठाम
लिखो सो आदि अंत दुइ नहि लिवो । मध्य रह्यो अच्छर
अमिअ सो धरनी जन सिर पर धरोवो ॥ १६ ॥ कवन
मास कवन कवन दहु पवन भकवार । कवन भेस को देस
मान भर कवन ध्यान धर । कवन्हि देवतन्हि नाम कवन
बलिभद्र अंच गहु । पारबती सुत कौन नंद कुल कहिये
कवन दुहु । अष्ट नाम चौअ अच्छरा सो आदि अंत दुइ
नहि लिवो । मध्य रह्यो अच्छर अमिय सो धरनी सो

सहजी भयो ॥ १७ ॥ कथा सरुपो गोप गउ परबत असथानी सुगा पढ़ावत तरि रंक द्विज भौ रज धानी । सब्बरयन को अन्न नृपति सुत कहा कहिजी । का पीनाक को कहिये नाम संग्राम शुनीजी । दास देत नर कवन कर सो पढ़ि शुनि अर्थ बखानिये । जो काछु कहै मध्यछरा सो सासुझि सत्य करि मानिये ॥ १८ ॥ पावस प्रथम जो नाम वाहा अन्ती नाम विचारो । सांची नाम सो बरन दिवाकर नाम उचारो । रघुनाएक की नारी ना मबै बार बखानी । अमरावती पति कवन बान केहि माह संधानी । कनिजारै की जाति गुनि सो आसा धर्म धर्मना । जो काछु कहै मधअछरा सो धरनी मन बचकर्मना ॥ १९ ॥

अरील ।

कहो जोरि कर हाथ श्रौ माथ नवाइ कै । पक्षा पक्षी विसराइ कै आप मेटाइ कै । देखो सोचि विचारियो सांइ बराइ । कै हरिहां भाइ धरनेस्वर को ध्यान धरो मन लाइ कै ॥ १ ॥ काम का विछुरा जीव बहुत भरमाइ कै । मानुष कै अवतार लियो जग आइ कै । करत खसम का खोज अनेक उपाय । कै हरिहां भाइ धरनेस्वर को ध्यान धरो मन लाइ कै ॥ २ ॥ खोजहि कंथा लाइवो कान फुकाइ कै । कर कर कर वा को पीनयौं डंड गढ़ाए कै । खोजहि मुंड मुंडाइ को जटा बमाइ कै । हरिहां भाइ धरनेस्वर को

ध्यान धरो मन लाइ की ॥ ३ ॥ खोजहि पढ़ि गुनि गाइके। घंट बजाइ की। खोजहि नेम अचार बिचारहिं ठाइ की। खोजहि धाव खौरि खाड़ जवाधि जराइ की। हरिहां भाइ धरनेस्वर को ध्यान धरो मन लाइ की ॥ ४ ॥ खोजि खोजि कत जाहि पलटि पछताइ की। भीतर पैठहि नाहि महल में जाइ के। बाहर बहु बिस्तार रहे अरुझाइ की। हरिहां भाइ धरनेस्वर को ध्यान धरो मन लाइ की ॥ ५ ॥ काम क्रोध हंकार मारि बिचिलाइ की। लोए सील संतोष साँच संग लाइ की। जीतो यह संसार नीशान बजाइ की। हरिहां भाइ धरनेस्वर के ध्यान धरो मन लाइ की ॥ ६ ॥ धरो दया को धर्म भर्म भहराइ की। पार ब्रह्म सो प्रीति हिए ठहराइ की। त्रकुटि साधि समाधि अगाधि चिताइ की। हरिहां भाइ धरनेस्वर को ध्यान धरो मन लाइ की ॥ ७ ॥ पूरे गुरु को चरन गहो तन पापाइ की। तनक ना लागी बार सबै पहुचाइ की। सहित मुक्ति बैकुंठ मिलो जहां आइ की। हरिहां भाइ धरनेस्वर को ध्यान धरो मन लाइ की ॥ ८ ॥ कोइ कहे हम भगवान सुरति अनूप है। कोइ कहे बड़ बैराग बिष्णु सरूप है। कोइ ब्रह्मा के पुत्र कहावत देवता। हरिहां भाइ धरनेस्वर को चरन कोइ कोइ सेवता ॥ ९ ॥ गैबी गैब सरूप मिले जब आइ की। सोवत आतम आपु सो लेत जगाइ की। बहु दिन चले सुभास रहे [illegible] छाइ की। [illegible] भाइ धरनेस्वर की ध्यान धरो मन लाइ की ॥ १० ॥

खोजहि तीरथ नहाए देसंतर धाइ कै। खोजहि साधि नवन औ
पवन चढ़ाइ कै। चहुदिसि अगिनी बराइ औ जलहि जुड़ाइ कै।
छविशा भाइ धरनीस्वर को ध्यान धरो मन लाइ कै ॥ ११ ॥

एकादस कबित।

करता राम सभन्हि को किरत करता राम करो सभ जाप।
करता राम गुरु सबन्हि को करता राम सबन्हि को बाप।
करता राम सभन्हि को साहेब करता राम प्रचण्ड प्रताप।
धरनी करता राम नाम गति करता राम मुक्ति को छाप ॥ १ ॥
करता राम कहो सब कोइ एकहो ते जो भया अनंत।
महिमंडल मैदान रचो है खेलत सभ घट बिबिधि बसंत।
ब्रह्मा बिष्णु महेश्वर मुनि गन वेद बिचार पाव नहो अंत।
धरनी दास तास सरनागत एक अनादि आदि अरु अंत ॥ २ ॥
करता राम चहुजुग बरनो दुजा राम कहो किन गाआ।
ब्रह्मादिक सनकादिक नारद सारद संभु कहाँ ठहराआ।
रामानन्द कबीर नाम देव गोरख ध्रुव प्रह्लाद दिढ़ाआ।
धरनी सकल संत मत बुझो ताते मन प्रतिति बढ़ाआ ॥ ३ ॥
करता राम सकल घट व्यापिक आतम राम अखंडित सोइ।
तारक राम कहो मन भावत भावत सीता राम रटो।
परसराम बलिराम बतावे भावे रमिता राम रमोइ।
धरनी शब्द बिबेक बिचारै करता कै उपरम्भ न कोइ ॥ ४ ॥
करता राम काआ मंदिर में लाए कुंजी कुलुफ केवारा।

जौरे मिली सन्त गुरु को चेला खोलि के केवार दुआर उघारा ।
भीतर ते बाहर लै आवै आंखि देखावे अधर आधारा ।
धरनी दास कह्यो प्रमारथ संतो सब मिलि करो बिचारा ॥ ५ ॥
करता राम सो नेह निरंतर चौकुटि ध्यान धरो ठहराइ ।
पाचो इन्द्री बसि करि राखो बादबिबाद स्वाद बिसराइ ।
सभ ते दया दीनता लघुता धरनी तरिहो एही उपाइ ।
सांचा होए सो राम सनेही झूठा फिरि फिरि भठका खाइ ॥ ६ ॥
करता राम कृपाल जाहि परसो जन सकल सृष्टि पर सोहै ।
देइ जो दीनदेयाल दया करि लेव नेवार कहो दहु कोहै ।
राखनिहार भयो जेहि राम सो मारनिहार धौ कवन कहो है ।
धरनी गहु चौगान ग्यान को गगन गोफा मैदान मनो है ॥ ७ ॥
करता राम अनुग्रह जाके ताके उर उपजो अनुराग ।
काम क्रोध मदलोभ लजानो धंधा छुटि ध्यान मन लाग ।
उरध कमल प्रीतम को परिचे भव निरभव छुटि सभ दाग ।
हरि हरि हरि हृदय लव लागि धरनी धन धंन ताको भाग ॥ ८ ॥
करता राम नाम जिन्हि पावो ताके मन आवो परतीति ।
करता राम नाम जिन्हि पावो तिन्ह गावो अनुभव गुन गीत ।
करता राम नाम जिन्हि पावो ता कोठहि भरम को भीत ।
करता राम नाम जिन्हि पावो धरनी ताके हारि न जीत ॥ ९ ॥
करता राम नाम जो सुमिरै ताके छुटै सब जंजाल ।
करता राम नाम जो सुमिरै ताके संतत सकल दंदाल ।
करता राम नाम जो सुमिरै ताको कहा करैगो काल ।

करता राम नाम जो सुमिरै धरनी कतै भए नीहाल ॥ १० ॥
करता राम नाम निजु गहि रहु तजि दुरमति संत संघति आउ।
करता राम नाम निजु गहि रहु उतपति परलै बिपति मेटाउ।
करता राम नाम निजु गहि रहु आनि बनिहै आछो दाउ ।
करता राम नाम निजु गहि रहु धरनी एहु तन रहाँ को जाउ ॥ ११ ॥

दंडक।

भजन कीवो है सखी सजन आवन सुनो वचन हुलास मुख जोति चन्द को लजो । खोड़स सिंगार द्वादसो लंकार पार नाहि बैठि निज गेह देह को तजो । धरनी सोहाइ बिरिखाइ पलंग बिछाइ मुकुर मंगाइ छबि प्रेम दुंदभी बजी । रोम रेख भीने पेट मध्य देखि व्यालिनि सो आरसो निहारि नारि डारि चीर धोमजो ॥ १ ॥ छोआ बुन्द छबि करि सुरति सुरति धरि दवो ज्ञान ध्यान कीए ताको नाम गहु रे, माया मोह धंध अंध कछु न रहैगो थीर वाहि चिंता मनि चित लाए सुढ रहु रे । जौ तु कियो वासो साज कहा करैगो जमराज वाही पर वाही राखु और को न चहु रे । धरनी उदान बढेगो पलु छिनु एक घड़ी घड़ी टरी जात हरि हरि कहु रे ॥ २ ॥ दयो तन मन प्रान ज्ञान अब हार दीजे मोहि केवल चरन चित राधनी । अवर दीसो तो आनन्द नाहि त काए न दंद छाड़ि नर चाकरी जो जानि सो वरेधनी ।

धरनी धरनी लइ करत हरत तुहि तोही छोड़ि अवर कोहि आगी देह साधनी । जोइ प्रभु देहो ताहि राजि मन राजा जैसो अवर आशा नाथ जीव कला को मोटु बांधनी ॥ ३ ॥

हरिदास।

सत गुरु शब्द सुनत आतमा जागिया । मिलो भवन को भेद भर्म उठि भागिया। त्रीकुटि पार पहार हिरा को खानि है। हरिदा जीहा धरनी बरनी न जाय जनइआ जानि है ॥ १ ॥ धरनेस्वर को ध्यान कहो महादेवजी। धरनेस्वर को ध्यान धरो सुख देव जी । धरनेस्वर को ध्यान धरो नारद मुनि। हरिहा जीहा धरनेस्वर को ध्यान परिछित के सुनो ॥ २ ॥ धरनेस्वर को ध्यान धरो प्रहलादजी। धरनेस्वर को ध्यान धरो ध्रुव नाथ जी। धरनेस्वर को ध्यान जनक अक्तो ब्यास जी । हरिहा जीहा नामदेव कबिर धना रविदास जी ॥ ३ ॥ धरनेस्वर को ध्यान धरो सब संत जी । धरनेस्वर को ध्यान आदि अरु अंत जी। धरनेस्वर को ध्यान सकल फल होय जी। हरिहा जीहा धरनी गुरु गम कहि सुनो सब कोइ जी ॥ ४ ॥ धरनेस्वर प्रभु एक ना आवे जाय जी । धरनी मन अरु कर्म धरो ठहराइ जी । बाद बिवाद करे सोइ अज्ञान जी। हरिहा जीहा जाको जाहां मन मान सो ताहां बिकान जी ॥ ५ ॥ बिनु धरनेस्वर क्रपा सो संत गुरु ना मिले। बिनु संत गुरु को क्रपा किवारि ना खुले । बिना साधु के संग रंग पुनि ना

चढ़े । हरिहाँ जीहाँ बिनु आपा के मिटै कासा काली मा बढ़े ॥ ६ ॥ धरनीस्वर करि कृपा जन्हे अपनाइ अपनाइआ । प्रेम प्रवाह बढ़ो अनुभी पद गाइआ । जग में जीवन मुक्ति हसी दिस जानिआ । हरिहाँ जीहाँ सुर नर नाग नरिन्द्र सभे मन मानिआ ॥ ७ ॥ धरनीस्वर की चरित पढ़े मन लाएजी । अवरन्ह देइ सुनाइ सीखाए लिखाएजी । सो नर पावे भक्ति अक्ति नहि जाएजी । हरिहाँ जीहाँ धरनी साँचि विचारि कहै समुझाएजी ॥ ८ ॥ हेतु करि हरिहांस आस ताकी पुरे । सदा सचरेसु मति कुमति दुरहि दुरे । ता के समर साथ असोचि पंथ को । हरिहाँ जीहाँ धरनी बरनी ना जाय महातम ग्रंथ को ॥ ९ ॥ लीला प्रकास की पोथी गुरु प्रनाली । निरंकार प्रभु अपर मयार । पुरन प्रगट भए ओंकार । आदि गुरु नरायन कहिए । लछमी सीष धरत निर बहिए । ब्रौखि से तिसु रसेनि कहाए । औरु गोपनाथ मुनि गाए । पुण्डरिका जैमुनि मन जान । राखामीस करि माहा प्रमान । स्रुति पुरान स्रुति बेद बखानो । स्रुति देव सुरति धामा जानो । सुरति पर आजा सुकृत कीन्हो । रामानुज कुल तारक चीन्हो । पदुमा लोचन देवा चारज । हरि आनन्द कीवो हरि कारज । राघो नन्द के रामा नन्द । जिन्हि के उगे सुकसुरा चन्द । बेहलिया नन्द सुरिसा स्वामी । चेतनि प्रभु बिहारी हामी । करो रामा दास मसनद । जिन्ह से बिमल बिनोदा नन्द । तिन्ह से सेवक धरनी दास

गुरु प्रनालि कीर्यो प्रकाश । एता गुरु प्रनालि संपुरन ।

सिधवाइ अक्षरा लीला ।

औंकारेहि सम औष्टि बनाइ । औंकारहि बिसारो जनि भाइ । औंकारहि चहु बेद बखाना । औंकारहि बिरले जन जाना । औं नाम सराहौ खोजनिहारा । औं नाना बरन कियो बिस्तारा । औं निरगुन पुरुष निरन्तर कोइ । मारि पुरुष सबही मे सोइ । औं मालिक एक जन्म फुलवारी । औं मानिक उहै जाति जुग चारी । औं मूल मन्त्र गुर गमित गहौ । औं मति बहुतेरा बकि बकि जहौ । सिध पुरुष है एकाकार । सून सरोवर अगम अपार । संत गुर मिलै तौ लै पहुंचावै । सिखि लिखि पढ़ि गुनि हाथ ना आवै । धंधा करत गए कत पुरुषा । धरो भक्ति भव तरिजा सुखा । धोखहि धोखहि जन्म चलि जाइ । धरनेस्वर को धरु सेवकाइ । अनहद शब्द लेहु ठहराइ । अजपा जाप जपहु मन लाइ । अरध उरध धरि सुरति नीरेखो । आपा मेटि आपनहो देखो । आवत जात कर्म का फेरा । अजहु चेत चित सहज सवेरा । आपु आपना मन ठहरावे । आपे आपु ताहा चलिआवे । इश्वर नाम कहो बहु प्रीती । इष्ट जानि राखो परतीती । इहे बात निरुआरो भाइ । इहवां है दिन चारि सगाइ । इजमी जानो धन बित मोरा । इस्त्री बालक हस्ती घोड़ा । इदेहि बहुर्न तप पाउ । इहवहिं आपन मन ठहराउ ।

उरध मुल है अरध मुखडारा । उहै ब्रक्ष तिहु लोक अधारा । उजानि जेहि उहै जनावै । उपावै तेहि अवर ना भावै । उमति जानि उत्तिम सोइ । उ पद पावै बिरला कोइ । उमति माते दुमति त्यागी । उदित प्रताप काल उठि भागी । ऋषि मुनि गन सुर नर तेहि धावै । राम कृपा आपन सोइ पावै । राम रतन को जा के भेदा । राजा सोइ साखो है बेदा । रीति उधार जक्त बेवहारा । राखौ सत्य सदा धन सारा । रोपहु दया ब्रक्ष धरि तंतु । रहै संत जेहि जा घर कंतु । लीन भये हरि नाम हिरातो । लुबुधे प्रेम सुधारस माते । लाख माहि बिरले संसारा । लोक कुआ ते रहै निनारा । लिखा लिलार अचिंतहि होइ । लाख उपाय करै जो कोइ । लाभ मिलो ताके जगु आइ । लोभ तामसहि दीन्ह बोहाइ । एकं प्रभु एकइस ब्रहमंडा । एकहि ते भया नवखंडा । एक सनेही बिरला कोइ । एक भजे मिलि एकै होइ । ऐसन जानि ग्यानी सोइ । ऐसन जानि परम गति होइ । ऐसहि ऐसहि दैवस खोटाइ । ऐसन भेद न ह्रदया समाइ । अब करि रचना सब संसारा । ओंकार कोन बिबिधि प्रकारा । ओहि बिसरावे अध गवारा । ओइ मांह दिखो जिन्ह चारा । अवरो कहौं सुनो रे भाइ । अवसर भलो करो अतुराइ । अस जानि करो काया बिस्वासा । अवचकहि प्रभु करे तमाशा । अंक लिखा सो कवन मिटावे । अस आपनो सहजहि आवै । अन्धा नर आगे नहि सुझे ।

अंतहु राम अगम किमु बूझै । गहना करो तिलक अरु माला । गहो चरन गुरु जानि देयाला । गहु गहु बोलत गहिं की साखी । गहु नर नाहिं बसै घर माखी । साधुन तनु बसु ठहराइ । यहु संसार सार मिथवाइ । बारम्बार पड़े मन जानी । धरनी धन्य सोइ नर प्रानी ॥ १ ॥ इति सिधवाइ अखरा संपूरन ।

ककहरा ।

करता रामहि सुमिरो भाइ । करता के कोइ बाप न माइ । करता आदि अंत अविनासी । करता अगम अगोचर बासी । खासा होय सो करतहि जाना । खाम खलक धंधा लपटाना । खुशी होत धन आवत हाथे । खाली जात चले नहिं साथे । गुरु को चरन गहो चित लाइ । गुरु सत मारग दिए देखाइ । गहो सुदृढ़ के अधर अधारा । गहिउ तरिहो भवजल पारा । घट घट बसै यातहु नहिं सूना । घाट लखै जेहि पुरबिल पुना । घट में जो आवे बिस्वासा । घर बैठे मिलसी कविलासा । ङसिम जन्म जग मह ताको । उरध उलटि चढ़ो मन जाको । ङजल मनसा हरि ब्रत धारी । ङन्ह ते याहो बचन अधिकारी । चंचल चित अस्थिर करि राखो । चंचल बचन कबहिं जनि भाखो । चार दिना जग जीवन आथी । चलत बार कोइ संग न साथी । छिआ धुंए पर छवि लपटाइ । छिआ सोइ छवि देखि लोभाइ । छिति मह करिले राम सनेही ।

छिनु एक माह छुटेगी देही ॥ जन्म माह जगदीस पिआरा। जो
बिसरावै सो बटपारा ॥ जिन्ह जिन्ह जग जीवन ब्रत धारी। जरा
मरन की संसै जारी ॥ झगरा करै कथै सधुआई। झांझरि नाव
पार कैसे जाई ॥ झूठ कहत जिहि लाज न आवे। झोरि झांरि
जम ताहि झुलावे ॥ इन्द्री स्वाद रहा अरुझाई। इश्वर भक्ति
हृदए बिसराई ॥ इहै परमान करो मन माही। इ अवसर पइहो
पुनि नाही ॥ टहल करो साधु जन केरी। टार पात परिहरि
बहुतेरो ॥ टंडस सो बाढै जंजाला। ठापा ले पुनि छापै काला ॥
ठाकुर एक है सिरिजनिहारा। ठाव ठाव दे समहि आहारा ॥
ठाकुर छाँड़ि आन मन लावे। ठावहि आपन काम नसावे ॥
डाढ़ धरि मुलहि बिसराई। डहकि लोग पाखंडि खाई ॥
डर नहि आवत तादिन केरा। डोलत अंध बकै बहुतेरा ॥
ढाल धरो सतसंग अधारा। ढोलिआ साधु सदा संसारा ॥
ढोलकाहा होय रहे बिदानी। ढरकी जाइहो जेव घट पानी ॥
नाम एक संसार आधारा। नाम नाराएन सब ते न्यारा ॥
नाम नावरी उतरैहि दासा। नाम बिहुन नर फिरहि उदासा ॥
तारन तरन अवर नहि कोई। ता को देखु मुरख नर लोई ॥
तुलसी पहिरि तमोगुन त्यागी। ते के आदि अंत नहि लागी ॥
थापन उथपन थापनिहारा। थिर करिहो मन गगन सम्भारा ॥
थिर भव मन छुटि जंजाला। थर थर थहरै ता को काला ॥
दुर्लभ तन नर देही पाउ। दयाह है मन भक्ति दिढ़ाव ॥
देखा देखी मरत अनारी। देखो अपने हृदए बिचारी ॥

धर्म दया कीजै नर प्रानी । ध्यान धनी को धरिए जानी ॥
धन तन चंचल थिर ना रहाई । धरनिस्वर की धरु सेवकाई ॥
नहि तामस नहि भीसुना होइ । नर अवतार देव गन सोइ ॥
निर्मल पद गावे दिन राती । निर्मल सोभै कवनो जाती ॥
परसराम अव विरमा भाइ । पुत्र जानि जग हेतु बढ़ाइ ॥
प्रगटि परमेस्वर किछु दाया । पुरे भाग भक्ति हरि पाया ॥
फोटक फद परे नर भुले । फिरि फिरि अंध अधी मुख झुले ।
फरै अरध उरध लै लावे । फिरि नहि भवसागर आवै ॥
बहुत गए तरि एहि उपाइ । बहुत रहे एहि दिस अरुझाइ ॥
बड़े पुन्य भव मानुष देहा । बाद जात बिनु राम सनेहा ॥
भेख बनाइ कपट जिव माही । भवसागर तरिहै सो नाही ॥
भाग होय जाकि सिर पुरा । भक्ति काज बिरले जन सुरा ॥
मन गुड्डी गहि गगन चढ़ावै । ममिता तजि समिता उर छावै ॥
मधुर दिनता लघुता भाखे । मनबच कर्म एक मत राखे ॥
जुक्ति बिना कोइ मुक्ति ना पावे । जौ ब्रह्मंड खंड लैगी धावे ॥
जाकी हृदया भेद समाना । जप तप संजम करि पछताना ॥
राम नाम सुमिरो रे भाइ । राम नाम संतत सुखदाइ ॥
राम कहत जम निकट ना आवे । रिगु जुजुर साम अथरवन गावे ॥
लछमी जोरि संग जो लेइ । लाख उपर दिआ जो देइ ॥
लोकाचार चाटक दिन चारी । लेहु आपनो काज सुधारी ॥
औरो कहो सुनो चित लाइ । औसर भलो करो अनुराइ ॥
औलोकहु अपने मन माही । और प्रकार अंत सुख नाही ॥

सार शब्द ढूंढ़ो मेरो भाइ । साधु की संघति रहो समाइ ॥
सन्त मारग बिनु मुक्ति ना होइ । सांचा शब्द सुनो रुभ कोइ ॥
सेत झलाझल झलकै ताहां । सुरति निरति लै लावहु ताहां ॥
सहजे रहो गहो सेवकाइ । सहजहि मिलिहौ आतमा राइ ॥
खोजत धन नर फिरै बेहाला । खबरि ना जाने पीछे काला ॥
खोटा बहुरि जाए खोटसारा । खरा चहुदिस चलन पिआरा ॥
रक्त बीज से निपजी काआ । रचि पचि रंग बिरंग बनाआ ॥
रोम रोम रंकार समाआ । रेख रूप कछु मोहन माया ॥
होहु देआल बीसंभर देवा । हम नहि जानहि पुजा सेवा ॥
हमरे नहि कछु कर्मनि कोइ । हरि की क्रपा होए सो होइ ॥
छोरहु कर्म फांस चित लाइ । छोरि लेहु बन्धन बरिआइ ॥
छोटी मति मै निपट अन्यारी । छुटै जानि प्रभु नाम तुम्हारी ॥
कर्म कैकहरा जुग लपटाना । सन्त कैकहरा कोइ कोइ जाना ॥
जा घट भव अनुभव प्रगासा । तिन्ह की बलि बलि धरनी दासा ॥
एता कैकहरा संपुरन ।

भेद लीला ।

प्रथमे कारता राम पुरुष को करजोरी मस्तक नावो । तब कैकहरा निरुआरि करि निर्मल बोलि सुनावो । का आप रचे, करहु प्रानी कवन अवसर जात । ख खोजिले निज बस्तु आपनी छोड़ि दे बहु बात । ग्यान गुरु की कान सुनो धरो ध्यान त्रीकुटि पास । घुमते एक चक्र भवरा सेत उड़त अकास ।

उदै चन्द आनन्द उर अति मोती बरिषै धार । चमकि बिजुली रेख दहु दिस रूप को कहि पार । छोट मोट न जानु काहु सबै एक समान । जुक्ति जानि सुक्ति पैठो प्रगट पद निर्वान । झगरा झूठ पवारि डारो झारि झटकि बिछाउ । इन्द्री अन्ध भौ खाद कारन आपु जनि जहडाउ । टेक टंडस छोड़ि दे कर साधु शब्द बिबेक । ठवर सोइ ठहराइ ले जहां बसै ठाकुर एक । डाढ़ पात समुक्ष साखा कोइ फिरत पार ना पाव । ढोल मारत साधु जन नहि बहुरि औसो दाव । नाम नवका चढ़ो चित दे बिना बाद बिबाद । ताहा ले मन पवन राखौ जाहां अनहद नाद । थकित होइहैं पांच वो पचीस रहौ है थीर । दसवें द्वारे झलझले मनो मोती मानिक हीर । धोख धंधा जात जन्धा कथे बहुत उदास । निर निर बहिंगो तबहिं जब अभिअंतरे बिस्वास । प्रेम का घट प्रगट भव जाहां बसे पुन्य न पाप । फेरि मन ताहां उलटि राखो जाहां उठत अजपा जाप । बिना मूल को फुल फुलो हिए मांझ मझार । भेदिआ कोइ जानि है नहो अवर जाननिहार । मुल मंत्र अकार अद्भुत निराधार अनूप । जाइ पहुंचे कोइ कोइ जन जाहां छांह न धूप । राम जपु निजु धाम धवला मन हृदए कर बिस्राम । लोक चार बिचारि परिहरि प्रीति कर तेहि ठाम । वारि तन मन धन जाहा लगि धन जीवन मन प्रान । समुझि आपा मेटि आपनो सकल बुधिबल ज्ञान । सर्म सुन्य एक सुन्य एकै दो सरिजंमि राखु । खेर

रैह बहुर सैहु उसोइ न फरिहै दाखु । रहै अचल अमोल अस्थिर कहै अविचल बात । होत नर परमातमा सब आतमा मिटि जात । कुए ताहि पवित्रहु जे पूजे मन की आस । सहि करिहै संत जन जत कहि धरनी दास । श्रीभागवत गीता परेखो समुझि देखो वेद । जेहि गुरु गोविन्द कृपा करि तेहि मिलत ऐसो भेद ॥ इति भेद लीला सपुरन

अथ रंग रेखता अलिफ़ नामा ।

अलिफ़ अकेला साहिब सोही । औवल आखिर आकर वोही अब पहिचानो अपनी ताइ । असम्बता मिले गोसांइ । बेग्रहुर काकु बास ना आवे । बेख बिसारि सखा कह धावे । बेदिमाग़ भजि बुजे भाइ । बेजर्द गारी बहुरी सजोइ । तै तालीम मुरति करी तेताला । तेरो चोटो पकरे काला । तेते गए सदर सरदारा । तेरा मेरा कवन शुमारा । शेख कहाया भेख बनाया । सेली सींगी कांख लगाया । शेर सुनका झगरा ठाना । सो ज़ालिम साहेब का जाना । जिम्ह यह आदम सुरति बनाइ । जिमति धरी हरि दोज बड़ाइ । जिभ खाइ जो दरद बिसारी । जीती नहि हारो हरबारी । हेच कार दुनिया की जाल । हेरि पकरु मुरशिद दर हाल । हेरा छोड़ि हक पहिचाने । हेठ ना आवे रहै ठेकाने । खेत छोड़ि जनि भागु दिवानि । खेत चढ़ै दिल कर मरदानि । खेल संभारो धरु अवसान । खेत कवन है इहै अज्ञान ।

दावा बड़ा लगा एहि पारौ । दागा मति कर बावल भिसारौ ।
दारु लाइ जो दरद मिटैहौ । दावा बहुरि ना ऐसो पैहौ ।
जानत जे बजी बाइम चंगो । जात कछु नहि देर देरंगो ।
आखिर कर तासों अखलास । आखिर बारे जो बन्द खिलास ।
रे बन्दा रहना है थोरा । रेजा रेजा है तन जोरा ।
रैयत देवाल ना रहै निदान । रे यारो समुझो मति आन ।
जेनहि दिल का मालिक जाना । जेनहि पकरो ठवर ठेकाना ।
जे नहि जाने पीर पराइ । जरदस्त पुनि आवे जाइ ।
सिरजनिहारा वोही करतारा । सिजिदा करिए हरदम यारा ।
सीमा जोरि मति कर बन्दे । सितमी बहुरी परेगा फन्दे ।
सिर दीजे साहिब के काम । सिफत करेगा खलक तमाम ।
सीने अन्दर भइ सफाइ । सिर का भार उतरि गए भाइ ।
सांच पिआला जाके होइ । सालिम बाजी जीते सोइ ।
साकिर होय मोनकिर रिसरावे । सानीहाल आजार ना पावे ।
जाके मिले पीर महबूब । आके लिए अकिंदा खूब ।
जाके दिल दो दिल नहि रहता । जाए बहिश्त धरनी है कहता ।
तेरा का है इसमो अंधा । तेदिन गिरह न आवा बन्धा ।
तेल पान घर घोरा बागा । तेरह तरफ तमाशा लागा ।
जेते पढि पढ़ि नाही जाना । जेर भए आखिर पछताना ।
जेरताही का भया फिरिश्ता । जे दीव जे सकल सिरिश्ता ।
अजब अबीह सुरत है एक । अजब भए जिन्ह पकरी टेक ।
अलख लखे बाजे तन कोइ । अपनी अकिल मिले नहि सोइ ।

गहमा क़ौल क़रार तुम्हारा । गरए गए होए रहे गवारा ।
ग़ैर हिसाब जहाँ ना होइ । ग़नी ग़रीब सभी हर कोइ ।
फेर फार भ्रम करो मति कोइ । फिरि फजिहतो होसा सोइ ।
फिरि फिरि धरनी समुझावे । फिन पकरि कोइ पार ना पावे ।
कलबुद है एक पिंजर ऐसा । काम करे ग़ैबी एक वैसा ।
क़ायम दायम कबहि ना मरे । कामिल सो जो वा को धरे ।
क़ाज़ी मौलाना पढ़ि पढ़ि हारे । का जाने बेख़बर बेचारे ।
क़ादिर देइ काम अक़ली जाके । काम तमाम बनेगा ताके ।
लाम खिल्लासो जिन्ह जिन्ह पाया । लाम काफ़ सब दूरि बहाया ।
लाल माला दिल अन्दर जाके । लाल नूर मुख ज़ाहिर ताके ।
मिलना महरम परदा फारो । मिट्टी का बासन है दिन चारो ।
मिलि मिलि पहुचे मंज़िल केते । मीर पीर पैग़म्बर जेते ।
नूरि एक अवर सभ ख़ाकी । नूर बिना को करै बेबाकी ।
नूर महल में जो रस चाखे । मुसख़ा पढ़ि पढ़ि झूठ नहि भाखे ।
वाको क़ुदरत वाही जाने । वा का रंग कवन पहिचाने ।
वाह वाह वाहिद का नाउ । वाको मैं क़ुरबानी जाउ ।
हैतु मिले निमाज ना रोजे । हे रूप कर बन्दे दिल खोजे ।
हैरां आपु अजुदम जुदा । हिच कार होए रहे अलुदा ।
लाव अक़ीदा बालेखाने । लाज़िम है मति फिरो भुलाने ।
लाफ़िकिर सोइ साहिब कहिए । ला तामा नहि तासो रहिए ।
अबतक गई सो बहुरि ना आवे । अभि आपन मन ठहरावे ।
अब तो यह कह जीव का खूं । अपना करि जाने बेचून ।

हंमि ममखुदी आनरा मधे । हर साइत बागी जग धन्धे ।
हक् हलाम हमेशह चाखो । हल की हालति दिल मति राखो ।
एकातिस हरफ एक अगाह । एहि भारी मोहि राखु पनाह ।
एता धरनी दास पुकारा । ऐ साहिब सिरताज हमारा ।
हरफ हरीफ पढ़े सभ कोइ । माने बुझे मोलना सोइ ।
माने बुझि मनहि ठहरावे । ता के बहिश्त हर्बां चलि आवे ॥
एता रंग रेखता संपुरन ।

राम रेखता ।

अलिफ अव्वल को याद कर	वे वन्दा सुन कान	।
ते तराक होए चलेगा	आखिर छोड़ि जहान	।
से साबित होय देखना	जिमि जमालिहि यार	।
है हाजिर माशूक है	खे खालिक संसार	।
दाल दायम जिकिर कर	जाल जाति मामूर	।
रे रजाय रहो मान	जोजे जवाल से दूर	।
सीन सलामत जो रहै	शीन शुकुर को जानि	।
साद सिफत महबुब की	जाद जब्द पहिचानि	।
तो ताहिर जो जाहिरे	झांकि झरोखे हेर	।
ऐन गैन दोउ साम सुख	हरदम ताहि को वेर	।
फे फराक दीदार बिनु	काफ करार न होए	।
काफ कैफ का चाखना	लाम ला मासो खोए	।
मीम मोहब्बत आहिशी	नूर नफस को मार	।

बोबाब बिसाल हिए हित बसे है हवाल होय हार ।
लाम लका मलाइको अलिफ आपु मो आगु ।
हमजा हुए सो एक है धरनी ता कुरबान ॥

एता राम रेखता संपुरन ।

अलिफ आपु अन्दर बसे बे बतलावे दूर। ते तन मो तहकीक कर अलिफ अजाएब नूर। से सालिस होय समुझि ले जीम जहान बासीर। है हवाल को खाक में आखिर होत खमीर। दाल दिलहि मो दोस्त है जाल जिकिर कर पेश। रे रहीम के राह चढु जे जिन्दे दरबेश। शीन सपेद सुवास गुल सीन सिकम दर माहो। साद सुरति सावुत है जाद जमीर भराही। तो तालिब दिलदार होय जो जालिम उठि जागु। अेन अकीदा बान्धि ले गैन गाफिलि त्यागु। फे फाजिल अन्दर पढ़े काफ कोरान तमाम। काफ करे मति काहिली लाम लेत निजु नाम। मीम मेरा मासुक है नु नादिर कोइ जान। वाव वाही की फिकिर मो हरदम रहु मस्ताम। लाम लेहु ठहराइ के अलिफ अकेला सोय। हमजा हुए मो रसोद बिना धरनी लखे ना कोय ॥

एता रंग रेखता संपुरन ।

सत गुरु लीला।

चारो जुग सतगुरु की महिमा जो सत पंथ बतावे ।
काटे तिमिरो करे उजिआरी संसे सकल मिटावे ।

करता राम आदिहु तें जुग अनन्त को राजा । मुल अक्षर अस्थुल शब्द तें सकल स्रिष्टि उपराजा । धरती गगन पवन औ पानी आनि अगिनि उपचारा । त्रिगुन मिलाय जिव सिव मंदिल रचो विविधि परकारा । जारज उद्भिज अंडज उखमज जीव रचो बहु जानो । अवर अनिक रचो अस्थावर कहि ना जाय मुख बानो । सष्टिमण्डल मानुष को देखि सभ उपर अधिकारी । प्रेम बढ़ावे दरशन पावे तासे परम पिआरी । जो निजु ज्ञान ध्यान लै लावे सो निजु प्रभुहि समाना । जो संसार भ्रम बन भुला भ्रम काठ अरुभाना । पुनि पुनि आवत जात जगत में चढे चरख चौरासी । कर्म डोरी गुड्डी तन बांधी उलटि गगन किन फांसी । मानुष मिलन चाहि करता सों मुल ध्यान बिसराआ । ढुंढत फिरे जाहां ताहां जग में फिरि फिरि भटका खाआ । कोइ ढुंढत है कर्म जोग करि धोती नेति नेउरी । प्राना आंबु पवन कोइ साधे करत भुअंगम भवरी । कोइ आथर पाथर में ढुंढे कोइ अग्नि जल पासा । कोइ गोफ़ा सोफ़ा में कलपे भुखे वो पिआसा । कोइ कोरान पुरानहि ढुंढे कोइ ब्रम्ह आचारी । कोइ बिदेस बन खंड डंड धरी त्यागी सुता सुत नारी । कोइ सिर जटा बढ़ाय बघम्बर अंग छार लपटावे । नागा मौनि दुधा आंधारी बाढी उठाइ सुखावे । काइ सिर टोपा टोपी धरि के बारम बार ठगावे । कोइ कंथर कर पंथा जोहे अव मुद्रा कान पेन्हावे । लोक चार तुरुक हिन्दु

जत करत व्रत यम रोजा । एतना बूढि कहो किन पाया जिन्ह तन मन नहि खोजा । कया देव घर देव निरंजन परम जोति प्रकाशा । पांच तत्त गुन तिन तासां पर अंत पचीस निवासा । समुद्र सरस्वति गंगा जमुना चान्द सुरज बसु काया । जिन्ह छंउ खंउ चक्र अष्ट दल कवल कया ठहराया । इंगला पिंगला सुखमन सोधे बंक नाल तिल द्वारा । घाट त्रिवेनी बाट उनमुनि स्त्रवे सुधारस धारा । चारि खाइं दस दरवाजा बावन बनो कगुरा । बारह खंउ महलर कोठा माया भवन भरो पुरा । काया में बैकुंठ नरक है दोजख बहिस्त कहावे । तेतिस देव जोइनि चौरासी अरसठि तीरथ कहावे । चारि पीर चौदह खनवादे चारि पीआला सुझे । काया में मसजीद मइमंद मोलना खोय सो बुझै । अष्ट सिधि नौ निधि कया सो चारि पदारथ सोउ । जग में जीवन मुक्ति कया सो जो युक्ति लखावे कोउ । सभ घट एक अलख जिन्ह जानो ता के निकट दयाला । जा के जिव सो जिव दया नहीं तिन्ह अपनो घर घाला । युक्ति की मारग संतनि ठहराई गुरु प्रसादे पाया धरनी अवर उपाय मिले नहि जो धरनी मरी जाई । युक्ति के मारग काहे कहावे । सुने सुनावे गावे । धरनी प्रेम करो जो प्रानी अवसि परमपद पावे । एता सतगुरु लीला संपूरन

बोध लीला ।

प्रथमहि कोरकी एक कारला । आदि अंत मध्य भरता करता ।

तब बंदौ संत गुरु के पाउ। जिन्ह प्रभु सौंपत जीव अगाउ ।
तब पुनि सकल साधु सिरनावो। जा की दया रुभै पद पांवो ।
स्रवनन्ह सुनी संत की बानी। अरु पुनि बेद पुरान कहानी ।
संसकार संत संगति पाइ । अब एह जग मिथ्या ठहराइ ।
जीत देखा अस्थित नहि कोइ। सो अस्थित जाते सभ होइ ।
कथा करि संसार भुलाना । सो सभ ह्रदये किवो अनुमाना।
जब सपने सुख संपति पावे । जागी काज कछु नहि आवे ।
मरकट मुठी छोड़ि नि देइ । बिनु बंधन तन बंधन लेइ ।
नाभी सुगंध नासिका बासा । चरचत फिरै चहुदिस घासा ।
दुजा देखो दरपन माही । छबि जसु एक बहुरि कछु नाही ।
ललनि बैठि सुगा जिमि भुला। भरमित अंध अधी सुख भुला ।
जल मधे प्रतिमा देखलावै । खोजत बिन से हाथ ना आवे ।
अपनो देह घुमावत बारा । घुमत कहे सकल संसारा ।
जागत जेवर सरप अंधारे । निर जीव होत सो दीपक बारे।
खिल को मानुख खेत मझारा। ओग पति सुद चरै नहि चारा।
फिटिक सीला अरुझे मे मंता । अपनो कुबुध गवावो दंता ।
देखत खाल गउ गरवानी । हेतु करै अपनो सुत जानी ।
सुस्थिर आपु नावरो माही । जानत अवर चले सभ जाही ।
सुनत स्वान काचु के गेहा । मन अभिमान बिसारै देहा ।
मृग त्रिसना जल धोखे धावे । थाकि परे पाछे पछतावे ।
मानुष जन्म जुआ में हारे । हरि भक्ति नही ह्रदये बिचारे ।
सबको अस्त जाहां लगि देखा । सत्य आतमा राम बिसेखा ।

एकौ बिज बिछ होए आआ । खोजत आछु अंत ना पाआ ।
देखो निरखि परखि सभ कोइ । सब फल माह बीज एक होइ ।
पुरइनि ज्यौं जल मध्य आकासा । एकौ ब्रह्म सकल घट बासा ।
मनि गन माल मध्य जिमि डोरा । सागर एक अनेक हिलोरा ।
एक भँवर सभ फुल मझारा । एक दीप सभ घर उजिआरा ।
तंतु निरंजन सभ को संगा । पसु पछी नर कीट पतंगा ।
देखो आपन काआ बिलोये । बाद बिबाद करे मति कोये ।
काम क्रोध मद लोभ निवारे । समिता गहि ममिता को मारे ।
आन को दोस कबहु नहि धरइ । जानत जीव के घात न करइ ।
नीर पछी साचहि अखावे । नीर दाबा धन मथा ना खावे ।
संतत धर्म अनाहत करइ । सो प्रानी भवसागर तरइ ।
दुख सुख एकौ भाव जनावे । अभिअंतर बिस्वास बढ़ावे ।
अस्तुति निन्दा दुवो समाना । सुर नर मुनि गन ताहि बखाना ।
तेहि समान तुले नहि कोइ । जीवन मुक्ति कहावे सोइ ।
मन प्रमोध जाहि मन भावे । त्रिबिधि पाप तन ताप नसावे ।
चित्रगुप्त धरमाधो राजा । काल दूत जम आरती साजा ।
अपनो आपा आपु मिटाइ । धरनी दास तासु बलिजाइ ।
अैसी दसा बिराजो जा को । धरनी ताहा न रहो कछु बाको ॥

एता बोध लीला संपुरन ।

जोग लीला ।

करता राम करे सो होइ । जुग जुग दुजा अवर न कोइ ॥

घर एक झिगा झिगमिगारा । उसह निरजन सो बनिजारा ॥
जा घर ब्रह्मा बिष्णु महेशा । रज तम सत तिनो को भेशा ॥
जा घर पाचो तत्त समाना । गुरु प्रसाद भेद कछु जाना ॥
धरती पानी अग्नि अरु बाइ । पचए आगि, अकास समाइ ॥
पाचो के पच पच प्रकृति । समुझि परि संत संघति स्रुति ॥
हाड चाम अरु मासु अघारी । रोमावलि सघन बिसतारी ॥
सुचि अव लार पसेना धातु । रक्त समेत बानाइन बातु ॥
भुख प्यास आलस अरु क्रोधा । निन्द्रा सहित पाच प्रबोधा ॥
गावन धावन अव बकताइ । जिन्ह के संघति छींक जम्हाइ ॥
माया मोह लाज निर माया । राग दोष करि भेष बनाया ॥
धरती पीत सेत जल बरना । अग्नि लाल किछु असरन सरना ॥
हरो बाइ अरु साम अकासा । पाचो पाच रंग प्रगासा ॥
बिबिधि माया बन को बिस्तारा । कहिए तो पाचो को घर बारा ॥
धरती का घर किवो कलेजा । गुह्ज द्वार होय ता माझ भेजा ॥
पानी का घर किधो लिलारा । इन्द्री लिंगो ताको द्वारा ॥
पीत मझारि अग्नि को गेहा । नैना ताको द्वार उरेहा ॥
बाइ का घर जंघा जानु । नासा ताके द्वार बितानु ॥
अरु अकास घर गगन निरूपा । श्रवन द्वार अति बनो अनूपा ॥
येह घर माह है तीनो लोका । येह घर मो है सोक बिसोका ॥
येह घर माह जीव अरु सीउ । येह घर माह नारि अरु पीउ ॥
येह घर माह ठाकुर वो दासा । येह घर का कत कहो तमासा ॥
येह घर हंस मान सर धावे । येह घर चन्द्र चकोर चितावे ॥

येह घर माह गुरु अब चेला । येह घर माह तिरथ अरु मेला ॥
येह घर मो है निरमल जोती । येह घर माह सेवा औ मोती ॥
येह घर माह जोग अरु जुक्ति । येह घर माह मोच्छ अरु मुक्ती ॥
येह घर माहि आपि सोइ । येह घर माहि दरशन होइ ॥
जो गुरु मिले तौ पथ बतावे । तत्व लखाये ध्यान मन लावे ॥
ध्यान सोइ जो सुन्य बिलासे । सुन सोइ जो चन्द्र प्रगासे ॥
चंद सोइ जो प्रगटे जोती । जोति सोइ जाहां बरिसे मोती ॥
मोती सोइ जाहां हंस लोभाइ । अवँर न बरन बरनि नहि जाइ ॥
अनहद धुनि सुनि सनि सच-खाइ । गुरुगम जानि बिरला कोइ ॥
टुटे भ्रम छुटे जम जोरा । गंध सुगंध लेत मानो भवरा ॥
मिटे तिमिरो होय उजिआरा । उघरे त्रिकुटि कठिन केवारा ॥
निसु दिन बरिसे अम्रत धारा । सनमुख दरसे सभ तें न्यारा ॥
निरखत नैन भइ परतिती । आदि अंत मध्य संका बिती ॥
जाहां का बिछुरा तहां समाना । जीव को आवागन नसाना ॥
मुए मुक्ति सभन के होइ । जीवन मुक्ति संत जन कोइ ॥
ऐसा शब्द करे निरुआरा । धरनी सो गुरु देव हमारा ॥

एता जोग लीला संपुरन ।

मोच्छ लीला ।

साचे करता करे सो होइ । अवरो समुझे काछु मति कोइ ॥
चारो जुग प्रभु की प्रभुताइ । संत सरूपे भक्ति दिढ़ाइ ॥
अगुमन उपजे भक्त घनेरो । पद परमारथ किन्ह बहुतेरो ॥

तिन्ह को नाम कहां लगि धरिए । सीस नवाइ कै डंडवत करिए ॥
परसुराम अब बिरमा आइ । जिन्ह के गेहो प्रगटे आइ ॥
विप्रन्ह देखा ग्रंथ बिचारो । जन्म पत्रिका लिखो सुधारी ॥
येह बालक होइहै दीर्घाइ । बहुत जगमो लोक बड़ाइ ॥
सिक्षावत सुबुध सुर ज्ञानी । दाता दुखो सुखो सनमानी ॥
बेद बिचारी नाम ठहराआ । धरनीधर को गीत सुनाआ ॥
आगे एक समो अस होइहै । भेख पकरि हरि भक्त कहइहै ॥
पंडित कहि सहि भव सोइ । बेद भेद नहि मिथ्या होइ ॥
लिखित प्रवाना जा दिन भेउ । ता दिन कृपा कृपानिधि किएउ ॥
सोवत गोन्द मित चलि आए । माथ हाथ दे आइ जगाए ॥
माला तिलक प्रगट पहिराआ । तुरिअ भक्ति दिढ़ दुर करि माआ ॥
एतना शब्द श्रवन जब सुना । मानो लाभ मिलो दस गुना ॥
चिहुंकि उठे तब नैन उघारा । आपु अलोपि बोलनिहारा ॥
देखि दसा तन हृदए हुलासा । तत्छन अनभव भव प्रकासा ॥
लोकचार के मारग छूटो । मोह माया को बंधन टूटो ॥
साधु को संगति पंगति पाआ । प्रेम बढ़ो परिचै भव काआ ॥
प्रभु सो प्रीति निरंतर लागी । भर्म भुलानो संसै भागी ॥
पूरनब्रह्म सकल घट देखा । कीट कुंजर सम एकै लेखा ॥
जो जैसा भावन करि जाना । ताको तैसा भा परवाना ॥
जो नर दिव्य दृष्टि करि चीन्हो । काजभलो अपनो करि लीन्हो ॥
चर्म दृष्टि नर जो अभिमानी । संत को महिमा तिन्ह नहि जानी ॥
शुग संगाली जागत नाहो । धरनीधर प्रभ के घर मांझो ॥

जो नर चाहो आपु भलाई । धरनीधर सों करो मिताई ॥
दुरि करो ब्रत देइ देवा । करि लेहु धरनीधर की सेवा ॥
धरनीधर सो ध्यान लगावे । सो नर निश्चे दरसन पावे ॥
धरनीधर की लेइ जो छापा । ता की देह होय निह पापा ॥
धरनीधर की आरति बारो । जन्म जन्म को पातक जारो ॥
धरनीधर को सुमिरन करई । ता को संकट कबहि ना परई ॥
धरनीधर की अस्तुति जाहीं । सकल आनन्द इंदनि ताहीं ॥
धरनीदास प्रचारि गाई । अपने मित की बलि बलि जाई ॥
जो जन मित महातम गावे । बिनसे पाप परम गति पावे ॥

एता मित्र लीला संपुरन ।

नाम माला ।

सतजुग त्रेता द्वापर मह्हि आवहु संतन्ह वपु धारी । करता राम भजो सुर नर मुनि मै तिन्ह को बलिहारी । कलजुग के भगतन्ह को कहिए जाहा लो मनहि समाई । जा की कथा सुखे नर प्रानी भवसागर तरि जाई । सुखदेव रामानन्द नाम देव गोरख दाता कबीरा । रंका बंका सेना धना दादु पीपा मीरा । प्रिथा पुनि रविदास सुरसुरा बुढ़न अरु वाजिदा । तुलसि जे देव जोगाना नीक नर हरि सदन फरिन्दा । बुरि घाटमा मिरिजा सालिम मकरंद माधो दासा । अनंता नन्द परमानन्द कुबा कामा काधा ब्यासा । बंमन विद्यापति कृष्ण दास जड़भरथ जनक अरधंगी । प्रथा पदुमा कमाल सुरतुजा

भावा गलगला जंगी। बिष्णु स्वामी निमानी जागा वा खीजि आमी आस। ब्यानी गोबिन्द सुर चतुरभुज गोवरधन गोपाल। धरनीदास दास दासन्हि को ह्रदये हेतु बढ़ावे। एकहि ठाम सकल साधुन्ह को कर जोरि सीस नवावे।

एता साधु माला संपुरन।

अठोतरी माला लीला।

मन सुमिरु करता राम। सभ संत जन बिस्राम ॥
भरि पुरि लोक अलोक। जेहि ब्यापे हरख न शोक ॥
कत चौजुगि चलि जाही। सो पुरुष बिनसत नाही ॥
जाहां भवन भुमा नीर। ताहां कनक भरत न बीर ॥
जाहां भक्त को सदेह। ताहां आपु धरिआ देह ॥
सतसंग भय चित चेत। भगतावलो कहि देत ॥
प्रहलाद संकट पाउ। नहि लागु तेहि तन आउ ॥
ध्रुप धारी आबिस्वास। तेहि दियो अबिचल [illegible] ॥
नारद सारदा सनकादि। उन्ह अंत [illegible] आदि ॥
चलि गए बलि के द्वार। धरि बावना अवतार ॥
हरिचन्द संग सुत नारी। संत राखि [illegible] ॥
बासिष्ट सो हनुमान। गहि रहे [illegible] ॥
उपजी बिभिख न भाव। लव राज [illegible] ॥
सवरि अहिला नारि। छिनु माह लिन्हा तारि ॥
धोमेर सहित परिवार। नहि तरत लागी बार ॥

जब अंबु रखि बिष्णु जाप । नहि प्रन पाइ ब्याप ॥
जब द्रौपति पुकार । ताहौ बढ़ो बसन अपार ॥
पंडव धरि मन परतीति । लिन्हो राज कवरोहि जीति ॥
मोरधुज सीस सनमुख दिन्ह । तब हरि लाए अंकाम लिन्ह ॥
बिदुर को भाव लिनो जानि । पायो साग बहुत बखानि ॥
सुपचहि दिन्ह [illegible] आनी । जाको लोक पिअत न पानी ॥
दिन्ह रंक [illegible] । ऐसो है गरीब निवाज ॥
अजामिल पिङ्गला गजराज । इन्ह को बनो आछौ काज ॥
सुआ़ङा सुनत भए सुखदेव । ऐसो मुल मंत्र को भेव ॥
जानो जल [illegible] अष्टभरथ । प्रभु को नाम को निज अरथ ॥
बद्रीनाथ अब दाता जेइ । इन्ह के कृपा बहुते भइ ॥
गोरख वो मछिन्द्रानाथ । सो पुनि भए समुझि सनाथ ॥
देवदत्ता नाथ अतीति । जिन्ह के राम नाम परतीति ॥
गोपीचन्द अव भरथरी । हरि की भक्ति समुझे परी ॥
रहनी रहे रामानन्द । कलि में प्रगट पुरन चन्द ॥
बिष्णु स्वामी माधवा चार्ज । किन्हो बनो जीव को कार्ज ॥
नीमा नन्द निज पद गहो । जीवन मुक्ति होय जग रहो ॥
जै देव भक्त प्रानी पांच । पांचो गहो दोउ करि सांच ॥
निरमल नाम देव कबीर । हिन्दु तुरक के गुरु पीर ॥
तिलोचन वो गलगला नन्द । हरि की भक्ति किन्ह सुछन्द ॥
अमन्ता नन्द उपजे अग्र । जिन्ह के बनी काम समग्र ॥
साकी बिष्णु सुरसुरा नन्द । जाके कृपा किन्ह गोबिन्द ॥

भावानन्द अव रविदास । जिन्ह के हिए हरि बिलास ॥
नर हरि सदना सुख नन्द । जिन्ह के मिले आनन्द कन्द ॥
पीपा सैना धना भाग । जाके उर उपजु अनुराग ॥
पृथा प्रसा रंका बङ्का । राम प्रताप भए निरसंका ॥
अलख बादसाही डारी । महरम भए हाकी प्रचारी ॥
दादु बुढ़ना कामाल । सो पुनि भए निपट निहाल ॥
अम्हना सुरतुजा बाजिद । जिन्ह के काबा माह मसजीद ॥
तुलसी अव सुरनाभा भक्त । जिन्ह की सुजस बाढ़ी जक्त ॥
सुरि घाटमा मकरन्द । जिन्हि के हिए अति आनन्द ॥
कान्हा कुबुजा अव हरिबंस । जिन्ह मो बड़ी प्रभु को अंस ॥
परमानन्द माधीदास । जिन्ह की भली पुजी आस ॥
पदुमा मीरा करमा सीता । इन्ह हरि भक्ति ते भव जीता ॥
नरसि व्यास कालु कीर । येह पुनि महा मति को धीर ॥
स्वामी गोबिन्दा मुरारी । प्रभु को मिले तन मन वारी ॥
माधा नैना गोबरधन धनु । सोवत जागो अव तन मनु ॥
सेंभु छप्पा दास पिआर । जीगा जानि उतरै पार ॥
कामा अलजंगि जानी । जिन्ह के संगी सारग पानी ॥
खोजि टिला टिकम दासा । चहु दिस फैलि रही सुवासा ॥
नानिक चतुरभुज की बनी । दिन्हो डारि मन की मनी ॥
बन्दो गुरु बिनोदा नन्द ॥ जिन्ह की दया सकल आनन्द ॥
कहां लगि कहौं संत अनन्त । जुग जुग भक्त अव भगवन्त ॥
दासन्हि दास धरनी दास । मनवच कर्म न दोसर आस ॥

अधर लीला ।

आदि पुरुष अनादि सुनु धर । अवि गति अभिअंतर इच्छा धर ॥
परम जोति पुरन प्रगास धर । प्रथम अंगुष्ट प्रमान ठाम धर ॥
मुल मन्त्र अंकार अधर धर । पांच तत्तु गुन तिन ताहां धर ॥
इन्द्री जाल गोपाल जाल धर । विष्णु महेश ब्रम्ह माया धर ॥
माला तिलक जनेउ जटा धर । गुप्त अच्छर बावन पावन धर ॥
गुरु सिष्य विधि अकृत बिचार धर । साम वेद रिगु वेद भेद धर ॥
जजुर वेद अथर वन मन धर । निसुबासर संसा सुर जानि धर ॥
तारागन अनगनित आनि धर । सेत नील अरु पीत रंग धर ॥
स्याम लाल प्रति पाल संग धर । बर बैकुंठ कैलास वास धर ॥
इन्द्रादिक सुर असुर देह धर । धरमराय जम चित्र गुप्त धर ॥
माहा मेघ चंचल चपला धर । मच्छ कच्छ बाह संख धर ॥
दसो दिसा द्रिगपाल दसो धर । महिमंडल मानुख लिलाधर ॥
पसु बिहग जलचर थलचर धर क्रिमत्यादिक जीव जन्तु सकल धर ॥
बरखा सीत उखम उखमज धर । पिण्ड प्रान बुधि ज्ञान ध्यान धर ॥
बावन बपु नरसिंह रूप धर । परसराम बलिराम राम राम धर ॥
जगनाथ जगनिक लंक धर । पाप पुन्य सुख सरग नरक धर ॥
मुक्ति भुक्ति जग जोग जुक्ति धर । आवागवन जिय जरा मरन धर ॥
कर्म भर्म अतरन तारन धर । गुन प्रकृति मन छुति छति धर ॥
इन्द्री दसो सकल घटपट धर । अनादिक स्वादि खटरस धर ॥
रूप सुगंध नाद बानी धर । नवो खंड ब्रहमंड अंड धर ॥
मेरु सुमेरु कुमेरु सहित धर । पुरि समुद्र दीप द्विपा धर ॥

गलिआ गंग जमुन सरस्वति धर । तीरथ बरत मङ्गु छेत्र धाम धर ॥
अस्थावर जन चिनत्यादिक धर दुख सुख संजम कुमति सुमति धर ॥
तन तन संवति हेतु बये धर । जस अपजस धर दाआ धरम धर ॥
खनक रतन मानिक मुकुता धर । सतजुग त्रेता द्वापर कलि धर ॥
नारायन सनकादिक पितधर । दाता भेद जग अवतार धर ॥
बद्री ध्रुव प्रह्लाद पृथु धर । बिद्यापति जड गज मोचन धर ॥
ब्यास देव हर भीम सोम धर । भक्ति हेतु भजनिक पुरुष धर ॥
मुनि गन गंधर्ब रिषि राक्षस धर । अमाति रिधि सिधि समुह धर ॥
लोक अनेक आपु बोदर धर । जुग जुग जुग अनन्त लीला धर ॥
सोइ धरनीदास के ह्रदय चरन धर जै जै जै प्रभु आदि अंत धर ॥

इता अक्षर लीला संपुरन ।

चेतावनी ।

जै जै उचारो, धरनी ध्यान धारो । तेजो मन बिकारो, भजो प्रान प्यारो । माहाराज राजा, भक्ति भाव काजा जबे । गर्भ बासा, किआ मातुखासा । बनो माथ हाथा, चरन पीठ साथा लगी पेट पीवा, अङ्गुठ हाथ सीवा । रक्त मास हड्डी, तुचारी मगड्डी । नैन जिभ नासा, स्रवन इन्द्री आसा । अबोभि आंत जेजा, फफेसा करेजा । किवो दसो द्वारा, पवन प्रान अधारा । ताहां प्रान पिआरा, दिवो आनि चारा । मलो मुत्र खोरा अगिन आव पीरा । बंधि अष्ट गाता, अधो मुख झुलाता । भयो कष्ट भारी, तो कहता पुकारी । नरक से निकारो,

मैं बन्दा तिहारो । करो भक्ति ऐसो , कहौ आजु जैसो ।
चरन चित्त लावो , न काहू दुखावो । दुग्रा के हिआला ,
उहां ते निआला । काहुआ दिन अचेत , गवो दुध लेत ।
बहुरि अन्न पानी , बचन बोलि जानी । कहो काहु माता,
पिता बहिन भाइ । लगो काहु चचा चचानि सगाइ । ममेरा
फुफेरा खलेरा घनेरा । अरोसी परोसी चिन्हो चेरि चेरा ।
कुलो कर्म जानो एगानो बेगानो । उहां गोष्टि कीन्हो सो
भर्म भुलानो । गलो गैल डोले वो बोले उमंगा । शुलेला
फुलेला दसन लाल रंगा । गवो बाल अब सथा भवो देह कामा ।
बहु ब्याहि लाये बजाय दमामा । घोरे अटोरे बराती बनाए ,
बड़े डौल से बहु ब्याही लेआए । तो दुनिआ के परिपंच
देखन आए , अपानि अपन पाव बेरी भराए । खनी खंधकी
कोट किन्हो कगुरा , महल के टहल मे घनेरा मजुरा ।
माआ जे पसारि किआ फ़ौज भारी , कढ़ौ सालिवो चाप किन्हो
सवारी । कबहु जाइ पंखी सो पंखी धरावे , कबहिं जंगलो
जीव कुतो तोरावे , कबहि जाल जंजाल मच्छी बझावे ।
कबहि बन घेरावे अग्नि सो जरावे , सो तोपें गढ़ावे गढ़ि
ढ़हावे , कबहु बन्द बेशी मेवेशो लेआवे । बड़े चाक चौखुट
इटी पकावे ; जड़े पाथरे नकास गिरि करावे । धरा धवरहर
धवल उर्चा उठावे , ताहां जोरि आछे बिछवना बिछावे ।
ताहां फुलि फेलि लगी तुल तकिआ , दरीची झरोखी उठि
झांकि झकिआ । सिपाही घनेरे खड़े सीस नावे , केते

बिछुओं झुट सोभा सुनावै , हस्तिनि मास्त मैठा को हस्ती लड़ावै । नइ नागरी नारी नटिन सो नचावै, घरि को बजावै समुझि जिय न आवै । हरे धन बिरानो ठासो लगावै , कतै को भले जीव सूरी चढ़ावै । माछा मुरुा होथ मुंडमाला बंधावै , जो हरि को भक्ति जीव दया दिढ़ावै । करै ता को नींदा नगीचा ना आवै । बिलोको पसारा मनहि मन बिचारा , जगत जेर सारा जीवन धर हमारा । तब करते कला देखि ऐसी बिचारा , लगी दूत गैगी पलंगै पछारा । कतै को बैद बैठि करै अवूखदारू , कतेको करै आपु संसै को मारू । कतेको जंत्र तावोज़ लिखे लिखावै , कतेको सगुन साधि झरावै फुकावै । नाहि आजु ऐसो मिले जो जिआवै , बराबर काआ भार सोना सो पावै । जबहि जुक्ति जगदीस ऐसी बनाइ , तबहु राम को नाम निश्चै न आइ । तकावे तवेला झुमेला के हाथी , परो बुझि एहो दाव संगी ना साथी । ख़ज़ाना रुपैआ जहा को जहाओ , रहो सुन्दो जो जहां को तहांओ । कमाइ समुझि अंत आइ रोआइ , गइ जन्म ऐसे भक्ति छिये न आइ । पलावन मन्हे जाहि जगदीस रइआ , कहो ताहि को जग कवन है रखैआ । दरब को न जाना दिवो सो बुझाना , जगीरी तगीरी वो थाना नसाना । पैआना पैआना पुआरत लोगा , रोआंते कबीला परे सुंड सोगा । जाना चारि आए उहाते उठाए , अग्नि सो जराए नदी मो बोहाए । पैन्हाए कफ़न खोदि खाटे गड़ाए , जो दिवान साहेब सलाम बाहाए ।

प्रबोधै ना बाचै, बहुत नाच नाचै । कला खेलि खाखि भला इन्द्रजाली । जाहा धर्मराया, चित्रगुप्त छाया । उहा पत्र देखा, सुकृत को न लेखा । नहो नाम पाआ, नहो जीव दाआ । भक्ति को न भेवा, नहो साधु सेवा । जुआ जन्म हारे, बेकुफी बेचारे । भुलाने अनारी, परी बोच भारी । गये येह प्रकारा, कतेओ भुआरा । अवर जो बेचारा, करे को शुमारा । गये कवरो कं, अव सिसुपाल रावन । गए छपनो कोट जादो काहावन । गये चकवै चक्रवरतो काहाए । गए मंडलो कोस देसो ना पाए । गवो साक बंदो साका बाधि केतो । तो माटो मिलो विर बलवान जेतो । गए खानखाना सुलतान जो छत्र धारो । गए मीर उमराव करो रोह जारो । जो बेगम बेचारो गमे मारि डारो । होतो प्रान प्यारो सो नारो पवारो । गए रावना अव रानो गुमानो । तिन्हो को कहो धो कहां है निशानो । गए लाख पति धजा बांधि कोटि । तिन्हां डारि पासा लिन्हो मारि गोटो । हिये चेति चेतो चेतावन चेताउ । संभारो संभारो अगाउ अगाउ । भरे दाग पोछे जतन को धोआवो । अगाउ नहो, दाग के वाग जायो । राम कृपा ते मानुख देह इआरो । चलो राह नेको बदो को विसारो । भक्ति भाव चूके सोइ भवन भूके । जिन्हो भक्ति भेटा, जरा मरन मेटा । सोइ जन सुभागे, उलटि पंथ लागे । हिये दाग दागे, पिये प्रेम पागे । भक्त ध्रुव राआ, अचल राज पाआ । भले आपु जागे, अवर को जगाआ । तो प्रह्लाद अह्लाद

के भक्ति धारो , थपे इन्द्र कैसो सकै वावन टारो । मोरधुज समोरधुज जनक अंबुरीखा , जुधिसटिल भरथ गोपी चन्द्र परीखा । तो देखो भभोखन भक्ति भाव साजे , अजहु लोक निकलंक निर संक गाजे । भक्ति भरथरी अवर जानि पीपा , जिन्ह की अमर नाम है दीप दीपा । तो कामावो नामा सुदामा भलाइ , कबीरजी गोरखनाथ मिराबाइ । सुखदेव देव जेदेव सोभा सोहाइ , रविदास सेना धना धीरताइ । अमर नाम अहमद तेजो बादशाही , दुनिआ में प्रगट प्रेम जाकी सराही । फकिरी करी सोइ साचे अवोन्दा , जसाले रहो मा वी जिन्दा फ़रिन्दा । निके ना निका चतुरभुज चित लाआ , भजि लोक लज्या तेजि मोच्छ माआ । विराजो जहांलो भक्त लोक साही , कहालो कही संत की अंत नाही । सकल संत दाआ चेतावन चेताआ , धरनी दास आया सरन राम राआ । एता चेतावनी संपुरन ।

गुरु गुष्टि ।

प्रथम एक करता जपो जीव जामी , गुरु सिख गुष्टि कही काहु वखानी । गुरु शब्द साचा सुरत सिख सही, दुहु मिलि के ज्ञान गुष्टि कही । कहते सुनते पढते प्रतीति, बरे ज्ञान दीपक हरे हारि जोति । मोहु तो सुनी साधु संघ प्रसाद , सुमति कुटि बहुबादो बिखाद । विराजी गुरु आपनी आसने , कहो सिख अधिन हो के आगुमने । सामी सनमुखि कहते भरो ,

दोउ हाथ जोरि के बिनती करो । अपराध छिमा कीजे जब संभु, दया करि सुनो गुरु गोबिन्दा प्रभु । कहते बनै ना वचन आवरो , हमारे सदां है सरन रावरो । कीजे कृपा मोहि लीजे अपनायें , तो मेवो सुखी होय चरन चित्त लाये । केते दिन कियो देवको राधना , केते दिन कीयो पवन की साधना । देखो केते दिन दुधो अचाये , घने देवथा की चहुवोर धाये । भरि देह संदेह दीजे मिटाये , जेहि करि के सकलो भ्रम मिटि जाये । चतावो गुरु तव बदन सिख सहो , कंया मे तेहारो जो है सो कहो । तोहारे बचन तो हमारे सोहात , सोइ है जो कहता बनाइ है बात । तबे सीख सेआनि समुझि के कहो , नहि किछु रहा तब कवन सा रहो । किया ताहि कवने का है वाको नाम , सो कवनि सरूपि बसै कवनि ठाम । सुनो सिख सुबुधि गुरु गोबिन्दे कहा , नहि काछु रहा तो आलोपि रहा । नहि काहु कीन्हो नहि वाको नाम , ना रूपि सरूपि ना गामें ना ठाम । भया तो भया येह समस्तो पसार , सकल में बसे सोइ आपि अपार । कहि सिख सकल मे बसे कवनि भांति , सुर नर असुर मुनि जिया जंतु पाति । ज्ञानी बिमल गुरु कहो सिख सना , जुगे जुग कहत सभ साधु जना । जैसे अग्नि काठ अव दुध घोव , ऐसे सकल मे बसे जिय सोव । जैसे पुहुप बास कुंभि ससि , धरती सजल अव सुरति आरसी ।। कहे सिख अधीने चरन चित लाए , कवन जीव ते सीव पावे लखाए । कहो गुरु गोबिन्दे सुनो सिख

सरूपो अवर कोउ न जान। सो बेगर प्रालब्ध पावे न कोए,
जतन जुक्ति करि की नवो खंड जोए। जो सतगुरु मिले तो
मिटे उच नीच, तव बोह पावे काया कोट बीच। सादि
विखादि विवादि अनेक, पुरा भेदि मिले कोटि मे गोटी एक।
बाहर फिरे दुढते द्वार द्वार, भवन में कवन सो करे ना
विचार। बहुरि सिख सनिपि चरन सेवता, कहो गुरु
सकल देवतन्ह देवता। तोहारे चरन आदि अंत गहो; हमारे
भवन भेद हम से कहो। कवन जुक्ति से भव हमारो काया,
काहा सो बसे आपु आतम रया। सतगुर कहे जुक्ति कीन्हो
दुइ, माता पिता के संजोगी भइ। तगुन करि तनु पायो
प्रसंग, येकीस सुहि अहुठ हाथ अंग। बनो भितरे बाहरे
दसो द्वार, काहालो कहि जे काया को पसार। काया में
बसे ब्रम्हा बिष्णु महेस, सकल संत जन जानि भाखी संदेस।
कहि कवन पारे काया भवन भेद, चहु जुग पुकारे कहे चारो
बेद। काया में कवल सार सपुट रहा, सो ताहि कवल में
भंवर चीय रहा। कहे सिख महाराज मेटो दुखा, कवन
जुक्ति करि के मिले मानुखा। गुरु मोहि दिजे सो मारग
बताये, जवन जुक्ति सो मन भवन मे समाये। कहे गुरु
सुनो सिख बिकट सो बाट, माहावीर बांके लगे घाट घाट।
माया मोह हंकार बीसना अजीत, लगी काम क्रोधा को
निंद्रा सहित। दंभे डंभ अभिमान अव राग दोख, रजोगुन
तमोगुन सतोगुन बिसेख। प्रथम सोस आपन धरे को उतार,

सो पीछे धरे पशु भवन के दुआर। गुरु को बचन सीख संपुरन किआ, बंकि तबहि हाथ अपनो लिआ। आपाने अपंन सिर उतारन चहो, गुरु दवरि कै हाथ हाथे गहो। बहुरि एक समैआ भवो जब एकांत, ताहो भेय दिढ़ावो सुनावो सुमंत। बैठे गुरु सिख दुवो आस पास, बुझावो सुझावो मेटावो उदास। साची लगन जानि अस्तुति करो, जो ऐसी करो तो मिलेगो हरो। बिना साहसे सिधि मिलेना पुत, घनो लोग बतावे बनावे बहुत। चिन्ता कौन चित कवन फल चहो। संसै तोहारो सो हम से कहो। दशा के दिनानाथ जिजे निसंक। कवन जुक्ति जीते पते बोर बंक। कहे गुरु सुनो सिख सरवन चित लाए। कहो बोर बांके जितन की उपाए। गहे सील संतोख धोखा मेटाए। छिमा धिरज धारि, सहज संग लाए। दशा साच सुक्षत अवर दीनता। सुनो सिख सनेही संपुरन मता। भक्त को सनेही जक्त को न आस। माहाभोर वाके सभि ता को दास। बहुरि सीख अरदास ऐसो कहो। जहा ते बचन उचरै सो सहो। संसै बढ़त है हमारे मते। केते दिन अवधि साधना साध ते। केतेक दिन हमारे जीवन को प्रवान। सो कहिए क्रपा जुक्ति करुना निधान। घनो जीवनो आशु पावो दिढ़ाए। अवहि ते करो साधने को उपाए। न डोलो न बोलो न आवो न जाउ॥ ना जिवे का हरख ना मरने डेराउ। थोरा जिवन बीच कैसे साधो। ऐसो माहाधन कैसे लाधो। सो कहिए क्रपा कै जो

संसै मेटाये । जवन जुक्ति तें कवल संपुट छुटाए । कांहां होए काया कोट में जाइए । कांहा होए अलोपि दरस पाइए । तबै गुरु क्रपा कै कहो एक ध्यान । बतायो जांहां द्वार तिलक को प्रवान । ताला खुलो जोति किन्हो प्रगास । जाहा सो परो द्रष्ट धरती अकास । बाहर विराजो घनो रंग फुल । चलो भवन भीतर जांहां सबै सुल । सु पैठो सुखन उरध को चढो । जाहा जोति ज्वाला बरंबर बढो । झलकै झलाझल झिलिमिलि आकास । स्रवे धार अम्रित कमल हंस प्रगास । गरजि सघन घन अनाहद निसान । सुनतै थकित होय ताहा पवन प्रान । तांहां तैं उतरि देखु उत्तर दिसा । जाहा होए भरत आपु अपनी निसा । तांहां होय हरखि हेर ह्रदै मझारि । औगुन तैं रहित है परम तंतु सार । निरखि निराकार निरमल सरूप । तांहां है अरध एक मूरत अनुप । सुछम सरूपी सदा सिव बाला । माथा छत्र जाको सघन होय फैला । एहि पंथ को पंथ सिरथि काहि । जो देखि परेगो करैगो सही । सुनतै स्रवन सिख के ह्रदय भव आनन्द । मिटानो तौमिरि जनु उगो आनि चन्द । कहै सिख सुनो गुरु महाको कहो । करो जुक्ति ऐसी जांहां थिर बहो । प्रगट पंच तिरथि महोदधि आपार । कहो पंथ ऐसो जो लागै ना बार । माहाराज पारस सौ मैं लोहा कठोर । लीजै करि कनक नेकु लागी ना वार । तु चंदन मलै गिरि को मैं पावर पलास । क्रपा कै पवन से लीजै करि सुवास । तु श्रीगि.

परम गुरु हो मैं कीर पतंग। दया कै करो आपनो रुप रंग। गुन हिनता देखि किन्हो पभाव। तु मुदो नैन नेकु सहजी समाव। तबहि गुरु किवो कछु अजुगो उपाय। सो जानै जनैआ वो कहा कहि जाय। बिना द्वार दोन्हो भवन मैं चलाय। माहाअंधेर आंखे रहे सभ लजाए। बिना ले जो सीढ़ी झरोखे चढ़ाव। किवो पार भवजल न बेरा न नाव। पहुचे तांहां जाय गुरु की दया। जांहां है अमर छछ सीतल छया। अस्थिर अभैलोक आनन्द धाम। परसी अलोपि दरसतहि ठाम। जो गआ सो गआ ताहि देस। जाहां ना जरा मरन का परे कलेस। बहुरि नहि आवा गवन न सोगा संताप। नहि सरग नरका नहि पुन्य पाप। नहि काल काला नहि धर्म राउ। नहि मुक्ति कविलास बैकुंठ चाउ। नहि कर्म धर्मा नहि बेद पुरान। नहि जोग जप तन नहि ग्यान ध्यान। अग्नि पवन पानी न धरती अकास। नहि कर सामि नहि ठवर दास। निपजो जाहां सो ताहां फिरि समान। भयो एक एकी न दुजो निसान। जोगी करे जोग ऐसो बिचार। भोगी सोइ भोग ऐसो भंडार। भक्ता सोइ जो भक्ति भेद जान। पंडित सोइ जानु ऐसी पुरान। ग्यानी सोइ ग्यान बिग्यान जान सुरा रचो भवन भीतर मैदान। तपसा रहे तंतु सो तंतु लाए। तीरथ सोइ तिरथे को नहाए। धन धन गुरु सिख गुहि कही। धन सो आरे जो शब्द को सही। कारे जो सही तब सरे सर्ब काम। सकल धर्म पर नेम जपो राम राम।

पुरा सोइ जो करै शब्द पुरा परगास । धरनी जन वाहै दास दासन्हि दास । अमृत वाथा एक सब शब्द एक। धरनी सोइ ज्ञानी करै जो बिबेक ॥ एता गुरु गुष्टि संपुरन ।

मंत्रावली लीला ।

करता करै सो नाहि टरै। बाद बिबाद कोउ मति करै। होनिहार जब करता होइ । चहु दिसि से लेइ आवै ढोइ । जबलगि होति गिरही गिरहस्त । रूसुभि ना परै उदै अरु अस्त । एक दिन बनिहै ऐसी बात । तैसो कहो कहि नहि जात । गैबी मिलो अवचक आइ । सोवत लीन्हो आइ जगाइ । कीन्हो कृपा कै प्रमोध । जैसे भयो मनहि को बोध। प्रगटो भली गहि लो भाग । उर उपजो सहजे अनुराग। बिसरो सकलो लोकाचार। नाता छुटो कुल परिवार। घायल मृगा चहु दिस धाय। तनको भै गय सोइ सुभाय। भुखन भवन भावै नाहि । रहि हो मवन मनहि माही । दुरमति गइ दुरि पराइ । दाया रही हृदए समाइ । संघति साधु वो संत सोहाए । गावन लागे बहुत उपाए। दरसन देत लगे सभ साधु । सहजहि मेटो सब अपराधु । श्री गोबिन्द गति कवन जान । देखत भयो आन की आन । सकले साधु भए दैयाल । जिअरा भयो बहुत खुसिहाल । काहु दियो है तुलसी माल। काहु तिलक दिन्हो भाल। काहु स्रवन स्रवनि दिन्ह। काहु दया करि दीन्ह कोपिन्ह। काहु धरो है टोपी माथ। काहु दियो सुमिरनि हाथ।

कोउ जनमे खला पछिराउ । चोला किवो काहु पसाउ ।
काहु दिवो निखंडि भोरी । काहु आरबंद सधारी ।
काहु दिवो उडानी जसो । अपने हाथे कमर कसो ।
काहु दिवो मोतंगा लाये । पटुआ दिवो काहु बनाये ।
काहु दिन्हो सुद्र दान । चकमक पाथर करि मन मान ।
काहु दिवो है फुला माल । काहु सेलिइ दिवो रसाल ।
कुबरी फहुरो दिन्हो जानि । काहु मोरपंख बखानि ।
काहु संख दिवो मगाये । मुरली आनि काहु चढ़ाये ।
कहता टोपी गुदरा ज्ञान । काहु दिवो धनी को ध्यान ।
काहु भेद कहो अलोपी । काहु भगरा दीन्हो रोपी ।
सुनि सुनि सुखिआ होत सरीर । सभ कोउ कहने लागु फकीर ।
हरि जन राहर मे तब जाही । दावा काहु केतो नाही ।
निरदाये जो दावा करे । अपनो आगि आपु जरि मरे ।
मंत्रा लिवो नहि चोराये । बल सो लिवो नाहि छिनाये ।
किन्ही संत जना बकसीस । जिन्ह को दिन्ही तन मन सीस ।
मति कोइ भगरि मरे बेकाम । सभ को ग्रब्द है रामे राम ।
बरि बरि लुगावे कवन । दालि डारि दिन्हो लोन ।
साँचा होय सोइ पतिआये । भुठा फिरि फिरि भटका खाये ।
बन्दी गुरु बिनोदा नन्द । जिन्ह के दरस मिटो दुख दुन्द ।
दासन दास धरनी दास । धरनेस्वर चरन को आस ।
एता मंत्रावलो चित दै पढ़े । अवसि भक्ति तासु उर बढ़े ।

एता मंत्रावली लीला संपुरन ।

हारावली लीला ।

करता राम नाम निरमल पद संतन्हि प्रान पियारा ।
करि डंडवत जोरि कर निस दिन प्रनमित बारम्बारा ।
चारो जुग है भक्ति अखण्डित आदि अंत मध्य लागी ।
कलिजुग छाप तिलक अरु माला प्रगट भये वैरागी ।
ब्रह्म पावीत्र माधवा चारज आदि संप्रदा चारी ।
रामानन्द विष्णु स्वामी अव निमानुज भारी । चारी घर को घनो आखाडो द्वारा बहुत दिढानी । इन्ह को नाम सुनी भाइ संतो कहो जहां लगि जानी । अनन्ता नन्द कबिर सुखसुरा पीपा जी को द्वारा । अग्र कील को भयो अनुग्रह जा को बडी पसारा । खोजी जंगी विरमा त्यागि टेवाकर हरि प्यारा। अनुभि नन्द अभे मुरारी कलि गोरख अवतारा । प्रसराम पुरन बैराटी लाहाटीला जानी । कालु साभा नाभा मैना बबरा धमंडी ग्यानी । जनक घी हरि दास गोसाइ नाम देव गुन गाये । राधा बल्लभ बीठल गोकुल निरंजन पद पाये । धरमीदास धरी सत संगति हारावली सुगाइ । जाको जैसो जगदीस बनाइ ताको तैसो बनिआइ।

इतम हारावली लीला संपुरन ।

अंत समैया ।

खेती बारी कारज न लावे । बैरागी को भोजन पावे ।
अंत समै जो काया छाडे । नहि से जाहि नहि से गाढे ।

करै ना मंदर मछावर कपाम । कि जल कि मन करि समरपन ।
सुध न सुध ना पिछला काम । धरमी धम बैरागी राम ।
एता मांत समैया संपुरन ।

धाम खेत्र ।

इष्ट कहि जै श्री रघुनाथ । छेत्र अजोध्या सदा सनाथ ।
चित्रकुट जानौ राम साला । धाम रामेस्वर प्रगटि काला ।
कुटि पंच बटी गोदावरी । मंत्र राम तारक ले उर धरी ।
एता जो गुरु द्वारे पावे । रामा नन्दी रामहि भावे ।
एता धाम खेत्र लीला संपुरन ।

पहाड़ा ।

येका एक मिले गुरु पुरा मूल मंत्र तब पावे । दुकवा साधु की संगती सुभे मन प्रतीति बढ़ावे । दुदुआ दुइ तजै जो दोविधा रजगुन तमगुन त्यागी । सतगुन मारग उरध निरखे तब सोइ उठि जागी । तीआ तीनि त्रिवेनि सगम सा निरखे जन जाना । अजपा जाप जपै अभिअंतर उरध कमल धरि ध्याना । चौके चारि चतुर जन सोइ चौथे पद को लागी । चढ़ि कै इड़पिंगि छार्से सुन चित अनुभो अनुरागी । पचये पांच पांच बसि करि कै मांत हिये ठहरावे । इड़ला पिङ्गला सुखमन सोधै गगन मंडल मठ छावे । छवे छव चक्र जो छेदे सुन भवन मन लावे । खिलि सीत कमल काया प्रविषे छाए तब चंदा दरसावे । सतये

सात सहज धुनि उपजै सुनि सुनि आनन्द बाढ़ै । सहजे दीन देयाल दया करि बुड़त भवजल काढ़ै । अठये आठ आकासहि निरखो दृष्टि अलोकन होइ । बाहर भीतर सर्ब निरंतर अंतर रहे ना कोइ । नवा नव भौ नेह निरंतर दह दिस प्रगटै जोति । अमृत बरिसे दामिन दरिसै निझरे झरे मनि मोति । दहाइ दस देह पाइ के जिन्ह पढि एक पहारा । धरनीदास तासु पद बंदै अहनिस दिन बारमबारा ।

एता पहाड़ा संपुरन ।

नवो नाथ ।

आदिहि आदि नाथ अपार । दुजै उदै नाथ उजिआर । तिजे प्रान नाथ प्रन धारी । चौथे आपन नाथ अधिकारी । पचए हँरि नाथहि जानो । छठए अचंभी नाथ बखानो । सतए भए नाथ चौरंगी । अठए मछिन्द्रा नाथ सुसंगी । नौवे गोरख नाथ दरवेश । कर जोरि कौजे परवेस । नवो नाथ संपुरन ।

पोथी बिष्णु पद राग भैरोवी ।

निशु बसन है पंथ पंथिक काहा करत अबेरो । देव सलंबित पंथु दुरि मति चेतु चितहि सबेरो । तोरि कुल परिवार नाता घर को धंधा त्यागि । आरे आरे मन आलसी जड़ अजहु देखु न जागि । संग करि ले संत जन को कपट कापर धोइ । बल तो सागर उरध मगु चढु जरा मरन न होइ । जिन्ह गहो

जगदीस को भ्रत सोइ जन मे सुरा । धरनीदास बिश्वास सति भंव जिन्ह मिले गुरु पुरा ॥ १ ॥ आपु घर की सुधि न आवो आपु फिरत भुलाना । आपु ते परिचे भइ तब आपुहि ठहराना । काहि करिए अपनो हित काहि करिए बेगाना । काहि से कछु जाचि लीजे काहि दीजै दाना । काहि कहिए काहि सुनिए काहि लीजे ध्याना । गावते पढ़ते बन नहि पुजते कछु आना । कहां रहिये कहां जाइये काहि धरिये ध्याना । दास धरनी मगन होय रहु निरखि गगन निसाना ॥ २ ॥

राग गंधार ।

जुग जुग संतन्ह की बलिहारी । जो प्रभु अलख असुरति अबिगति तासु भजन निरुआरी । मन वच कर्म जग जीवन को भ्रत जीवन्ह को उपकारी । संतत सांच कही सबहि ले सुत पितु भुप भिखारी । ढोलिया ढोलन गरजो मारि घिघी घिघी कहत पुकारी । गोधन जुथ पार करबे को पिटत पीठि पहारी । एहि जग हरि भगता पति बरता अवर बसे बेबिचारी । धरनी धुग जीवन है तिन्ह को जिन्ह हरि नाम बिसारी ॥ २ ॥

जो जन भक्त बछल उपबासी । ता को भवन भयो उजिआरी प्रगटि जोति दिवासी । लोक लाज कुल काज बिसारि सार ग्रन्द को गासी । तिन्ह को सुजस दसो दिस बाढ़ो बचन सबे करि हासी । हरि भ्रत सकल भक्त जन गहि गहि जम ते रहे मबुआसी । देह धरि परमारथ कारन अंत अभे पुर बासी ।

काम क्रोध चौसुना मद मिथ्या सहज भये बनबासी । संतत दीनदयाल दया निधि धरनी जन सुख रासी ॥ ४ ॥

राग बेलावर ।

है बिरले संसार में हरि रस मतवारे । सभ जीवन ते अवस्था भिन्न स्वाद बेचारे । कोउ माते धन सम्पदा कोउ हंस सब सारे । कोउ विद्या रस बस भये कोउ जोबन भारे । कोउ कोउ दान विधान ते कोउ नेम अचारे । कोउ परे काम की धाम मैं लोटे बिकारे । कोउ तपसी रथहि रते कोउ चाटकचारे । कोउ नाचे तन तारि कै भ्रम भेख सवारे । बहुत बहुत बिस्वास के बहुते पचिहारे । कह धरनी सत गुरु बिना कोइ न तारे ॥ ५ ॥ राम दया तब जानिए अपनो जब पावे । ता घट नट प्रगट भये पट सहज उड़ावे । सतगुन मारग पग धरै मन उरध चढ़ावै । मगन रहै सुरती सना अनुभव पद भावै । संतोखी सीतल दया मुख झूठ ना आवै । निडर फिरै राजा प्रजा दुबिधा ना जनावै । प्रेम अमल माती रहै घूम्मी ना जगावै । ऐसे दरस के कारनै धरनी जन धावै ॥ ६ ॥ राम बसे घट भितरे भुले मति कोइ । बाहि हजार प्रकार मे असुझे नर लोइ । जैव कोप कों जाको सुरे गंजा अटुरावे । तंतु लगावे ताहि को बाको छाड़ ना आवे । हंस पियासा जो रहै जल अवर ना भावे । मानसरोवर ध्यान ते तन त्रिषा बुझावे । जब पंथा बाहर धरे कमठी जल धावे । सुरत सनेही ताहि

को आपै चलि आवै । जौ गुरु तत्व लखावहू देखा चित लावै । सहज कृपा करि हरि मिले धरनीदास गावै ॥ ७ ॥ अब मन मानो आपना सबहि सच पावो । पांच छोति पावो दिसा एक भवन बझावो । इन्द्री आकृति प्रति दिना अति सुन्दर नारी । थाकि परी भइ थोथरि बल हीन बिचारी । जिभ्या अरति जोरावरी धन कै बड़ वानी । बैठि रही पट घोट दै सकुचहि सकुचानी । चिकिनि विरलै रस चाख ना बसी व्याकुलि नासा । सो घिसआ विखसि लगी सुधि मधि नासा । नैनहि चैन होता नहि बन फिरत भुलानो । सो नैना परे परबस बरबस ललचानो । स्वान समान स्रवन होते बहुते घिहो जाही । दाया परे सत नामै क्री कहि डोलत जाही जा को तन मन तिन्ह लियो सबै उठि भागो । धरनी जग धंधा छूटि प्रभु सो लव लागि ॥ ८ ॥ राम भजन कवतुक नहि सूरतै तैहि होइ । कुर कुबुधि कादरा कर सकै न कोइ । दिन दस बोदर कैं भरे उठि राम रटोइ । चित खोटा टोटा भयो फिरि पंथ बिगोइ । देखा देखि जौरि के पद साखी कथोइ । जा मुख काहै करै नहि कपटि कमी सोइ । भेख चित्रनपट जो कियो पटक पटन धोइ । अभिअंतर मन धन बसै किमि क्रम कटोइ । माया मोह बिसारिवो ममिता मद खोइ । धरनी सो निरमल भये कलि बंधन छोइ ॥ ९ ॥ मेरो तउ राम को नाम है का मांगहु तु पैया । कौड़ी गाठि न बांधिए नहि बरदल देया । राति बिआरि पाइए दिन देत कलेवा । देख की छाजन देत हो सबजी

सहजैवा । जासु भरोसे छाँड़िवो सभ देइदेवा । धरनी सुत मिखव विसारी कै धरि संत की सेवा । सरधा होय तबलो कछु दिन जात चलैया । धरनी अधर काहा कहौं मति थोरि कहैवा ॥ १० ॥ ग्यान प्रकाल संसार मे साधु सेवकाइ । कोउ तो केसहु कहै मोहि निश्चै आइ । साधु हमारि मूल है गुरु साधु सहाइ । मातु पिता पुनि साधु है साध जन भाइ । साधु अछै धन सम्पदा कबहिं न खुटाइ । साधु की संगति पाइ के सुख स्वाद बढ़ाइ । साधु हमारे बोढना अरु साधु बिछाइ । साधु हमारे बालका सन मध्य सगाइ । साधु की बानी साच है साधु पतिआइ । धरनी मनबच कर्मना करि साधु दोहाइ ॥ ११ ॥ गुरहु दया गुर देवता मेरो मन माना । कोटि कला अब कोउ करै मोंगे नहि आना । अरध उरध अभिअंतरे जाहां अजपा जाप । ताहां मन पवन बिलंब ना जाहां पुंन्य न पाप । त्रिवेनी संगम जाहां मुनि मानस सोभा । दसये द्वारे देखिए कहि जात न सोभा । मूल मन्त्र को मूल है बिनु मूल बिराजा । पांच प्रधान जाहां बसै अविचल एक राजा । धन जीवन जग ताहि को जो अधर अधारी । धरनी मनबच कर्मना बरनन्ह बलिहारी ॥ १२ ॥ मोहि कछु नाहि बसाये कोउ केसहु कहि जाउरी । झांकि झरोखे रावला मन मोहन रूप देखाउरी । दृष्टि परी परबस परो घर घरहु न मोहि सोहाये । जब जलचर जल में परी सुख पायो सहज समाये । निगलत नहि निर निर भइ [illegible] उगलि न जायेरी । जब पंछी बन बैठिबो अपनो

तन मन ठहरायेरी । नर को भेद न भेदिवो पर अवचक लागी आयें । * * * जाहि परी दुखआपनो सो जानै परपीर । धरनी कहत सुनो नहि काहु बांझ को छाती छीर ॥ १३ ॥ तु पति राखु पितम्बर राइ । प्रभु तोहि सम अवर नहि कोइ । सब बंधन केवार है एक तु बचन के पार । तीनि लोक बोदर धरे कछु तोहि न व्यापै भार । आहर है सुरति धनी ताहा मो मन नहि ठहराये । आयत भवन के भितरे जाहो अवख धजा फहराये । ता के मातु पिता नहि नारि सुता सुत भाइ । देह धरैं बिनसे सबै ततु तव जुग जुग नहि बिनसाइ । धरनी जन जानि नहि सभ संत कहो सतिभाउ । मोहि भरोसो ताहि को जाको बेद बिमल जस गाउ ॥ १४ ॥

राग रामकली ।

जग में कायस्थ जाति हमारी । पायो माला तिलक होशाला परमारथ पोहदारी । कागद जहां लगि कर्म कमायो सोधि ज्ञान सुधारी । गुरु के शब्द अदालत पकरी अनभय बीरवा उतारी । मन मसिहानि सांच की स्याही सुरति सीफ़ भरि डारी । भर्म काटि करि कलम छुरी छमि तकि रसना पहत मारी । तबलक तनु दया की दफ़्दर संत कचहरी भारी । रैअत अंत शब्द को कोरा कुजो मार ना मारी । राम रतन को खरी खजाना धरो सो हृदये कोठारी । है कोइ परिखनहार विविकी बारमबार पुकारी । धरनी लाल बसात

आमाकी जमा खरच एहि पारी । प्रभु अपनी कर आगूण मेरी लिजे समुझि सुधारी ॥ १५ ॥ मन रे तु या बिधि काम कौथाइ। सुख संपति कबहु नहि छिजी दिन दिन बढ़त सवाइ। असबा आशा करी वोइदारी चित चिठ्ठा धस साधी । मनुषा मोतखम करि ले अस्थिर मूल मंत्र भव राधी । तनु की तिरिजा विरिज बुधि की कर ध्यान निरखि ठहराइ । हृदये हिसाब बुझि कर कौजे दखिअक देहु लगाइ। राम की नाम रटी निसबासर सुझि सो फरद बनाइ। अजपा जाप वारजा करिकै सर्व कर्म बिलगाइ । रैअत पांच पचीस बुझावो चरिहा को मरहे राजी । धरनी जमा खरच बिधि मिलि है की करि सभे गुमाजी ॥ १६ ॥ बन्दे तब तेरी मुसलमानी । सुनति सब्द दरद की दाढ़ी बस्तु ना छुवे बिरानी । निअत सफा निमाज निरंतर तलब किते सबि सोइ ।. रोजा रोज हुनो श्राम जीव कोउ को न सताबति श्रोइ । सब्द अमुर सबगुर खसम है, दिल माह रमि है भाइ। चारी पीर मोरसिद जाहि के साखी कह अमनाइ। लायक करि ले पांच जमावर दिजे पीर अंदुरी । धरनी साच सखुन आछु ताससा हरदम बहिस्त हजुरी ॥ १७ ॥ भाइ जिभ आलस ना जाइ । राम रटन को करत निठुराइ कुदि चले कुचराइ। बरन ना चले सुपंथ धर्म पगु दुर अपंथ चले धाराइ। देन बार कर दिन दुवरी लेत करै हथियाइ । नैना रूप सरूप सनेही नाद स्रवन लुबुधाइ । नासा चाहै बास लिखे को इन्द्री नारि पराइ। संत चरन के सीस नवै नहि ऊपर अधिक नरनाइ।

मन पसु घेरि घेरि एक बांधौ भागि छांद तुराइ । काबै काही कहे को मानै अंग अंग अवटाइ । धरनी दासा संत पुनि जब जब हरि होहि सहाइ ॥ १८ ॥

अलहिआ बेलावर ।

तब कैसे करिहौ राम भजनु । अबहि करौ जब कछु करि जानौ अवसर कौ उचकिच मिलैगो तनु । अंत समौ कैसे सीस उटैहौ बोलो न ऐहै दसन रसनु । थकित नाटिका नैन स्रवन बल बिकल सकल अंग नख सिख सनु । वोझा बैद सगुनिआ पंडित डोलत आगम द्वार भवनु । मातु पिता परिवार बिलखि मन तोरि लिहै तन सभ अभरनु । बार बार गुनि गुनि पछतैहौ परबस परि है तन मन धनु । धरनी कहत सुनौ नर प्रानी बेगि भजो हरि चरन सरनु ॥ १९ ॥ भलो भइ मेरो भर्म भुलानो । बहिजात तब भवसागर महिआ जीवन पावत ठवर ठेकानो । फांसो लोक कया की छुटि टुटि डोरी सकुचसिहि स्यानो । मैटि झिमिरो घंटि घट सेती प्रगटि प्रीति जगबन्धु जानो । एहु मन मन्द जांहां तांहां तो रहइ डोलत स्वान समानो । जब ते परो संत की संघति दन्द दुरो आनन्द सदानो । जा कारन दहदिस धपि धावो सो अपने ह्रदए ठहरानो । धरनी करनी सकै नहि सोभा तन मन प्रान भयो गलतानो ॥ २० ॥ पिअहु तमाकु अमल आपार । मानुख जन्म न पिअहु पिआरे पुनि कहां पैहौ दुजा बार । मन राजा पसरा गैसाक पांच

तनु ताहां खिदमतगार । हुका घट सरधा जल निरमल बाहर भीतर प्रेम पखार । बुधि कौला जोला अभिअंतर तापर कासु चित चिलम करार । चिसुना तारि तमाकु भरि ले जिव दया घस तपत अंगार । नैचुरि ज्ञान सुजान सुथिर करि नर नारायन अधर अधार । खैंचो सहज परम सुख पैहो सांच शब्द जब करिहो धुकार । तन मे तनिक भरम जनि मानो साधु जना जाहां जुरहि दुआर । धरनी धरि ले ध्यान धनी को दूर करु दुरमत धुआ सार ॥ २१ ॥ पिअहु भर्म तजि भंग सुरंग । जाके पिअत परमपद पैहो भेद न रहत ना एको पंग । कुंडि काया कर की पाती ज्ञान मो ताहर धरी सुधर्म । प्रेम मन्दिर मो आसन करि ले जोरि जमाति साधु जन संग । काम कपुर घालो कर घोटो मन को लाचो मेलो लवंग । निरमल जल दया घट पुरन साफी पांच ततु सर भंग । अधर अधार ताहां स्रवत सुधारस लुबुधे मुनि मन मलये भुअंग । निरखत अमल चर्के नख सिख लो निसियासर मन उठत तरंग । गुरुगम एक पिआला पावे अमल ना उतरे जुग प्रसंग । धरनी धन अवतार ताहि को प्रति दिन गङ्गा अन्हा येह गंग ॥ २२ ॥ एक अल्लाहकी मैं कुरबानी । दिल खोजि मेरा दिल जानी । तु मेरो साहिब मै तेरो बन्दा । तु मेरो सभ हुक्म बह चन्दा । बार बार तुम कह सिरनावो । जानि जरूर तु मे नीहरावो । तुमहि हमारे मक्का मदीना । तुमहि रोजा सजुम रोजीना । तुमहि कोरान खतम खतमाना । तु तसबी अरु दीन इमाना ।

म आगे कछू खूब तव दरसा । बेगर तोहि जहान जाहर था ॥
देहु दिदार दिलासा एही । ना तरु जीव विनसि वरु देही ॥
कादिर तुमहि कदर को जाना । मैं हिन्दू किधौ मुसलमाना ॥
धरनी दास खड़े दरवाजा । सब क्या तुमहि गरीब नेवाजा ॥ २३ ॥
अजहु भजो हरि की सरनाई । दिन दिन काल अवध नियराई ।
जब नहि ब्रह्म विष्णु त्रिपुरारी । स्वर्ग मर्त्त पाताल दुआरी ।
सुरे नर नाग दसो अवतारा । तब कि कहाँ हुतो संसारा ।
उतपति एक शब्द ते भेउ । त्रिगुन त्रिदेव तिन्ह पुर ठेउ ॥
तिन्ह ते भएउ सकल विस्तारा । अपुन पार अवर सब वारा ॥
भुअन चतुरदस नाव बनाई । एकहि खुटे सबहि खोटाई ॥
सतगुरु मिलि तो भेद लखावै । लोक भर्म तजि तजि चित लावै ॥
धरनी दास कहो मुख बानी । आपन मूल खोजहु नर प्रानी ॥
तहवा राखहु मन ठहराई । पढ़ गुन काहु पार न पाई ॥ २४ ॥
कहत बने नहि अकथ कहानी । सो समुझे विरलै गुरु ज्ञानी ॥
साखा अनेक अपूर्व गाछा । ता पर एक अमिय फल पाछा ।
अति दिरघ अस सहजहि छोटा । निपटहि झीन बहुत मोटा ।
सो नहि मिलत पढ़े पंडिताई । अब नहि काव्य कथा गुन गाई ।
सो नहि मिलत धरा भरि धाए । अवनहि सहन भंडार लुटाए ।
बाम दहिन पंथ परिहरि भाई । चढ़ो मध्य मगु सनमुख धाई ।
कठिन जतन गुरदेव लखाई । सो पुनि पुनि कहो सतु चितलाई ।
प्रेम की डोरी गहो मेरो इयारा । ज्ञान दिया घर करु
उजियारा । त्रिकुटि संगम जोलै मैको । धरनी सहज

दरस तब पैहो ॥ २५ ॥ जो हम हैं सो हरि जिव जाने । को बिरले हरि जन पहिचाने । नहि हम साहेब नहि हम सेवा । नहि हम भुतना मानुष देवा । नहि हम गुरु गोसाइ चेला । नहि संत संगति नहि अकेला । हिन्दु तुरुक माह हम नाही । नहि बैराग न जोग बमाहीं । कायर सुर पुरुष नहि नारी । पंडित मुरख न भुप भिखारी । नहि हम व्याधा बधिक अगाधी । नहि अपराधी नहि धरमाधी । नहि हम आवहि नहि हम जाही । जाति अजाति बरन कुल नाही । निपट निरंतर निरखि तमासा । आपा मेटि अपा नहि नासा । धरनी अब कछु कहत ना आवे । हम को कहे जाहि जस भावे ॥ २६ ॥ मन बचकर्म मेरो तुमहि अधारा । भवसागर जल अगम अपारा । तुहि मेरो देव पित्र तिरथ नहान । ब्रत सुमिरन पद पुजा पुरान । तुहि कविलास तुहि बैकुंठ । तुहि धन धन धन अवर धन भूठ । जप तप सगुन सुदिन सुभ घरी । अवखद बदद नहि तोहि परिहरी । अंध टेक कनक मनि छपिनि धना । धरनी के आदि अंत एक जना ॥ २७ ॥

चरखा के शब्द ।

ज्ञान मति धनि चरखा कातु । अवर उदम के रंग ना रातु । कर्म काठ के चरखा गढ़ाउ । चंचलता ममरख पहिराउ । जीव जिवरि बरि बांधु अवायह । सहज सुरति कह मोथ की

आवहु । टेकुआ टेक हृदए धरु नारि । कर गहि पिउकी प्रीति संभारि । सोहं सोहं सुजस सुढार । उलटि परे ताको एह मत सार । जन्म जन्म को मेटिहि कलेस । धरनी दास कहत उपदेस ॥ २८ ॥ भले तुम भले तुम भलेहो देआला । जिन्ह की कृपा ते कलिकालउ कृपाला । भलि तेरि सुरति मुरति भलि नाउ । बार बार बारवो वारन मे जाउ । सभ घट पुरन संपुरन कला । जित दे खिलो तत भलहि भला । धरनी जप तप मन वचकर्मना । मेटहु जरा मरन देहु सरना ॥ २९ ॥ चलु मन कर संतन्ह पवधारी । बार बार का गुनत अनारी । दरस परस दृआ सति भाउ । कर्म भर्म सभ आगि जराउ । ले सरधा जल चरन खटाक । लोक लाज को चादर फाक । भवसागर सत संगति नाउ । पवरि पवरि कोउ पार न पाउ । राम नाम निज कहु करुआरा । धरनी सोइ उतरि भव पारा ॥ ३० ॥ मैं निरगुनिआ गुन नहि जाना । एक धनी के हाथ बिकाना । सोइ प्रभु पका मै अति काचा । मै झुठा मेरा साहेब साचा । मै ओछा मेरा साहेब पूरा । मै कायर मेरा साहेब सूरा । मै मुरख मति सो प्रभु ज्ञाता । मै कृपिनि मेरो साहेब दाता । धरनी मन मानो एक ठाउ । सो प्रभु जीवो मै मरिजाउ ॥ ३१ ॥ सो पुर गुर मोहि देइ देखाइ । कबहु दृआ जनि धरहु दुराइ । ध्रुव प्रहलाद आदि तव माया । नारदादि सुखदेव सुख पाया । रामानन्द नाम देव जैदेउ । गोरख ब्यास कबीर धनेउ ।

जाहां तुलसी रैदास सदनाउ । मीरा पीपा कुबा ढाउ । दादु नानिक सैना नाउ । सन्त अनन्त बसे एक ठाउ । धरनी की मन मान लवाहि गाउ ॥ ३२ ॥ आउ तोहि पंडित सुमति को चाउ । अजाहु सो हरि को दास कहाउ । पढ़ि पढ़ि गुनि गुनि पुनि पुनि आउ । कथि कथि थकि थकि पार न पाउ । द्रिढ़ करि माला तिलक दिढ़ाउ । सभ जीवन पर दया जनाउ । त्रिसना तामस तोरि लहाउ । हिये हरखित गोबिन्द गुन गाउ । भवसागर संत संगति नाउ । धरनी बहुरि ना ऐसो दाउ ॥ ३३ ॥ छुग जीवन जो छोड़ो राम । राम भजन संपुरन काम । दुख सुख संपति बिपति अधार । अदतम जीत क्षित पार उआर । धरती उलटि पलटि जब जाये । तब ना बिसारो त्रिभुअन राये । अथवा सरग टुटि जब परै । तबहु ना हरि व्रत जीव सो टरै । जो जीव जाय देह हाथ छेह । तब ना तेजो निजु राम सनेह । मन बचकर्म गहु धरनी दास । संत चरन जन को बिस्वास ॥ ३४ ॥ दुनि महि भाइ बहुत खोदाइ । ऐ हाजिर पहिचानि न जाइ । ढुंढो अपना पीछे अजुद्दा । बैठा मालिक महल मजुदा । जाको साहिब देत वफ़ीका । चारि पिआला करु तहकीका । महरम कोइ मिले जो हुआर । पल मे पहुचावै दरबार । धरनी बखत मिलंदी सोइ । जाको नजरि तमासा होइ ॥ ३५ ॥ मैं जानी सभ रामा नन्दी । बाबा निन्दी काको बन्दी । सन्यासी प्रगटे दस नाम । दस साखा जरि एकै ठाम । कहे बैराग संप्रदा चारी ।

एकै घर को चारि दुआरी । पंथी चलत पंथ को नाउ ।
पंथ अनेक एक है गाउ । अवर कहां लगि कहौं घनेरी ।
नदिआ एक घाट बहुतेरी । प्रभुता कारन सभ अरुझाना ।
प्रभु को मरम काउ काउ जाना । समिता मारि भजन करि लिजे ।
धरनी दोष काहु नहि दिजे ॥ २६ ॥ सोइ मोसलम है
मुसलमाना । जापर रहम करै रहिमाना । दरद को दाढ़ी
दिल बिच धरै । कुफुरा झुठ काटि दुरि करै । तन को तसबी
निअति निमाजा । रोजा करै बिराना काजा । मन मुरगा
औ अलि तकबीर । करइ कादुगी बोलता पीर । अन्दर बैठा
पढ़ै कोरान । धरनी दास तासु कुरबान ॥ २७ ॥ सो हिन्दु
हरि के मन भाव । हद परिहरि अनहद चित लाव । कामै
मर्म दुनो कान छेदाव । बिसुना तुलक नहि छुवै छुआय ।
प्रति दिन एकहि तिरथ नहाए । दुजो तीरथ मरै नहि धाए ।
पुजा करा आतमा जानौ । आथर पाथर आगि न पानी ।
अलख पुरुष अभिअंतर धाउ । धरनी परसै तिन्ह को पाउ ॥ २८ ॥
मेरे प्रभु तुमहि अवर नहि कोइ । बहुबिधि कहत सुनत
सब कोइ । ताहूरे बिसास दास मन मान । सुग जग भल
बकुल जा को बान । अवरन्ह ते होत मेरो काज न अकाज ।
छाड़ि कुल काज अब बिसारि लोक लाज । धरनी दास हारि
हारि भावै जीति । अब मनवचकर्म हृदए परतीति ॥ २९ ॥
हरि को दास कहा मुख खोलै । अभिअंतर जाके धुनि उपजै
बाहर काहे को बोलै । फूल कै फूल हुवास कै लागै । चढ़ि

गवो प्रेम चंडोलै । जैसे मधुप केतुकि कांटे बिध्यौन इत उत डोलै । निरमल झलक अखंडित निरखि सहज सुभावहि सोलै । सन्त असन्त भक्त जन जे तोहि यती ला धरि तवले । जब खोले तब वाही न बोले नाम अमोले । कि उचरै वाछु साधु की बानी निरसंका हरि होले । रजगुन तमगुन दुवो उति आगे सतगुन मारग डोले । धरनी जी जन एक मत जानो पढ़त न कलमत दोले ॥ ४० ॥ जबलगि परम संतु नहि जागे । तब लगि भर्म भुत नहि भाजे कर्म कीच लपटागे । सहस नाम कहि कहा भयो मन कोटि कहत न अघाने । भूले भर्म भागवत पढ़ि पुजत फिरत पखाने । का गिरिकंदर मन्दर माहे बांदे मुरिख निसाने । काहा जौ बरख हजार रहो तन अन्त बहुरि पछताने । दानी कबिस्वर सरस्वति अरु रंभा होउ भावै राने । प्रेम प्रतीति अमिय परिचै बिनु मिलै न पद निरबाने । मन बचकर्म न सदा निसिबासर दुजो आन न ध्याने । धरनी जन सतगुरु सिर उपर भक्त बछल भगवान ॥ ४१ ॥ जिन्ह जिन्ह रमिता रामहि गावो । जीवन मुक्ति महा जस बाढ़ो । अवरन्ह पार लावो । रमिता राम जपत जयदेवहि बिबिधि बेवान चढ़ावो । गोरख नाथ सनाथ भये जब रमिता दरशन पावो । रमिता राम निरखि निजु नैनन्हि नाम देव पयेज पुरावो । रमिता राम कबिर छापा भइ सब कलि भक्ति दिढ़ावो । रमिता राम चतुरभुज के चित मभिता तपतहि बोहावो । संत अनन्त देह धरि आवो हुलास हिन्ठहरावो । रमिता राम भक्त जन तारो

चारो जुग चलि आयो । धरनी दास दया संत गुरु की शरन
शरन गोहरायो ॥ ४२ ॥ भयो दिल दोस्त हमारा राजी ।
जाहि महल में बसे एक काजी । उन बरिसन खिस बढ़ावै ।
अरु कबहिनि झोटि मुंड़ावै । हज जाने की हाजत न होइ ।
काहुवे । खाय पिए नहि सोइ । जाके नहि पैराहन पागा । सो
तव सहज दिगम्बर नागा । जोइ जो हुकुम करै सो होइ ।
बेहुकुमि करै नहि कोइ । नहि पढ़त किताब कोराना । समझौ
नहि फिरत न दाना । नहि रोजा निमत निमाजा । सो तो
बड़ो गरीब नेवाजा । मन करहु बन्दगी ताहां । नहि पीर पैगंबर
जाहां । कह धरनी दास बेचारा । सो तो हिन्दु तुरुक तें
न्यारा ॥ ४३ ॥ मन करहु रे तु भजिलेहु पुरुष पुराना । जाते बहुरि
ना आवा जाना । सभ दृष्टि सकल जा को धावै । गुरु गम
बिरले जन पावै । निसियासर जिन्ह मन लाया । तिन्ह प्रगट
परम पद पाया । नहि मातु पिता परिवारा । नहि बन्धु सुता
सुत दारा । सै तो घट घट रहत समाना । भ्रम सोइ जो
ना कहु जाना । चारो जुग संतन्ह भाखी । सो तो वेद औ
तेवा साखी । प्रगटै जाके पुरन भागा । सो तो भैराग सौन
सोहागा । निकट निरंतर बासा । ताहां जगमग जोत प्रकाशा ।
धरनी जन दासन्हि दासा । करि बिसंभर बिस्वासा ॥ ४४ ॥
अब गरे परलि प्रेम रस फांसी । लोक सुजस कहो भावै
कहो हांसी । मनुआ मगन हरखि हिय मावै । तनु तहां
होलै जाहां प्रभु खावै । तन पन परबस बचन असाइ । समुझि

गा परत हृदय गहि आइ । फाँसी कसु परवरनि नहिं जाइ ।
जबै काहो जागु नहि पतिआइ । धरनी कांइ कांइ जन अनुरागी
तिनहि जानत जिन्ह के औव लागी ॥ ४५ ॥ अब थिनि की
पैठे आए । बिनु परिपंच परिस्रम थोरे बहुत पदारथ पाए ।
संसकार पुरबिल को प्रगटो संगत आनि जगाए । तुलसी कंठ
तिलक माथे धरि हरि को दास कहाए । मोह मया के बन्धन
टूटे संत सहर घर छावे । बिसरि बैर सकाल जीवन ते उर
अनुभव पद गाए । ब्रह्म अग्नि मे जारि बरि जिते जाह्मो कर्म
कमाए । बेद लोक ते तिनुका तारे शब्द निसान बजाए ।
धरनी पुलकि जहाँ गुरु अपनो स्वरूप मस्तका नाए ।
दीन दयाल कृपाल कृपानिधि बरगहि कंठ लगाए ॥ ४६ ॥
एक धनी धन मोरा हो । काहु के धन सोना रूपा काहु के
हाथी घोड़ा हो । काहु के मनि मानिक मोती एक
धनी धन मोरा हो । राजन हरै जरै न अग्नि ते कौनहु पाव
न चोरा हो । खरचत खात सिरात कबहि नहि घाट बाट
नहि छोरा हो । नहि संदूक नहि भुइ खनि गाड़ो नहि पट
बांधि मरोरा हो । नैन के बोझल पलकु न राखों सांझ
दिवस निसि भोरा हो । जब धन लै मनि सिकन चाहे तिनि
छाड़ि टकटोरा हो । कोइ बस्तु नहि बीचहि डोरी जो मोल
अउ मो थोरा हो । जा धन ते जन भए है धनी सकल बिलु
तुलसी किरोरा हो । सो धन धरनी सहज मे पायो केवल
संत गुरु के निहोरा हो ॥ ४७ ॥ कोटि उपाय करे जो कोइ

राम न छोड़ो भाइ । बेद लोक कि संक न मानो कवो कौ करो बड़ाइ । अद्भुत हिमन्त की खोजत खोजत मूल मरम, एक पाइ । अब मनबच कर्म ताहि तजो नहि रामै राम दोहाइ । एक ओर मेरो प्रान पियारा दुजि ओर दुनियाइ। सांचा नाता तन्हमन राता श्रुटि जगत समाइ । चंद सुरज आछा मनिम अगिनि बरदहु दिस उदित सोहाइ । मुकुता पाति झरे निसिबासर मुनि मन हंस लोभाइ । गगन दहल आसन अबिनासी प्रेम के डोरी लरिकाइ । धरनी कहत जन कइ कोइ जेहि गुरु जुक्ति बताइ ॥ ४८ ॥ चारो जुग सतुरानन गायो राम भजन बेवहारा । राम नाम के कहरि कहावत बहुत पतित अतु तारा । ब्राह्मन छत्री कोटि जुरै आछा प्रबल जाग पसारा । ताहा भइ भला सुपच महराजा प्रगट कुल खंडारा । कामी बामी सब पण्डित मिलि किए उपाधि उचारा । ताहा पुनि राम भक्ति महिमा धन धन रवि दास चमारा । नर हरि बिदुर जन्म नीचे कुल निकुल नेम अचारा । बेसा के औगुन बिसरायो किनो न बरन बिचारा । सेना नाइ सदन कसाइ भरो सुजस संसारा । ऐसो राम बिसारि अध नर बहत नरक जल धारा । अकुल कुलिन भक्त जन तारो काहाको करो शुमारा । धरनी दास दास दासनि को मेरा इआर को बारमबार पुकारा ॥ ४९ ॥

राग टोडी ।

अब मेरो इआर मिलो दिलजानो । छोय बबलोस करो मिहमानो ।

हृदया कमल बिच आसन सारो। लै सरधा जल चरन खटारो। चित की चंनन चरचि चढ़ावो। प्रीति को पंखे पवन डोलावो। भाव के भोजन परोसि जेवावो। जो उबरै सो जुठन पावो। धरनी इत उत फिरइ ना भोरे। सनमुख रहो दुवो कर जोरे ॥ ५० ॥ तब तन छोड़ स्वारथ मेरो। जब परिपंच ते जो बहुतेरो। सीस नवै निति साधु के आगे। पगु को रेनु लिलाटे लागे। स्रवन सुनैति साधु को बैना। हरि जन बदन बिलोकि नैना। रसना संत सुजस परगासा। परम सुबास सुंघे निति नासा। चरन चले संत संघति भाइ। कर करे के संत चरन सेवकाइ। इहइ जब हरि जन छिए लागी। धरनी जरा मरन भ्रम त्यागी ॥ ५१ ॥ राम रटो भाइ राम रटो रे। प्रानी ते जिन्ह पिंड सवारो मति मन ते उचो टोरो। इआ देहि को गरब न कीजे बिरिछ गहि टटकोरो। देख देखि अवसर जिति जैहै जब त्रिय सीस घटोरे। जीव काल को पुतरी कर डोरी कवतुक करत नटोरे। टुटे सूत्र चरित्र करै नहि जब चरम केर फटोरे। धरनी मुंड मुडाए काहा भवो साहा बढाए जटोरे ॥ ५२ ॥ निरमल नाम जपो अभिअंतर सर्म अनेग कटोरे कवन भवो जन के रखवारो। ब्रम्हादिक सनकादिक भाखी साखी निगम जुगेरो। हरिनाकस हरि जन दुख दिन्हो हति करि भक्त उबारो। रावन साधु सतावन लागे तब तुम सकल उजारो। वो रुकुमिनि व्रत राखि लियो है सिसुपाल बदन करि कारो। द्रोपत सुता

पति राखि बिपति मे जद्दपि पतितहु पति हारो। जाहां ताहां प्रगटि प्रभु की महिमा जाहां जाहां भक्त पुकारो। धरनी चरन सरन धरनी धर अब जनि मोहि बिसारो ॥ ५३ ॥ मन मानो कुल देव की पुजा चारि चउतरा घर भीतर बांधो जा घर अवर न दुजा। जीव दया की जाउरी राधो प्रेम को पीठा धारो। पाच घेटरु अन्ह कलपि चाढ़ावो तनु तपावन डारो। पाठो करो पराछित जीतो संत को बेसुर मारो। गहि तरुआरि शब्द सतगुर को सहजहि मारि उतारो। भाव भक्ति को करउ रसोइ संतन्हि चरन खटारो। धरनी दास बिस्वास ताहि को अब जीति भवे हारो ॥ ५४ ॥ अब मेरो पीव पिता मन माना। करिहो पिव भक्ति निसिबासर परिहरि सकल बिधाना। कउरे पिंड प्रेम के परिहो गगन अस्थाना। गुरु को शब्द अहै बट राखौ दे दछिना अभिमाना। तिरथ अधर त्रिबेनी को जल उर आनन्द अरधराता। एकहि बार सदा जल डारो मूल मंत्र समुझावता। बाउर लोग पीअ नहि सुझै अरुझि पीउहि पानी। सुनु उपदेश धरनी जिन्ह बेद धोखा मेटो ताहि बंदो गुरु ग्यानी ॥ ५४ ॥ सुनु उपदेस हमारो जिअरा तु सुनु उपदेस हमारो। जो उपदेस सहेज प्रगासो मूल मंत्र बेवहारो। तुलसि माल गले कर भुषन तिलक लिलाट सुधारो। अवर देव की सेवा त्यागो बिसंभर ब्रत धारो। लोकआचार सभै परिहरि के जियते बैर बिसारो। लोभ कपट अभिमान भाम तजो कोधा बचन निवारो।

ना लैहै लै धन जोरि जोरु रे । आतम राम को बैर बढ़ायो पुजत पावक प्रेत रे । धरनी बारम बार पुकारे परमारथ के हेतु रे ॥ ५८ ॥ भए दास बिनोदा नन्द के । तब बापर टापर के ऊपर अब असवार गयंद के । मालां तिलक दया करि दिन्हो परिचे माया छुछंद के । द्वादसहु को भेद बतायो सुमिरन शब्द पसन्द के ।। ध्यान कह्यो मन मान हमारो झलके झूलन चंद के । सनमुख अधर अपूर्व दरशन निरखहु आनन्द कन्द के । काटौ कर्म भर्म बनजारो फारो कागद फंद के । धरनी दास मिले संत संघति पार तरो दुख दंद के ॥ ५९ ॥ भइ कांत दरस बिनु बावरी । मो तन ब्यापै पीर पिरतम की सुसुख जानै आवरी । पसरि गयो तन प्रेम सखा सखि बिसरि गयो चित चावरी । भोजन भवन सिंगार ना भावै कुल करतूति भावरी । खन खन उठि उठि पंथ निहारो बार बार पछतावरी । नैनन्ह अंजन निन्द ना लागी लागी दिवस बिभावरी । देह दसा कछु कहत ना आवै जस जल मीन नावरी । धरनी धनी अजहु पिया पायो अब बहुरी आनन्द बधावरी ॥ ६० ॥ ऐसे राम भजन करि बावरे । बेद साखी जन कहत पुकारे जब तेरे चित चावरे । माया द्वार सोय निरखु निरंतर टेढ़ा ध्यान ठहराउ रे । त्रिबेनी एक संगहि संगम सुन्य सिखर कह धाव रे । हद उलंघि अनाहद निरखो अरध उरध मध्य ठाव रे । राम नाम निसि दिन लव लागी तबहि परम पद पाव रे । तहां है गगन गोफा गढ़ गाढ़ी

जहां न पवन पहुंचावरै । धरनी दास तासु पद बन्दे जो यह जुक्ति लखावरै ॥ ६१ ॥ जाकी दीन देआल दया करि । ताकी सकल देआल दसो दिस काल कुटिल पाएन परि । सो जन सहज सुमेरु सरीखे जस बैकुंठा सारि । द्वादस कला सुर के आगे जोगिनी जोति कहा धरि । जो निधि चहै सो आइ रहै तहां जो मुख कहै सो ना टरि । बैकुंठ करि मिलन किया सो मुक्ति निसानो फहरि । जप तप नेम तिरथ व्रत संजम दान पुन्य ते क्या सरि । धरनी प्रभु जाकी अपनावे दरस परस पातक हरि ॥ ६२ ॥ मेरो राम भलो भवो पार हो । वासो दुजा द्दष्टि नहि आवे जाहा करो रोजिगार हो । जो खेती तब उन्हे किआरी गंग जमुन के पार हो । राति दिवस उदम करि बिनु बीज बएल हर फार हो । बनिजा करो तउ उन्हे परोहन भरो बिबिधि प्रकार हो । लाभ अनेक मिले संत संघति सहजहि भरत भंडार हो । जो आचो तो वाहि को जाचो फिरो न दुजो द्वारा हो । धरनी मन बचकर्म मन मानो केवल आधर अधार हो ॥ ६३ ॥ भाइ जिन्हि भक्ति राम को पाइ । मुक्ति भए दुख सुख ते छुटे सहज साहेबी आइ । बेटा व्याहु बसंत दिवारी सदा आनन्द बधाइ । प्रीति संत संग उमंग राति दिन बाजु निसान सदाइ । तीरथ पवोत्र किये प्रभु परसो जम को जलनि बुझाइ । धर्मराए के परम सनेही बेद बिमल जस गाइ ॥ आदि कुमारि आरति वारी इन्द्र करि सेवकाइ । ब्रम्हा बिष्णु महेश सुराहत अवर को कौन चलाइ । बैकुंठहु हरि

भक्त बिराजे तत्र महिमा अधिकाई । धरनी धन्य भक्ति कारी जुग तिहु पुर फिरत दोहाई ॥ ६४ ॥ हरि जन वा मद को मतवारे । जो मद बिनु काठि बिनु भाठि बिनुहि अग्नि उदगारे । बास आकास घराघर भीतर बुन्द झरे झलकारे । चमकत चन्द अनन्द बढ़ो जिव शब्द सघन निरुआरे । बिनु कर धरे बिना मुख चाखे बिनहि पिआले ढारे । ताखन स्यार सिंघ को पवसत्र जुथ गअंद बिडारे । कोटि उपाए करै जो कोउ अमल ना होत उतारे । धरनी जो अलिमस्त दिवाने सोइ सिर ताज हमारे ॥ ६५ ॥ हरि रस अमल अमोलिक आइ । पदुम पुरान भागवत गीता बेदहु भेद बताइ । काया काठीआ लिव दया जल पोसत प्रीति बढ़ाइ । तब लगि नैनन्ह देहु मरोरा जब लगि धर चिकनाइ । लेहु निचोय सर्बज रस नीको सोठि भर्म बिलगाइ । छनना साधु संघति मति छोंडो लिव को जाम भराइ । प्रगटे जोति मोति घन बरिसे दरसै जग हवाइ । लिया लपकि गयंद गिरावै बाघहि धरत बिलाइ । गुरुगम पिहु लुकुस ले लावहु घरहि मे घर ठहराइ । धरनी कहत सुनो भाइ संतो जनम न होत जमाइ ॥ ६६ ॥ हरि जन हरि के हाथ बिकाने । भावे कहो जगु छग जीवन है भावै कहो बौराने । जाति गवाइ अजाति कहावो साधु संघति ठहराने । मेटो दुख दालिद्र पराने छुठल खोए अघाने । पांच जने प्रबल प्रपंची उलटि परे बन्दिखाने । कुटि मंजुरी भए है हजुरी साहिब के मन माने । निरदाया निच

बैर सभै ते निरसंशा निरबानै । धरनी काम राम अपनै तै चरन कमल लपटानै ॥ ६७ ॥ अरे मन जपहु निरंजन देवा । अरे मन जपहु निरंजन देवा । ब्रम्हादिक सनकादिक नारद सुर नर मुनि गन सेवा । जा की अस्तुति बेद बिराजै दस अवतार तरेवा । जा की अज्ञा चन्द सुर नित निस दिन उद्दे करेवा । साधु सकल जा को जस गावै पार तरे बिनु खेवा । सभ घट बिमल बसै अबिनासी बिरलै जानहि भेवा । प्रभु को भजन बिना नर प्रानी कर्म काठि अरुझावा । धरनी दास कहै कर जोरि मोहि अपनो करि लेवा ॥ ६८ ॥ सभ ते प्रेम अपुरब बाता । बारि प्रचारि परै बैसंदर समुझि प्रीति की माता । सुअटा राम कहै कहवाए लोगु कहै यह ज्ञाता । मन के जात अनत चित अरुझो राम नाम न सोहाता । जैसे कपि डोरी बांधि बांधि बाजीगर बहु बिधि नाच नचावता । छुटे छटकि चढ़ो दुरमसाखा निरत सुरति बिसराता । सुफल मूल बिसारि बिसंभर डार पात भरमाता । धरनी धन्य जगत जन सोइ जिन्ह हरि के रंग राता ॥ ६९ ॥ जग मे ताको जन्म बखानो । जाको मनुआ निरखि निरंतर अभिअंतर ठहरानो । हरि को नाम निरखु निशु तेनहि उपजत अनुभव ज्ञानो । भिसुना मोह मया ममिता के बंधन ते बिलगानो । दया दीनता प्रेमलीनता सांच हिये ठहरानो । संत सील संतोख सकल अंग संघति साधु समानो । करनी कोइ करै बिरलै जन कथनि जगु अरुझानो । धरनी चरन सरन तिन्ह के जिन्ह आतम रामहि जानो ॥ ७० ॥

राग नट ।

सुमिरु मन केवल करता राम । भजिले भ्रम बकुल निरभै पद दुर करु दुरमत खाम । घोर कठोर निदान मान ज्ञान धवल धवरहर धाम । सुत बनिता परिजन धन जहाँ तहाँ अन्त अहै काम । ब्रह्मादिक सुर नर मुनि सुमिरो निसु दिन आठो जाम । जुग जुग संतन्ह जस गावा बिबिधि बिमल बिस्राम । तेजि प्रभुता जड़ता मद ममिता छाँडि गरीब गुलाम । धरनी परम पिआस दरस की पुनि पुनि करत सलाम ॥ ७१ ॥ करता राम करे सो होइ । कल बल छल बुधि ग्यान सेआनप कोटि करै जौ कोइ । देइ देवा सेवा करि कै भर्म भुले नर लोइ । आवत जात मरत अरुझत कर्म काठ अरुझाइ । काहे भवन तेजो भेख बनावो ममिता मइलो न धोइ । मन की आस चपरि नाहि तोरो आस फाँस नहि छोड़ । संत गुरु चरन सरन सच पावो अपनो देह बिलोइ । धरनी धरनी फिरत जेहि कारन घरहि मिलो प्रभु सोइ ॥ ७२ ॥

प्रभुजिव अब जनि मोहि बिसारो । असरन सरन सरन अधम जन तारन जुग जुग बिरद तिहारो । जाहाँ जाहाँ जन्म कर्म बसि पायो ताहाँ अरुझे रस खारो । पाँचहु के परिपंच भुलानो धरेउ न ध्यान अधारो । अंध गरभ दस मास निरंतर नख सिख सुरति सवारो । मंझा मुख अग्नि मल जम जाहाँ सहजे तहाँ प्रतिपारो । दीजे दरस दैआल दया करि गुन पिगुन न विचारो । धरनी भजि आवो सरनागत तेजि लज्या

कुल गारो ॥ ७३ ॥ अजहु मन शब्द प्रतीति तिन आइ । चंचल चपल चहुदिस डोलै तजत नहि चतुराइ । शब्दहि ते सुक मुनि सारद नारद गोरख की गमु आइ ।. शब्द प्रतीति कबिर नाम देव जागत जक्त दोहाइ । सदन धना रैदास चतुरभुज नानक मीरा बाइ । संत अनन्त प्रतीति शब्द की प्रगट परम गति पाइ । धरनी जो जन शब्द सनेही मोहि बरनी नहि जाइ ॥ ७४ ॥ अधर बिनु काहु नहि गति पावो । अधर अधार भए ध्रुप निश्चल जन प्रहलाद बचावो । अधर ते नाम देव पैजपुरावो जैदेव रथहि चढावो । अधर अधार कबिर छपा करि भोजन सोजन दावो । अधर ते गोरख नाथ भरथरी सुक मुनि जोग कमावो । पीपा सैना सदन नर हरि निरखि परखि गुन गावो । अधर ते ब्यास आजामिल पतित अनेक सिधावो । धरनी समुझि अधर अवलंबित सरन सरन गोहरावो ॥ ७५ ॥ जौलो मन ततुहि नहि पकरै तौ लगि कुमति बेवार न छुटै दया नहि उपरै । काहुकि तीरथ बरत भटकि भर्मि थाकि थाकि थहरै । मंडप मढ कोइ सुरति सुरति करि धोखेहि ध्यान धरै । काहु के अनत जिवन फल तोरि क्या पच अनल बरै । काहे के बक्त करि जल पर सोवै भुइ खनि खंधक परै । दान बिधान पुरान सुने नित तब नहि काज सरै । धरनी भवजल तंतु नावरी चढ़ि चढ़ि भक्त तरै ॥ ७६ ॥ दासन्ह सुनु कवन करै बरिआइ । जापर राम कृपा करी तेसु पवसु की कवन बसाइ । जगुहि मे रहत

जक्त कर्म न्यारो तेजि कपट चतुराइ । चहु जुग भगत भक्ति मरजादा बहु भगतिन्ह गति पाइ । जो सुख देइ सदा सुख पावै दुख बढै दुखदाइ । जाहाँ जाहाँ भक्त कियो परतिज्ञा ताहाँ ताहाँ पैज पुराइ । दास मैं बास विसंभर जीव को अनत मरे कित धाइ । धरनी दास तासु जन बलि बलि प्रेम भक्ति जाहाँ छाइ ॥ ७७ ॥ करहु न कमल नयन सतु नेहो तब लगि काहे न करत भजन जउ जबलगि डोलत देहो । भुले भर्म काहा धन बनिता जोवनता गरवे हो । घर बन राम काम नहि अइहै उच धवल धुआगे हो । कर्म फांस परिपंच पांच वसो जनमो जनमो मरते हो । एक बार जिव ते मरिआ तब तब रवि सुत डरते हो । सत गुरु शब्द आकासन मे पारधो जब करते हो । सहज सुभाव कहै धरनी जम काल मृगा मरते हों ॥ ७८ ॥ भाइ गुरु कहावत जक्त घना । बहुत बहुत गुरु करत चतुरइ सांचो मारग विरले जाना । बालक विद्या गुरु पढ़ावत सरव सिखावत लोग नाना । छल प्राकृत पाकृत विद्या सब भार धरे सिर अपना । पद दुइ चारि नारि गर बांधि लोक बुझावत मुख मंडना । कोउ धन लागि जक्त परमोधे ता नट को कौतुक देखना । परम तंतु परिचै भइ जाके जिसुना तामस परिहरना । जीव सकल दुबिधा नहि जाने धरनी ता गुरु को सरना ॥ ७९ ॥

श्री राग ।

मातु मातु मद मातु मना । जे मद पीअत महेस्वर माते

अस भाति सब संत जना । व्यापक निरंतर अंतरजामी त्रिगुन रहित राजित गगना । रवि ससि अग्नि पवन जल थल नहिं नहिं निसि दिन सौतुख सपना । इङ्गल पिङ्गल पंथ परिखि के चढ़े सुख मारग सुखमना । घाट त्रिवेनी बाट उनमुनि सहज मगन रहु सुन्य सना । परम ततु परमादिक परम गुरु जुग जुग अबरन अधर न भरना । धरनी सोइ अनुभौ पद पैठहिं जाहि अहरि हरि हरि रटना ॥ ८० ॥ जो जन जानि भजो हरि चरना । ताके प्रेम प्रतीति रीति निति छीन अटल व्रत नहिं टरना । मोह मया को बन्धन तोरै छोड़ै करम भ्रम भर हरना । बेद शास्त्र मत मनहु न आवै सब निरभय हरि गव डरना । ज्ञान भयो गलतान ताहि को पांचहु को रस परि हरना । पाप पुन्य रज तम ताहा विनसो बिसरि गयो जीवन मरना । धरनी सो सिधि रिधि नहिं जोवै करामाति लै क्या करना । मोक्ष मुक्ति बैकुंठ अमर पद सम तरवर लागो फरना ॥ ८१ ॥

राग गौरी ।

सुमिरो हरि नामहिं बौरे । चक्राहु चाहिं चलै चित चंचल सुख मता नहिं निसचल बौरे । पांचहु ते परिचै करु प्रानी आहे के परत पचीस की भौरे । जब लगि निरगुन पंथ न सूझै काज कहा महिमंडल दौरे । शब्द अनाहद लखि नहिं आवै चारो पग चलिए सहि गौरे । जीव तेली को बैल बेचारा घरहिं

मि औरु पचासक भवरे । इया धरम नहि साधु की सीखा
आहि वो सो जनमि घर चवरे । धरनी दास तासु बलिहारी
झूठ तजो जिन्हि सांचहि धवरे ॥ ८२ ॥ सुमिरो एगो साझ
गोसाइं । जग धंधा परिहरि अंधा मन गहु गुरु चरन सरन
मन लाइ । निरलज्जा लरिकाइ संग डोले तरुन होति कछु
चतुराइ । स्रवननि सुत जन धन मन राते सांच के मारल
झूठि सगाइ । जिव दया सत सुकित धरि के सजि
प्रभिता छमिता छुलुवाइ । काम क्रोध चिसुना फल लीरो तज
अमृत रस पियहु अघाइ । जोगी पंडित दानी कवेसर एह सभ दिह
धरि फिरि आइ । धरनी दास कहे गुरुगम साधु भक्ति बिना
भवपार न जाइ ॥ ८३ ॥ दिल मालिक एक अलाह हमारा ।
जा की एक सखुन फ़रमाया भैगव चौदह तबक सियारा ।
दुजा कोइ नज़र नहि आवे जैसा मन महबुब पियारा । है
ज़ाहिर नाज़िर येह सोइ तबे तालिब की कोस हजारा ।
ज़ा की ज़िकिर फ़िकिर कावे को मीर पीर पैग़म्बर सारा । मक्का
मदीना हाजत मेटी रोजा ईद मसजिद बिचारा । मरहम
जानि मरम मे राखो मेहरवान होए देहु दिदारा । आइ आइ
बन्दा थिर नाचे धरनी दास ग़रीब बेचारा ॥ ८४ ॥ आंधा झाडू
देखो नैन उघारी । काम क्रोध मद लोभ की सेजिया सोवत
पांव पसारी । वचन बिचार सदिढ़ करि आए भजत आरत
एह भारी । अथकि न खोजसि वस्तु अगोचर मुनि चलहि आइ
झारी । एके ब्रह्म सकल घट व्यापिक निगम कहे पुकारी ।

जानि बुझि बिख खात, अबुझ जीव अजहु संभारु अनारी । हिन्दु तुरुक दुवौ मदमाते खेलत धुंध धमारी । सब जीवन तें बैर बिसारो धरनी ता बलिहारी ॥ ८५ ॥ रे बन्दे तु काहे को होत दिवाना । एक अल्लाह दोस्त है तेरा अवर तमाम बेगाना । कवल करार बिसारि बावरो माल मती मन माना । आखिर नहि दुनिया में रहना बहुरि उहाई जाना । जाहिर जीव जहान जहां लगि सभ मो एक खोदाई । बहुरि गनीम काहां ते आया जापर छुरि चलाई । छुरि नहि है दिल का मालिक बिना दरद नहि पैहो । धरनी बांग बुलंद पुकारे फेरि पाछे पछतैहो ॥ ८६ ॥ देखो देखो आवत बर बरिआती । सोधित लगन सुदिन एह आवो अगुमन आमरि ले पाती । गहा गहा गहि बाजन बाजे बहुअ चले फहराती । चमकत खांड़ फरथत, नेजा गरद गगन उड़िआती । परिजन को परिवार पुलका जोये साज करे बहु भाती । धावन धावत सुधि पहुचावत सखि गावत रंग राती । जब बरियाति दुआरे ठाढ़ी मानमती मुसुकाती । प्रेम दिआ मोतिआ को अछत परछि फुलसाती । मिल जहां जस भवन से उचो दुलहा अमर जाती । धरनी कीको ब्याह बनो है जहवां दिवस ना राती ॥ ८७ ॥ अब हरि दासि भइ । ता ते गहो चरन चित लाय । रहो लजाय लोक को लज्या बिसरि गइ कुल कानी । उपजी प्रीति, रीति अति बाढ़ी बिनुहि मोल बिकानी । छाजन भोजन की नहि [illegible] सहजहि सहज कमाए । संत सलोनहि छोड़ि के अन

भेषु नहि बिलगाए । दुखदाइ दरसै नहि हो दहु दिस भयाल दयाल । अपनो प्रभु अपनो गह पावो छुटथि परी जंजाल । अब काहु के द्वार ना आवो नहि काहु की जाउ । धनी तहां संच पाइयो अब जहां धनी को नाउ ॥ ८८ ॥ भाइ सो सब तें अधिकार । बिसरो बिषय बिकार जाहां लगि पसरो परम पसार । हरि हीरा ह्रदये धरि राखो भवन भयो उजिआर । दुर मति भाजि दुन्दुभि बाजि तन ताजो असवार । पांचहु को परिपंच न लागै जों छठ करइ हजार । कर्म भर्म मिता मन मेटो जगु धंधा तें न्यार । सिधि रिधि सहज परे पगु लोटै सिर नावे ससार । गिरिवर अग्नि पवन जल थल में राम रहे रखवार । धरनी कहत सुनो भाइ संतो बसहु बंसी मे बार ॥ ८६ ॥

राग कल्यान ।

जाके राम चरन चित लागा । ताके मन को भर्म भुलानो धंधा धोखा भागा । सो जन सोभत अवचकहि मे सिंघ सरीखे जागा । धनि सुत जन धन भवन ना भावत धावत बन बैरागा । हरखित हंस दसा चलिआवो दुर गयो दुरमति कागा । पांचहु को परिपंच ना लागी कोटि करै जब दागा । सांच अमल तहां झुठ ना भासे दया दीनता पागा । सत सुझल संतोख समानो जेव सुआ मध धागा । सै मन पवन उरध को धावै उपजु सहज अनुरागा । धरनी प्रेम मगन जन सोइ सोइ जन सूर सुभागा ॥ ६० ॥

राग कांधरा ।

अब तव जानि परी प्रभु तेरी । सैसुनि सौरह घाटि तासु उई प्रगट पुकार करेरी । जाके जंजाल चहु दिस घेरे तापर याक अहेरी । किवो न तीरथ साधु दरस अति अलसाय रहेरी । अर्थ जोग तप पाट म पूजा बरत कथा न कहेरो । जग्यो सिरानो सिरानिहि सेवा राम नाम नहिं टेरी । छोड़ि बेद बिधि अविधि सबै को किवो अवघट घट बहेरी । धरनी दास परम सुख पावे जब प्रभु कर पकरेरी ॥ ८१ ॥ बूझा मन उलटि बाल चलावे । अति बलिवंड बैर नहि कैसहु बेद लोक समुझावे । जा मधु कुल परिवार बिराजै ता मारगु नहि भावे । जाम गुलोक बली चित हरखित ता मधि कूप खनावे । तिवनि एक संगहि संगम बिनु जल तहां अन्हावे । जा मधु जोति संघात पवनै गमना मारग भपि भावै । देह सरोवर उरध कवल दल तहां बिस्राम सोहावे । धरनी गुरु सपन अति अद्भुद बचन बकति नहि आवे ॥ ८२ ॥

राग केदार ।

मै अपराध किवो बहुतेरी । कैंहा लगिं कहंउ कहत नहिं आवै जानत हौ गुन औगुन मेरो । गर्भ बास दस मास अंधो मुख टेहा जननी दुख सहिउ घनेरो । बालकुमार करम बहु लागी निरदया मन कठिन कठोरी । गौ सुत दियउं न कियउं तिरथ ब्रत सुमिरत नहि तप ठाढ़ ठढेरी । सुबा

सेमों बिखिआ रस मारे पांचहु के बसि फिरत अनेरी । अधर्म उधारन बानी सुनी प्रभु सकल साधु गम निगम कहेरी । धरनी दास त्रास अति आसित त्राहि त्राहि करि सरन गहेरी ॥ ८३ ॥

अजहुं न राम चरन चित देहो । नाना जोनि भटकि भरमि आए अब कब प्रेम तिरयहि न हैहो । बड़ कुल बिभव भरम जनि भूलो प्रभु पैहो जब दांव कहैहो । एह संगति दिन दस की दसा है कथि कथि पढ़ि पढ़ि पार न पैहो । कर्म भार सिर ते नहि उतरे खंड खंड महिमंडल धैहो । बिनु संत गुरु सत लोक न सूझे जनमी जनमी मरि मरि पछतैहो । धरनी सो तबहि साचो हरि के नाम हृदये ठहरैहो ॥ ८४ ॥

अजहुं मिलो मेरो प्रान पिआरे । दीन दयाल कृपाल कृपा निधि करहु छिमा अपराध हमारे । कल न परत अति बिकल सकल तनु नैन सजल जनु बहत पनारे । मास पचीस बरस रहत रचित भए छाड़ि दिनहु दिन छीत उघारे । नासा नैन स्रवन रस ना रस इन्द्री स्वाद जुआ जनु हारे । दिवस दसो दिस पंथ निहारति राति बिहाति गनत जत तारे । जो दुख सहत कहत न बनत मुख अंतर गत कीजो जाननिहारे । धरनी जीव झलमलित दीप जो होत अधार कारी उजिआरे ॥ ८५ ॥

राग बहागरा ।

ओरे मन सुमिरो करता राम । जा के सुमिरत हरत सब

अघ सकल पूरन काम । जाहि ब्रह्मा आदि सुर मुनि जपत आठो जाम । चरन चितवति गउरी सरस्वती कोटि कमला नाम । जाहि ध्रुव प्रह्लाद सुमिरि तेजि सभ सुख धाम । जाहि सुमिरत पतित गनिका चढि प्रगट बेवान । शिव भाखि बेद साखी संत जन बिस्राम । दास धरनी जोरि कर कर बार बार प्रनाम ॥ ९६ ॥ जग मे सोइ जो जिवनि जीआ । जाके उर अनुराग उपजो प्रेम प्याला पीआ । कर्मन उलटो मर्म छुटो अजाप जपिआ । जनु अंधारे भवन भीतर बारी राखो दीआ । काम क्रोध समोधियो जिन्ह घरही में घर किआ । माया के परिपंच जेतो सकल जानो छीआ । बहुत दिन को बहुत अरुझो सहजहि सरुझिआ । दास धरनी तासु बलि बलि सुजिवो जिन्ह बीआ ॥ ९७ ॥ जग मे जिवना दिन चारी । बेगिहि भजु राम नामहि कपट को पट फारी । प्रथम दिन खेलत गवाई दुतिय दया बिसारी । त्रितिये धनी सुत मित बिखै रस पिअत बदन पसारी । चौथे दिन सोवत सिरानो सको नहि निरुआरी । मानुख जन्म महा पदारथ चले जुआ जै हारी । रोम रोम अधीनता हिए करत मन मनुहारी । दास धरनी सरन आए लोक लाज नेवारी ॥ ९८ ॥ मन रे तु हरि भजु । येहो तेजि कपट अभिमान । जीव समुझि परमोधहु हो । भैआ जनि जानहु खेलवाड़ । जा दिन लेखवा पसरिहै हो । हो भैरुआ करबहु कवनि उपाय । मंत्र सिखाइ कवनि बिधि हो । भैआ अंत्र जुक्ति नहि थाम । नहि पट

धर्म करम कटि हो । भैया अवर धरम लपटाइ । एहि बिस्वास निगुर बनहो । भैया देव दिहल दहिनाइ । धरनी जन गुन गावल हो । भैया भजिलेहु आतम राम ॥ ९९ ॥ कवन बिधि बरनो हे । संतो मोहि वाहो समुझाए । जे प्रभु अगम अगोचर हे । जा के महिमा अगम अपार । सप्त पताल चरन रहे हे । जाके मस्तक सप्त आकास । भुअन चतुर्दस उर बसहे । जाको बेद न जानै भेद ब्रम्हे बेनु बजावहो हे । जाके नाचहि मगन अहेस । धरनी चरन सरन गहिहे । जाके जुग जुग एक रन राज ॥ १०० ॥ हो ब्राम्हन बिनती सुनु मोरो । सुनहु स्रवन चित लाए । जाहि ब्रह्म ते ब्राम्हन उपजो सोइ ब्रह्म सभ माही । जब लगि एक ब्रह्म ना जानो। तब लगि ब्राम्हन नाहो। बेद बड़ा है गोत्र तुम्हारा सो पुनि करत पुकार । जीभ स्वाद के कारन जीव मारो जिअहु ना बरस हजार । पसु पंछी जल जंतु ना छोड़ो । छोड़ा भेंसे के गाइ । पाथो पत्रा गीता देखो मोहि कहो समुझाइ । धरनी कहत अजहु जनि पांडे , सोक नदी भठिआहु । तजि बैकुंठ ब्रह्मपुर बासा नरक अगति कतजाहु ॥ १०१ ॥ मोआ मोलना समुझि देखो कोहै बोलनिहारा । बिना दया दसतार जो बांधो जानि धरो सिर भारा । सिर परछाइ खोसि नहि मेटे कैसे के मेटत कुरुहारा । सिर समला पैराहन पहिरो सांच नहो ठहराइ । दुहु दिस दिल. दुनिआ को दौरे कैसे के मिलत खोदाइ । अगल बिलेब जेथ देखराइ दूरो

छआरथैद लाइ । गला काटैते दरद ना आइ मसला पढ़ल अमाइ । धरनी बांग बुलंद पुकारै अलाह ना समुझो इआरा । छोडु गुलुसगो गहो गरीबी तब पहुचौ दरबारा ॥ १०२ ॥ रमै आराम भजिलेहु हो जाते जनम मरन मेटि जाइ । शहर बसे एक चौहटा हो एकै हाट परवान । ताही हाट के बानिआ हो बनीजि न भावत आन । तीनि तले एक उपरै हो बीच बहै दरिआव । कोइ कोइ गुरुगम उतरै हो सुरत सहीखे नाव । तीनि लोक तीनि देवता हो सो जाने नर लोइ । चौथे पद परिचे भइ हो सो जन विरले कोइ । सोइ जोगी सोइ पंडित हो सोइ बैरागी राव । जो एहि पदहि बिलोइआ हो धरनी धरे ता को पाव ॥ १०३ ॥ भगत जन धन धन । एहि धन जेहि कुल अवतार । जा तन माला तिलक बिराजे अरु छापा छबि देत । बिसंभर बिस्वास हृदय मे संघति साधु समेत । पर निन्दा जेहि सुनत न भावे परधन छार समान । पर नारी पर संघति आगी साँच शब्द परधान । जिव पालक है बिथा गाएहो परगट एहि संसार । आतम घाति साकटाहो जेहि न बिबेक विचार । धरनी मन बचकर्मना पगु बंदे जे जन ऐसा होए । ता घट प्रगट बसे अविनाशी अवर कहै मति कोइ ॥ १०४ ॥ जागत जन सुनि लेउ । जासो बेद विमल जस गाउ । हरि भक्ता के मस्तक जावे जाए कोरि कहि राम । ताखन ताको विघिनि बिलासे जाइ छूटि जैसे घाम । हरिनामी की जे सुखदाइ से सुख से सुखिआ संसार ।

हरि जन की मन जो कलपावै तेहि कलपै बारतार। राम भक्त को चरन परछा लैश्रौ चरणामृत पाउ। निश्चै सकल तिरथ फल पावै अंत होवै अमराउ। धेता रघुपति जदुपति द्वापर कलि संतन की देही। धरनि येह परतीति जाहि भय ताहि को चरन मे खेहि ॥ १०५॥ पिश्रा बड़ सुन्दर सखी। कनि गेला सहज सनेह। जेजे सुन्दरि देखन आवे ताकर हरे ज्ञान। तीनि भुअन के रूप न तुलै कैसे के करउ बखान। जे अगुये कैसी बाइल बरहुइ ताहि नेवछावरि जाउ। जे ब्राह्मन कैसी लगन बिचारी तासु चरन लपिटाउ। चारिहु ओर जहाँ तहाँ चरचा आन के नाव ना लेइ। ताहि सखी को बलि बलि जइहो जे मोहि सावति देइ। झलमल झलमल झलकत देखो राम राम मन मान। धरनी हरखित गुन गए गावै जुग जुग होए जनु आन ॥ १०६ ॥ काया मन फूलि रहु। सेहो लोकत संत सुजान। एक हरि के भजु मोहि भावइ औ हरि जन के संग रे। काहु के सिर पाग लटपटि। काहु के सिर दस्तार रे। संतन्ह के सिर चन्दा झलके पै बिरले संसारे। काहु के गर सोने के माला काहु के गरे सूत रे। संतन्ह के गर तुलसी के मनिआं जा के शरन्ह न भूत रे। कोइ पुजे देवा देइ कोइ पुजे महेश रे। संत सब पुजहि परम निरंजन अबिगति अलख नरेस रे। जोग जुक्ति बिनु सुझि न सुझै तिल परमान दुआर रे। धरनी कहे काया परिचै बिनु काहु न पावो पार रे ॥ १०७ ॥ घर घसुआरि खसम पिआरी।

तेहि जनि भरमै कोइ रे । जे वर नारि विवेक न जानै से बिभचारि जोइ रे । बालपनै सुख सहजे गवावल तरुनै उठल धान स्वार रे । गोध पिता पितिआ बंधु आनि दस बिस कैल भतार रे । आग नपति तसु तबहु न बुझै कैल विविधि परकार रे । अवारज करम काकु नहि सुझे जोबन मद मतवार रे । खेलत रहलोउ मन खउ नहि आवछुल सखेसरि माहि रे । एक रसीक आगर नागर धाइ धइल मोहि बाहि रे । धरनी जिनए रसिआ रस पावल बाढल सुग अहिवात रे । जे सुन्दरी मोरि मांग अइसिहहि से बुझि है मोरि बात रे ॥ १०८ ॥ अवचक आइ गैला पिआ के संदेसा ता खन उठलीउ जागि रे । राम राम कै घर से निकसलोउ जे जहां से तहां त्यागि रे । सत के सिंधोरा आरपत मोरा प्रेम पटम्बर पागि रे । वाजन वाजु चपल चौवरीआ चित को चतुरता भागि रे । पुर परी छुर खेलहि चढ़लिउ जन परिजन से बागि रे । कर्म भर्म कर चिता सजावल ब्रह्म अग्नि तेहि लागि रे । धरनी धनी तहां भरति भावरी चित अबुझे अनुरागि रे । अमरिक गवना बहुरि नहि अवना बोलहु राम सुभागि रे ॥ १०९ ॥ अब बोझा एक देव मझा बल दिहल गुरु दहिनाइ रे । देह देवकुरी चित चौरा बांधल निसु दिन करत बोझाइ रे । ध्यान दिआ तान्हां दोऊ बौ बाखल अनहद झाल बजाइ रे । सहजहि से देव दरसल आदसल जग ना पाटे जाइ रे । जे अरदसिआ अच्छत पाबे

अग्नि तासु घर लागि रे। कामे गये काहुवो नाहि नांचे दोखित दुर मत भागि रे। धरनी दास देखाइ गावल पावल मंगल दाउ रे ॥ ११० ॥ जो गुनिआ मोर देव परोखे ताकर पूजों पाउ रे। सोखा सेंभु नाथ को सुमिरों जो सभ उपर नोखा रे। जो सोखा अभिअंतर पोखा अब जनि लागे धोखा रे। परि हरि धोखा भजि ले चोखा मेटिहैं लेखा जोखा रे। जगमग सोखा गगन झरोखा निरखतहि निरदोखा रे। जेहि देवा लो छेरि छागर तेहि जनि पुजो बावा रे। देउकुरी को पथ जाने ना पैहो बिच वस्तु है का बाचो रे। से सोखा तजि खान संतोखो सुत धनहि जो गावे रे। नाहि तो अंत नरक मैं परिहै धरनी जन समुझावे रे ॥ १११ ॥ रे मन मुरख अज्ञानी। एक सुमिरो सारंग पानी। मानुख देह बड़े तप पावो बहुत दआल दआसी। जा घर ते उठि आये पूआ घर सो घर कोव बिसरासो। जो करना सो अबहि करि लीजै आतुर जात जुआनी। समुझि समुझि निसि दिन पछतैहो जब तन छोड़हे पुरानी। जीव दआ जेहि जीवन व्यापे सो भमी है चोरासी। साधु संत गुर मत मति छोड़ो बुझो वेद निकासी। भजन बिना नरक महि डोलै बारंबार झुलावे। देव बुन्द गुर देव दआ ते धरनी दास बुझावे ॥ ११२ ॥ सुमिरन करला राम रे भैआ। अवर को सुमिरे न आस न पुजै सांच सुनो मेरो भैआ। भौतित सुभक्त मेराइ मह्रा प्रभु सुन्दर देह बनइआ। नर के अधोर अधो मुख झुले तादिन को रखवइआ।

ध्रुव प्रहलाद उधारनिहारी । अवमनि ताखि उबरइआ ।
बिस गनेस के खंड निआरो । रुक्मिनि हरनि हरैआ ।
आंकर पाथर देवा देइ बहु बिस्वास बढ़इआ । अंत समै कोइ
काम ना ऐहैं नारि सुता सुत भैआ । बिनु सत गुरु खल
लोक न सुझै धरनी दास कहैआ ॥ ११३ ॥ ऐसा मन जेहि
बिधि राम रमैआ । जब बिस्वास बढ़ो अभिअंतर प्रगट पुकारि
सुनावै । परम आनन्द भयो जिव मैं कोइ पसु अरि ना बिछरावै ।
बिनु पग छिनु छिनु राम के आगे अपने मनहि नचावै । जो
कछु खाय पियो पहिरो जत रामहि सकल चढ़ावै । जहां
उठि पंथ चलो कछु काजहि रामहि आगु चलावै । मन ऐसा
धरि तन पिंजरा में रामे राम पढ़ावै । निरखि सरूप अनूप
मगन मन चन्द चकोर चितावै । राम के दास थो दास थारै
मन राम नगर घर छावै । धरनी राम प्रताप जुगे जुग बहुरि
ना भवजल आवै ॥ ११४ ॥ रे मन जात चला दुनिआई ।
ता ते हरि भजु गरब गवाई । उमरा मीर मोगल उमदा जत
पाति साह न रहाइ । जोरि बटोरि करोरिन्ह की बहुरि चले
कफनाई । राज कुमार जे बाबु भैआ राना राउत राई ।
अवचक चढ़लि चलो हंडिआ सौदिहल स्वारथ लाई । प्रेम
परवाह जाहां जाहां वाको पार पहुंचे जाइ । अभिअंतर के
भेद न जाने का भयो मुंड मुड़ाए । देव ब्रह्म है हृदये हमारे
कहत संत सहाइ । धरनी ताहि भजो निसिबासर तेजि सापढ़
चतुराई ॥ ११५ ॥ ऐसा मोहि परब दिवारी भावै । निस-

दिन सांझ सकार अघिरो उर अनुभव पद गावै । नाम गाय शब्द कथा मन्दिर में जगमग दीप जरावै । जुआ चोरी काल कलो ते झारि कबहि नहि आवै । हरि गुन कहुआ किसुना सपहि सहजहि सहज टेटावै । ता घर ईश्वर अवसि असेरी दालिद्र निकट ना आवै । जो जन जाने देव देवायी घोरि खसम को पावै । गुरु प्रसाद साधु को संघति धरनी बरनि ना आवै ॥ ११७ ॥ आरे मन ध्यान अधर धरना । परम तंतु परमादि परल गुरु प्रआतम असरन सरना । साधु संघति गहु सहज मगन रहु निस दिन जहां अजपा जपना । त्रिवेनी जहां संगम तीरथ यहै बुद्धि अवर न करना । अनहद शब्द प्रगट प्रभु पुरन पलु पलु अमिय झरत झरना । धरनी चरन सरन मन बचकर्म मेटहु संशा जरा मरना ॥ ११८ ॥ आलस राम रमहु हो मना । बहु जनम भरम मम टेकात गयो अजहु भजहुं मन बचकर्मना । अरध उरध की मध्य निरखहु देखहु सोचि हृदये अपना । निरमल झलकातहि घर छावहु सलि गन मंडित बहु बरना । हिये हुलसित दरषित कुति दामिनी उडत उडित गन चन्द घना । धरनी धन्य कामी कौ तिन्ह की जिन्ह पायो संत गुरु सरना ॥ ११९ ॥

राग पंजर ।

तुहि अवलंब हमारे हो । भावे पशु नागि करो भावै सुरथै सुधारे हो । बहुत जनम बादि गयो निजु नाम बिसारे हो ।

अब सरनागत राउरी जन काल गुमारे हो । भवसागर बेरा परो जल मांझ मझारे हो । संतन दीन दयाल झांपक पार सिनारे हो । धरनी मन बच कर्मना तन मन धन वारो हो । अपनो विरुद निबाहिए नहि करत बिचारे हो ॥ १२० ॥ समुझि नर अंध अभागा रे । राम भक्ति बिसराइ कै लिस प्रेतन्हि लागा रे । साचा रतन गांठे रहै झूठा उठि भागा रे । संत नगारो बाजहि अजहु नहि जागा रे । जीव दया जिव में धरा जैसे बाभन तागा रे । गाइ हती हत्या भइ काहु अइसि कै नागा रे । सनमुख सरन समाइए परि हरि दागा रे । धरनी गुरु गोविन्द भजै ताके काहे को खागा रे ॥ १२१ ॥ भइआ जेहि राम निवाजा हो । सात दीप नवखंड मे ताको दुंदुभी बाजा हो । धर्म तंतु हृदये बसै संतन्ह दल गाजा हो । रहत सदा आनन्द मे सिर पदुम बिराजा हो । काल सरूपी कोइ नहि सुभ आरति साजा हो । पांच जनें की मूढ़ता उठि आपहि भाजै हो । चारि पदारथ नहि चहै सुख सहज समाजै हो । धरनी जीवन, मुक्ति सो अतुलित छवि छाजै हो ॥ १२२ ॥ प्रभु तो बिनु को रखवारा । हौ अति दीन अधीन अकर्मी बाउर बैल बेचारा । तु देआल चारो जुग निश्चल कोटिन्ह अधम उधारा । अब के अजस अवर नहि लाजै सुजस तोहि बड़ाइ । कुल मरजाद लोक-लज्या तजि गहो चरन सरनाइ । मै तन मन धन तो परवारो मुरख जानत ल्याला । बाउर बेद न बाभन बुझै बिनु दागे नहि छाला ।

तुलसी सुखन भेख बनावों स्रवन सुनों मरजादा । धरनी चरन सरन सच पावों छुटिहै वाद बेबादा ॥ १२३ ॥ प्रभु तू मेरो प्रान पियारा । परिहरि नाहि अवर को जानों तव मुख छिआ छारा । तो परवारि सकल जग डारों जब बसो हीए हमारा । हिन्दु के राम अलाह तुरुक के बहु विधि करत बखाना । दुहु को संगम एक जहां तहां वा मेरो मन माना । रहत निरंतर अंतर जामी सभ घट सहज समाआ । जोगी पंडित दानी दसो दिस खोजत अंत न पाआ । भीतर भवन भवो उजिआरो धरनी निरखि अघाआ । आनिति देस देसंतर धावो सो घटहि लखि पाआ ॥ १२४ ॥ प्रभु मोसो नहि दुखित और तुम सो सुखदाइ । दीन बन्धु बाम तेरो आस के सोहाइ । मोसो नहि दीन और निरखि नर लोइ । पतित पावन निगम काहत रहत हो कित गोइ । भो को नहि पतित अवर देखों जग टोइ । अधम को उधारन तुम चारो जुग ओइ । मोते अब अधम आहि कवन धो बड़ोइ । धरनी मन मनिआ एक ताग मे पुरोइ । आपनो करि जानि लीजै करम फन्द छोड़ ॥ १२५ ॥ मन मानुख को देह पाए राम भांज टेरो । जागत ही जग जोवनो बहु संतत संताइ । कालि काल मारिहै धरि मीन कीहाइ । जीव मारि जिभ स्वाद को बढ़ाइ । बेद खत मत छोड़ि कीन की भलाइ । अजहु साधु संगति धरु जारि करु अधाइ । काल साल सालत नहि राम की दोहाइ । धरनी मन मगन गगन एकी एकाइ । बार बार

बार बार वारि वारि जाइ ॥ १२६ ॥

झुमटा ।

ओ सुभ दिना आजु सखी सुभ दिना । बहुत दिनन्ह पिआ बसल बिदेस । आजु सुनल निजु आवन संदेस । चौक चौक चरिआ मैं लिहल लिखाइ । हृदये कवल मैंलों दिआरा लेसाइ । प्रेम पलंग तहां मैलों बिछाए । नख सिख राहज सिंगार बनाइ । नैन धइल दुइ दुआरा बैसाइ । धरनी सो धन पलु पलु अकुलाइ । बिनु पिय जीवन अकारथ जाइ ॥ १२७ ॥ ओ मोरे देसवा सखी मोरे देसवा एक अचरज बात मोरे देसवा । लर के उपर भैले उपर के हेठ । जेठ लहुरा होला लहुरा से जेठ । आगु के त पाछु होला पाछु होला आगु । जागल सुतेला सुतल उठि जागु । नारि से पुरुख होला पुरुख से नारी । माइ मानहु नहि सयति पिआरी । कतहु भइले भुप कतहु भीखारी । कतहु पुरुख होला कहुं होला नारी । आइल से गइले गइल चलि आय । धरनी का देसवा के ऐसन सुभाय ॥ १२८ ॥ जब लगि बारि कुंआरि अंमा । तब लगि दुलहि दुलारी अंमा । जा दिन ते बनल बिआह अंमा । ता दिना से मोरे चित चाह अंमा । दिन दिन भिनल सुरंग रंग अंमा । नाहि भावे सखिन्ह के संग अंमा । सुभ दिना परल गौआर अंमा । अति रुपे बालमु हमार अंमा । से हो धनि कुल उजिआरि अंमा । जाहा प्रभु रचल धमारि अंमा । धरनी मनहि

समुझावल अंमा । पुरुब लिखल फल पावल अंमा ॥ १२९ ॥
जाहि भैला गुरु उपदेस अंमा । अंग अंग मेटल कलेस अंमा ।
सुनत सजग भैला जीव अंमा । जनु रे अग्नि पर घीव अंमा ।
उर उपजल प्रभु प्रेम अंमा । छुटि गैला जात व्रत नेम अंमा ।
जब घर भइल अजोर अंमा । तब मन मानल मोर अंमा ।
देखल से कहल न जाए अंमा । कहले न जग पतिआय अंमा ।
धरनी है तिन्ह धनी भाग अंमा । जिन्ह जीआ पिआ अनुराग
अंमा ॥ १३० ॥

जतसारी राग ।

कुसल कहतहु नहि देखल कुसल पुछै सब कोई । कुसल फरै नहि बिरछ बन कुसल पहार न पाइ । कुसल न जल महँ जनमइ कुसल न हाट बिकाइ । कवन से मरन कुसल कर कोरको सावरि खोइ । कवनिहि वोर कुसल घर कुसल कवनी रूपे होइ । कुसल सजीव की निरजिब कुसल पुरुख की की नारी । कुसल जी हमहि मिलावइ ताकरि मै बलिहारी । येह रे कुसल जग कुसल भुसल सकल संसार । धरनी कुसल भेउ तिन्ह जिन्ह हरि नाम अधार ॥ १३१ ॥

जतसारी करता राम ।

करता राम चहु जुग जतवा आरे । पिसिलीहु कर्म केरा भूरे कौ । किलवा गाड़ि गगन मन मकुरी रे । जुक्ति की जुअवा

भिरावहु रे की । चित के चउरवा दया के दउरवा रे । सहजे झुकीय झिकावा नावहु रे की । मोह मकरीआ छाराउ बहुरीआ रे । साधु संघति की लहनीआ रे की । जे मनहरीआ अइठु जतसरिआ रे । धरनी सेहो धनि अति कुलवा आगर रे की ॥ १२२ ॥

राग सोहर ।

पिआ मोर बसइ गउर गढ़ मै परेआग हो राम । सहजहि लागल सनेह उपजु अनुराग हो राम । असन बसन तन भुखन भवन न भावइ राम । पलु पलु ससुझि सुरति मन गह बरि आवइ राम । पंथिक न मिलहि सजन जन जिनहि जनावउ राम । बिह्वल बिकल बिलखि चित चहु दिस धावलउ राम । होइ अस मोहि लेइजाइ को ताहि लेआवइ राम । ताकरि मै होइब लउडिआ जे बटिआ बतावै राम । तबहि जीआ पति जाइ दोसर जब चाहइ राम । एक पुरुख समरथ धनी बहुत निबाहइ राम । धरनी गति नहि आनि करहु जस जानहु राम । मिलेहु प्रगट पट खोलि भरम जनि मानहु राम ॥ १२३ ॥ एक प्रिय मोरे मन मानेउ पति ब्रत ठानेउ राम । अवर जो इन्द्र समान तो तृन करि जानेउ राम । जाहां प्रभु बइस सिंघासन आसन डासन से राम । ताहां तव बनिआ डोलेबउ बड सच पैबउ राम । जो प्रभु करहि लवासन पवक उपासन राम । पइतिहि पगु सहरैबउ हृदये

जुड़ैबउ राम । धरनी प्रभु चरणामृत नितहिं अचैबउ राम । सनमुख रहबउ ठाढ़ि अन तनहिं जैबउ राम ॥ १२४ ॥ धन धन करता राम के नाम । जेहि नामे पतित परम गति । धन सो पिता धन सोही माये । जेहि तन भगत गरभ रहु आये । धन सेहो दगरिनि छिनि लिहु नारी । धन जिन्हि दुध पिआएउ । धन सेहो गाव सकल परिवार । धन जिन्हि गोद खेलाएउ । धरनी हो धन धन सेहो नर नारी । सत के सोहर गाएउ ॥ १२५ ॥

राग घांटो ।

सहजे पखिआ बोराइल हो रे । खसम अछत धरे भाये हो रे । अबरि घटो इआदेहु बहबाइ हो रे । एकल घटे सरधो मन लाए हो रे । पांच सखेहरि मिलि गावहु हो रे । फुलवा फुलवा पचीसो तुरि चढ़ावहु हो रे । घरि घरि छरि के छछुरे हो रे । जैसे बन मगन मजुरे हो रे । ऐसनि बरत जो चित लैबहु हो रे । नैहरे सासुरे सुख पैबहु हो रे । धरनी पुनि देह बइत चलि जैहहि हो रे । जिन्ह न धरब सो पछतैइहि हो रे ॥ १२६ ॥ घटमइ घाटो धरहु की न बिटिआ कवन काज कोहरा घर जाइ । फुल लोढ़े गैलोहि मन मति बिटिआ की फुलवारो सेहो परलो भुलाये । चहु दिस हेरि हेरि अंखेलि बिटिआ कवन बाटे घर अंबर बजाइ । भागिह मिलि गैला मित मलहोरिआ की जिन्हि देला पंथ सुपंथ चढाइ ।

बांव दहिन पंथ परिहार। बाटआ छाण सुखे देखु अपन दुआर। मन के भरम तजि मन मति मिलल्हि सुख भैला धरनी सब पाउ ॥ १३७ ॥

राग बिनौकी ।

आतम दुलहिनि वर मन मान । ते आपर मातम तेजि न आन । संत गुर शब्द बाइल अगुआए । भवरा ले औलहि लगन लिखाए । बाबा रे करम सैनी रहल ठगाइ । माआ मोरि माये परली मुरछाइ । तिनि मैआ मोर बाजन बजाउ । पांच बहिनि मिलि मंगल गाउ । कोहबर भरही पचीसो चेरी । माचे लिहि मन मति बैरिहि बेरी । धरनी बिनौकी गावे दसम दुआर । जिन्ह लिखाउ मिलल परिवार ॥ १३८ ॥

राग मंगल ।

सुमहु सखि मंगल है आवे मोर वर एक खेलल है । अगम उदधि जल पार सुन्दर सुघर सोहावन हे । अहे जिहितम नहि मबिछाव बिनु जोवहि जगमग करै है । अहे बिनु घोरवहि असवार सासु ससुर बिनु सासुरे हे । सवति से प्राण पिआरी अस सासुर जिन्हि परिखल हे । औहै नैहर तेहि ना सोहाए धरनी धनी हिय हरखित हे । आहो मन वच कर्म नहि आन । ॥ १३९ ॥ पार बसे प्यारे प्रितम बीर बसेरा मोर। गुरगम ताहां चित दुधस औसे प्रच भेल मन मोर ।

जैसे चकोर चित चन्दहि चितवत एक टक लाए । जस होय नैन के ओझल पुहुमि परै मुरछाए । जैसे चकइ निसि कलपइ ओर निहारि निहारी । जब लगि दरस परस नहि उठत पुकारि पुकारी । धरनी बिरह भुअंगम डसेउ अचानक आए । वेगि मिलो प्रभु गारुरि मरत न लेहु जिआए ॥ १४० ॥ मूल शब्द सुधि सुनइत जागलि आतम नारी । नैहर नेह बिसरि गैला शुक सुरति ससुरारी । पूरन प्रेम प्रगट भउ उर उपजैला अनुराग । भुषन भवन न भावै नैनन्ह नींद न लाग । संग सहेलिहि सकुचित सघति सवति सो होय । बिरहिनि बिरह व्याकुलि निसिबासरहि अकुलाय । बिलपति कलपति रोवति झंखति झरवति सोइ । औषध दरस परस बिनु व्याधि विनास न होइ । जब लगि छुटि न जानेउ स्वरूप पावनि देह । आपु आपनही परिखत चाहत सहज सनेह । अधर गीरेखि अदेखि अनिरमल जोति प्रकाश । तन मन प्रान जिवन धन बलि बलि धरनी दास ॥ १४१ ॥ जब मन मोर बसै एक मंदिल आनतै कतहु नहि जाइ । बार बार नेवछावरी सारी प्रेम के सेज चढाइ । ले सरधा जल चरन खटारी चरनामृत सिरनाइ । आठ निसि चरन गहे मन बच कर्म करौ सदा सेवकाइ । पांच भैआ मिलि मंगल गावै पुन पचीस नचाइ । बहु अवध तरी ताल धरावी सरबस दे बलु ठांइ । धरनी जो मन को मन मानै सब लिहु लोक बधाइ । जीवन जन्म सुफल करि लेखो गुरु गोबिन्द दोहाइ ॥ १४२ ॥

राग मोरंगी।

प्रेम प्रगट भैला भाजि भरम गैला । उर उपजैला अनुरागी रस पागैला । तेहि मन मानै साथा वाल न परत बाथा । भुलि गैलि भुख पिआसे घर बासे लो । पचि गैलि पंडिताइ । चलि भइली चतुराइ । नींद नठलि दिन राती न सोहाती लो । परिहरि जाति पाति कुल करतुति भाती । बिसरलि बरन बड़ाइ प्रभुताइ लो । जप तप जोग जमाति रिधि सिधि करमाती । कर्म धर्म कविलासे नहि आसे लो धरनी भौलुक भनि तुहै प्रभु चिंतामनी । मिलहु प्रगट पट खोलि मुख बोलि लो ॥ १४३ ॥ मन रे ते हरि भजु अवर भरम तेजु सपन सकल संसारे नहि सारे लो । सुत पितु बंधु नारि यह संग दिन चारि अंत बहुरि बिलगाइ पछताइ लो । परिजन हाथी घोरे इन्हहि कहत मोरे चित्र लिखल पट देखित सलेखि लो । गरब करत देहे हृदये समुझि सेहे जस संगी परत पखाने अनुमाने लो । चोरी नारि मिथ्या घात परिहर चारोंउ बाते होय रहु बिमल बैरागी अनुरागी लो । देइ देवा सेवा भुठी जस मरकट मुठी धरनी कहत समुझाइ दिन जाइ लो ॥ १४४ ॥

राग बंगाला।

सकल भुअनेर मुनि जन जीवन अधार प्रभु । कवन जाले अवन रे बुझै तुमरो खिआले । जिआ जंतु गाइ रे गोटा

एकल गोवाले बन्धु । जनम जनम हमे करम कमाइलो । अबरिक बार बन्धु सरन समाइलो । बसिबों तुमारो बारो अनते न जाइबो । तुमरि कीरति तजि अवर की गाइबों । धरनी कथिलो जानि बानि रे बंगालो । साइ रे दरस बिना बिकल बोहालो ॥ १४५ ॥ तुमरे बिना बिरह बेहालो भैलो । अमर बंधु कोथे गैलो रे । रहिलो संगहि संगि भैगेलो बिछोहो । बुझि ना परिलो हमे काहे कैलो कोहे । ताखन बिकल तनु बनु भैलो बारी । हृदये हनि लो जानि कठिन कटारी । प्रभु रे प्रीति लागि नाथ नथौलो । मिलो स्वामी अंतरजामी धरनी थाकोलो ॥ १४६ ॥ मुने प्रान अधार बंधु आछे । गुरु तो कृपा करि लो कथि लो बुझाये । खोजि लो मे कवा बन मन चित लाये । निपट निकुंजवन परिलो न जाये । भुलिलो लोकारे लाजि कुल अभिमान । बिवस परीलो सुधि बुध बल ज्ञान । धरनी सुनि लो एक शब्द अमोल । अंठे कोठारी मिता हरि हरि बोल ॥ १४७ ॥ थकिलो अमर ठाकुर बारो । अनदेखि देखिलो अनसुनि सुनिलो अलख लखिलो अनुहारो । पुरुब भेद अपुरब सुनिलो सुमते लागिलो सुख भारो । सकल तेजिलो संत संघति धरिलो लाँघिलो प्रबल पहारो । खुलिलो कुंजि केवारो भगिलो से उजिआरो । चौक चोचौक चित्र सारो निरखि सोहाइलो । बरनि न आइलो बरन बरन फुलवारो । बिनु जल थल जाहाँ कवल मुग सोभी । ताहाँ सुरति मनुहारो बिनु कर हनि हनि तारो ।

धरनी धाइलो सरन समाइ लो । हरि पद हृदये बिचारी ।
पुलकि पुलकि पुरसोतिम पुर जीलो आस हमारी ॥ १४८ ॥

राग पंजाबी ।

सुरंग रंग सांवला मुझे मोहि जमुना किनारे कदम दी
छाहिआं पान दी बिरिआं चाखन दावै । नाख छाल लाल
पट काछे बिहसि बिहसि गले आखंदा । तब ते जीथे जि
थे हो जी दी तीरथ तीरथ दरसा दावै । मोहन सोहन गोहन
डोलै सोअत रैनि जागंदा । जो मन भावै रूप तो सानो
भेजुन घर उत जादावै । कुलदा काज लाज गुरि जन दी
भाग भुवन बिसरादा । चाखु लहै साहिबदी बानी जानी
दुआर सुना दावै । हिये हरख दा घन बरख दा धरनी जन
मन भंदा ॥ १४९ ॥ रावला तु मेरे मन माना । कादम
कादम पर कान्हर बंधिआ गुर की शब्द पहिचाना । बैरि बैरि
सुनि टेरि मुरली की बल बुधि ज्ञान हेराना । अथसमि
भवन रहो अधिआरो अब गुर दीपक आना । तेहि उजिआर
सुरति छबि निरखो को करि सकै बखाना । निसिबासर
मोहि कलु न परतु है खुध न लागत खाना । बिलपति
बिकल बिलखि मुख बोलति डोलति दरद दिवाना । धरनी
दीन अधीन तिहारो लीन भयो ललचाना । तु मति जाहु
मनिक तन मन ते जाउ निकसि बरु प्राना ॥ १५० ॥ समुझि
नर अंत सबै पछतानू । देह की ताप तपै निसिबासर माले

मिथ्ये बिख खाइ । काम कलपि जम जाल अभागो बिसरि सब चतुराइ । तब मन छिन छिन इंद बिआपि आठुवो न करि कमाइ । जन धन लागि, जनम जग नासो राम सुजस गाइ गाइ । जो बड़ हितु सोइ तनु जारे छालिन दिव छवाइ । जिव कर्म बन्धन की बांध चौरासी भरमाइ । करि परपंच भुलि नर बौरे जग सो जोरि सगाइ । धरनी कोइ कोइ पार पहुंचे हरि की चरन चित लाइ ॥ १५१ ॥

राग तिरहुति ।

भाइ हे अदबुद कथल न जाइ । सौतुख सपन मोहि देहु बिलगाइ । देखल दिगंबर अम्बर छाला चरन कमण्डल गरे मंहि माला । ठाढ़ ठर्ड़ेस्वर भवन सरूपे । गुरु सिख संगति न कोइ न भूपे । सुन्य मण्डल मठ दसम दुआरे । गुरुगम ताहां मन बसल हमारे । धरनी समुझि हिये गावहु सवारी । जनम जनम जोगिआ की बलिहारी ॥ १५२ ॥ हमर दुख न साखी पिय गुन भारी । बहुत बिगारउ पै सील है सवारी । अब उन सेवा साखी कहल न मानो । मधुरि बचन वे मैं बोलहि न जानो । घर घरुआर मोरे किछु न सिराइ । गात मइल अति बसन बसाइ । पाहुन भिछुक जन गारी पारी जाइ । गुरु जन मोरि मुख निरखि लजाइ । धरनी येह न पिअ पुन्यति पावे । कुल बोरनि की कुल तारनि कहावे ॥ १५३ ॥ हे साखी मोहि न आन भरोसो । येहि भवसागर बुड़त

मांझे धाइ धरहु कर हारी । बाल कुमार तरुन लरुनापा अयेउ बिखै विख भारी । अब मन बचकर्म तोहि अलंब न करहु जे मनहि बिचारी । आपुन करमु वारेस फल पावल जे कछु लिखल लिलारी । आनक गुन बिसरावल तोहहि निबाहनहार । बारहि बार की आवल जाइ तौ अब नहि सहि हमारी । करहि कृपा करुना निधि वो सब धरनी दास पुकारे ॥ १५४ ॥ पिया मोर बिमल बैरागी । हम बैरागिनि दरसन लागी । छिन नहि रहत बसत गृह माहे । जनु जिव परेउ उदधि अवगाहे । बालमु मरतल जेहि रंगी । सेहो रंगी हमहु रहब तोहि संगी । बाट बटोहिया हे तोहि हित भाइ । जवने पंथे पिया गैला कहहु बुझाइ । धरनी हे तिन्ह धनी जीवन असारे पिय के गोहन तजि कर मझारी ॥ १५५ ॥ सत गुरु शब्द प्रसादे । बिसरि गयेल सब बादे बेवादे । कथा पुर पाटन भेद सुनौला । बिनु दीपक घर दिअरा लेसौला । बिनु कर कठिन केवार छोड़ौला । बिनु नैनन्ह कत चरित्र देखौला । आतम सुमिरन सेहो सुझौला । बिनु रसनै सुमिरत सब पौला । अजर अमर घर अधर लखौला । धरनी हरखि हिये हरि गुन गौला ॥ १५६ ॥

राग बंग ।

पुसब माहादेव दोसर ना काहु । जिन्ह के पुजत कत पतित निबाहु । जिन्ह के न मुण्ड माल ब्याघ्राल गाती । मज्जन ग

पुहुप धूप अच्छत न पाती । जिन्हि के ना जटा लटा भसम ना भंगा । गनपति फनपति गौरी ना गंगा । एकल माहादेव सकल संसारा । धरनी के धन चित जीवन अधारा ॥ १५७ ॥ गंगाजीव को दरशन बड़े तपे पाइ । जनम जनम कर पाप नसाइ । जाहाँ एक संगम त्रगुन त्रवेनी । अष्ट कोटि तिरथ फल देनी । हरिहर ब्रम्हा धरै आवो ध्याना । वेद विमल जस करहि बखाना । संत अनंत भजन ताहा ठानी । रवि ससि अग्नि पवन नहि पानी । धरनी सुनल जब संत गुरु बानी । छुटि गैला भर्म मिटलि कुलकानी ॥ १५८ ॥ धन धन करता काइल जिन्ह देही । मन बच कर्म आव करउ सनेही । जिन्ह मोहि दिहल पिता अस माता । जिन्ह प्रभु रचल सकल जगु नाता । जिन्ह मोहि सत गुर दिहल लखाइ । संत सहर घर दिहल छवाइ । धरनी सहजे सुख संपति साखी । करता राम ह्रदये धरि राखी ॥ १५९ ॥ स्वामी नरायण देवन देवा । सुर नर मुनि गण फन पति सेवा । तु अगति अविगति अगम अपारा । रहल सकल घट सबहु ते न्यारा । त्रगुन रहित प्रभु त्रभुअन राजा । पतित पावन बर बिरद विराजा । मन बचकर्म मोहि तोहरे बिस्वासा । धरनी जपत धन धन तुअ दासा ॥ १६० ॥ अब एक गुमहि हमहि बनिआइ । जगत हंसे भावे करउ बड़ाइ । जौ तुह ब्रम्हा तव हम ब्रम्हचारी । जब तुह बिष्णु तवे हम मालाधारी । जव तुह रुद्र तव हम भगवाना । जब तुह देवा दिइ हमहु

सैआना । जब तुह निरगुन तब हम साधू । जब तुह राहु तबं हमहु कुसाधु । जब तुह गनपति हम हलुआइ । तब हम तुरुक जब तुमहि खोदाइ । तुमहि पिता हम पुत पुतरैला । तुमहि परम गुरु तोहरे मै चेला । तुह पति हम धनि भोग बिलासु । धरनी के मन बच तोहरे बिस्रास ॥ १६१ ॥

राग बंगबरारी ।

तुम तजि होय न दुसरो मोहि मन बच कर्म प्रतीती हो । तुम धरि ध्रुव निश्चल भो प्रभु तु प्रह्लाद उबारी । तुम जैदेवहि तारीवो । प्रभु सहित सुता सुत नारी हो । नाम देव नाम तुमहि कियो । प्रभु तुमहि सुदामा तारो । तुमहि कबीर आपा कियो । प्रभु तु रैदासहि मानि ले । तुम द्रौपति गनिका गनो । प्रभु तुम मीरा मरजाद । तुम संतन्हि की संप्रदा । तुम असुरन्हि बिसमादहो । धरनी दीन अधीन भयो । एक चिंता मनि चित लाए । बिरुद बिराजि रावरो । प्रभु कीजै सो उपाय हो ॥ १६२ ॥ भरम भुले कित बावरे काहु अंत ना आवे काम हो । पानी रकत की रावटी प्रभु दसहुदिसा तेहि द्वार हो । पांच चोर तेहि भीतरे सीतल बसत सहज भण्डार हो । कुल कुटुंब धन संप्रदा बबरे येह सब सहज प्रकार । रतन गवावो आपनो सो तब कुंडल माहि गंवार हो । त्रिकुटि संगम संत बिहंगम स्रवत सुधार सुधार । बिनु गुरु नाम नहि पावइ कोइ कोटि करो परकार

हौ । सुर नर मुनि गन सेवहि अव निसदिन बेद पुकार ॥ धरनी मनवच कर्मना राम जिवन प्रान अधार ॥ १६३ ॥

राग सोरठा ।

काम्ह लीजै सुरति ब्रज बाला । दिन दिन छिन छिन दुखित दरस बिनु बन सम हम रम साला । मास असाढ़ भया है सखि व्याकुल बिनु गद्द मदन गोपाला । नर घर छावत पावस आवत हमहि. जहर जनु चाला । सावन अति दुख पावन लागो आवन सुनेउ नन्द लाला । जानु जानै जलधर जल बरखै मोहि अगार सेआला । भादव भामिनि भरमि परो है जनु पंकज बन पाला । घटा घटा कै सखिआ पुकारि बढ़त अधिक बिख ज्वाला । आसिन आस निरास जिवन की कबहु देआल कृपाला । धरनी धनी अलंब तेखारी एक मनिआ की माला ॥ १६४ ॥ ऐसा गुरु मेरो सन्यासी । देव पुरुष जाको नाम बिराजै अगम अगोचर बासी । जटा न जूट बिभुति बघंबर संख न चक्र गदासी । तीरथ कारन उगहु न डोलै बरत ना करत उपासी । माला सुमिरन पाट न पूजा सुभासुभ न सिखासी । निसुदिन रहत सदा एक आसन कबहु ना होत उदासी । मेरे जान जन गुरु सोइ दुख दारुन सुख रासी । धरनी कहे निगम है साखी संतन्ह हृदये निवासी ॥ १६५ ॥ भक्त की हाँसी कबहि न आइ । सतजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जुग जुग बिरद बड़ाइ । नाम देव भाव

भक्ति ब्रत लीन्ह । जाहाँ ताहाँ सो पैज पुराइ । दास कबीर अंजोर पछिर कै दीढ़ कै भक्ति दीढ़ाइ । जैदेव प्रगट प्रतीति बढ़ावो गोरष अति गरुआइ । सैना धना रैदास चतुरभुज सदन रो मोरा बाइ । भक्त अनेक भये अरु होइहै जो पति जिन्हहि सहाइ । धरनी मनबच कर्म मन मानो संतन्ह की सरनाइ ॥ १६६ ॥ बिधिवत शील बिमल बिचार । परम संतु बिसारि कै से भूलो यो संसार । देह पाय आपदा भौ धरम सो कांटवार । बिनु बिचार न कुटिलो कोइ कोटि करो परकार । देव संत अनंत मुनि गन वेद सो परधान । कर्म मर सिर चढ़ा है बिना गुरु कै ज्ञान । आदि कुमारी देती चउथा पुरहा बैस धराइ । छौति कराओ तेल सायेर सुर अग्नि बराइ । एक मनिया हुलते जारि जारि गए जम द्वार । कहत धरनी गहत जो जन सो उतरु भौपार ॥ १६७ ॥ आरे मन जन्म निरफल जात । आजु करिले काज आपनो छोड़ि दे बहु बात । तुरका हिन्दु भरम भुले जोरि जोरि करो री । अंत जैसो जहा तहाँ छोड़ि चढ़ि चले काठ घोर । काहु लेखनि गाड गाडो काहु जरावो आगी । देखहु चारि कौ संघति मति भुलो येहि सांगी । सोअता संसार सारो जागता कोइ जानी । जागते को काज सरिवो सोअते की नाही । वाको नाम अनंत कहि कहि अंत काहु ना पाए । कहत धरनी धन्य सो जन एक पर ठहराए ॥ १६८ ॥ हरि भक्ति करो मन भाई हो । जाते जरा मरन भरम भागो

झोवा गवन नसाइ हो । पांच ततु संग जोरि समाजो प्रेम पखाउज छाइ हो । आछे भाव काछनि काछि सुरति के ताल बजाइ हो । परक्रति पचीस पुराइ घुंघुरु पगु पायट लटकाइ हो । नख सिख अंग मगन होए नाचों जाहां जुरे संत अथाइ हो । कमलासन अतुलित छवि छाजे पाजे त्रीभुअन राइ हो । धरनी ताहां तन मन धनवारो तेजि कपट चतुराइ हो ॥ १६९ ॥ मै तो अपने पियहि रिझावैंगो । हरखित चित हरि जन की आगे हरिदासी कहलावोंगो । प्रेम प्रीति को पहिरि चोलना सुखन भेख बनावोंगो । परिहरि कुल मरजाद लोक डर नख सिख अंग नचावोंगो । हगुन को ताल पखाउज बिना बहुत बिबेक बजावोंगो । संघति आनि पांच पचानी साधु को बानी गावोंगो । घरि घरि पलु पलु निसि बासर अरु चरन कमल चित लावोंगो । धरनी धनी ऐसो बनि आइ अब किछु जाउगो न आवोंगो ॥ १७० ॥

राग मलार ।

कह मन करता राम सनेही । निसिबासर अरु आदि अंत लों मूल मंत्र जपु येही । परिहरि कुमति पकरि संत संघति जन्म सुफल करि लेही । अवर को गरव कहा गरवा धौ चलि है दगा दै देही । नरक नेवास बास जब हो तो काहि चाहि उबरौ हो । जिन्ह तोहि दियो है अहार अधा मुख ताहि कहां बिसरौ ही । भीतर भवन रतन बिसरायो बाहर ढुंढत

फिरीही । धरनी श्री भगवंत भजन करि भवजल सुखहि तरा ही ॥ १७१ ॥

राग हिंडोला ।

अति अद्भुद एक बखवा रे । जित कित बिपरित डार । गुरु गम लाग हिंडोलवा रे । चहु मन राजकुमार मांझ मझारि लागिआ रे । प्रेम की डोरी सुढार पांच सखिन्ह संग झूलहि रे । सहजी उठत झंझकार अरध उरध झुकि झुलहि रे । गहि गहि अधर अधार बिनु सुख मंगल गावही । रवि बिनु दिपक उजिआर धरनी जन गुन गाइआ रे । पुलकित बारमबार जो जन चढेउ हिंडोलवा रे । तहि बहुरि न उतरनिहार ॥ १७२ ॥ नइहर मोर बड़ सुखिता रे । हमरो जी बहुत दुलार । सासुर सुधि नाहि जानि आरे । हुइ कस बिधि बेवहार । आस सुनिआ बड़ो दारुनि रे । ससुरहि भावहि गारी । देवर देह निहारहि रे । ननद लिपट नरवारो । टोले बसहि सभ टोनही रे । सवति की सिर असआर । हम अबला नव जोबना रे । कठिन कुटिल संसार । रहत बनत नहि नैहरा रे । सासुर कैसे कै जाउ । धरनी धनी सिधि पायइ । जब बालमु बसे एहि गाउ ॥ १७३ ॥ गरजि असाढ़ जनाइ आरे । प्रीतम सबुझि सनेह । सहजी भवन पगु ढारि आरे । नख सिख पुलकित देह । सावन अति सोहावन रे । दादर भौंगर मोर ।

पिव पिव रटत पपिहरा । सखि अमिअ बरिस घनघोर ।
भादव नवसत साजिआ रे । कंत सुघर घर माहों । अकथ
कलपना मेटिआ । सखि मेटि कलप तरुछाहों । आश्विन
आस पुराइआ रे । पुरुबिल पुराने भाग । धरनी तिन्ह तिन्ह
सुलिआ रे । जिन्ह जिन्ह उर अनुराग ॥ १७४ ॥

राग मारू ।

जोगि एक संत गुर शब्द लखावलहो रे । जिन्ह रे जोगी भवर
गोफा मठ भीतर जगमग जोतिहो रे । बोहि जो जोति स्रवत
सुधामनि मोतिहो रे । उहै मोती हरि जन हंस अहारहो रे ।
सेहो रे हंसा थिर रे बसहो संसारहो रे । धरनी हरखि
हिये, हरि गुन गावलहो रे ॥ १७५ ॥ मानुख जन्म अस परम
पदारथहो रे । सेहो जनि खोअहु अंध अकारथहो रे । करम
करो जिरजोधन भीम अव पारथहो रे । जिन्ह अस कीयेउ
कठिन महा भारथहो रे । अंतहु तन धन जोवन जगमग
तारथहो रे । दिन चारि चेतहु चित परमारथहो रे । बिनु
एक राम जवन धन काहु सवारथहो रे । धरनी समुझि हिये
कहत जथारथहो रे ॥ १७६ ॥

राग बसंत ।

जेहि लागु हृदय ताही को छोड़ाउ । जदपि जुरहि नवखंड
को राउ । प्रथमहि बिसरत कुल को लाज । भाजि चलै

पुनि लोका लाज । पांच जनी को स्वाद बाद । मेटत सकल अंग बिख बिखाद । तन धरती मन गगन स्थाना । घुमत रहत धाएल समाना । निस दिन व्यापि पीरा ताही । भावत भोजन भवन नाही । काल अकाल नहि रावन रंक । रनबन घने डोलै निसंक । मिथ्या करि जानै संसार । मिलहु चहै हित बारम्बार । इत उत की करत नहि सोहात । बकत रहत बिपरीति बात । धरनी दास बसंतहि गाउ । सत गुर संघति एहि सुभाउ ॥ १७७ ॥ एक अकथ कहानी कहि न जाये । जो न कहो घट नहि समाये । लघु दृघ नहि मोट छिन । घटत बढ़त नहि दिन दिन । निपट निरंतर हलुका न भार । हिन्दु तुरुक न बढ़ बार । श्याम श्वेत नहि पीत रात । अति अँबरन मुख कहि नहि जात । दसहु दिसा नर मरत धाये । रहेउ सकल घट भवन छाये । जरत मरत नहि मरत मारि । जोगी पंडित थाकेउ हारि । नहि पावै करि कोटि दान । कोइ कोइ मेटी भेद जान । मो मन भयन पद भुलाय । सहजी सत गुर भयो सहाय । धरनी निस दिन धरत ध्यान । साधु की संघति बिमल ज्ञान ॥ १७८ ॥ तांको भाग भलो जाको गुरु देआल । दुख बिसरो सो तब भव निहाल । जागु आतमा सुनत बैन । मनहु अधारै पाउ नैन । मूल मंत्र सुरति सनेह । उपजु सहज अनुराग देह । तनु परिचै उर अति अनन्द । बिमिरो कपिल भव उदित चन्द । हृदये कवल दल भव परगास ।

गगन मगन मिटेउ त्रास । काम क्रोध मद लोभ मोह । भय तें भगिता बुधि बिछोह । लखित अनाहद गलिता गगन । कर्म कठिन बन जरि बुझान । अकथ कथा कछु कहि नहि जाय । जो जन जानै सो पतिआय । आतम परमातम बिलास । पंच मगावै धरनी दास ॥ १७९ ॥

धरनीधर जापर भए सहाय । तासु कहानी कहि नहि जाय । दुरि गव दुरमति उपजु ग्यान । अवचक लागो बिरह बान । बान लगे नहि जीवै सोय । जीवै तव बाउर कहिरै होय । अभिअंतर पावो बिस्राम । जपत रहत साँचो राम राम । सोहं सोहं सुरति लाए । कवहि कवहि गुन उठत गाए । परम जोति जवं भव परगास । प्रगट भयो तव हरि को दास । निरमल दरपन चढ़िउ हाथ । जब निरखै तव स्वामी साथ । धरनी कहु जिन सुनि सोए । देखी बेद वचन बिसोए । ता की दरसन हरत पाप । अवर नहि सो तव आपि आप ॥ १८० ॥

राग चाँचरी होरी ।

होरी खेलिए मन संका लाज गंवाय । गुरु परताप पट पैन्हि कै हो छिरिको सहज सुगन्ध । जुथ सखीओ संत को हो, अवर सभै जग धंध । भरि पिचिकारी ग्यान की हो हरि जस की रस लेहु । परिहरि तोहि संग सो हो भाव भरे को देहु । फेंट भरे जत मुदता हो देहु अबिर उड़ाए । डफ़ दया दिह

धौ धरी जग जीती निसान बजाए । फागुन दिन आत हैं हो बैठे कान्हां खेलवार । धरनी मानुख देहरा हो दुरलभ दुजो बार ॥ १८१ ॥ जग जीवन प्रान अधार बार ना लाइआ । बालपना बपुरा भला हो जाहि न बिरह सुराय । जोबनता जब ते भयो हो हिय सालै बिनु घाय । बिहुरन व्याधि घटै नहि हो निसु दिन व्यापै मोहो । बालमु बाल सनेहिआ हो कैव बिसराबो तोहो । लागत भवन भेआवनो हो भुलि गयो भुख पिआस । निकट न आवे नींदरि हो सुरति सनेही पास । चिन्ता मनि प्रभु रावरी हो कहिए कवनि उपाय । धरनी धीरज ना रहै अब दिजै दरशन आय ॥ १८२ ॥ मन खेलो बिमल बसंत प्यारे कंत सो। पांच पचीस कै मंडली हो साथ लिए हरखत । खोलो केवारी कोठरि घट पैठो मडल एकांत । छाती मैं बाती धरो हो भवन करो उजिआर । कमलासन कमला पति मेरो जीवन प्रान अधार । गंगा जमुन के अंतरे हो चन्द सुर कै बीच । अरध उरध कै संधि मै तहां अमिअ अरगजा कीच । बिनु पगु निरत करो तहां हो बिनु कर देहि तार । बिनु नैनन्ह छबि देखना हो बिनु स्रवन भंभाकार । सहज सुरंग रंग रचि रहो झिलि मिलि एकै ठाव । धरनी मैटो भाव ते तब मेटो आपानो नाव ॥ १८३ ॥ नारायन गोपाल गोबरधन धारी । दानो दलन छरन बलि संतन्ह को हितकारी । भक्त बालक भक्त करो ताको दुरित प्रहारी । खेलत मिसु जमुना धसो नाथो

फनिकारी । राखि लियो प्रह्लाद को द्रौपति की सारी ।
ग्राह ग्रसत गजराज को जिन्ह कीन्ह उबारी । मारो कंस
बिध्वंस कीयो महि भार उतारी । धरनी तन मन वारने
बलि बलि बलिहारी ॥ १८४ ॥ करता राम के नाम ते मन
मानो हो । अब रितु राज बसन्त गगन मन मानो हो ।
आतम अरु परमातमो मन मानो हो खेलत निबिधि बनाय ।
सगहि सगम होय रहो मन मानो हो नेकु नहि बिलगाए ।
जहां तहां भीतर बाहरे मन मानो हो । दहु दिस भयो
उजिआर । बहु बिध बाजन बाजियो मन मानो हो ।
अनुभव भरो झंझकार । प्रेम अमिय पिचिकारिआ मन
मानो हो । बरखत सहज सुभाव । अजर जरै मुकुता भरै
मन मानो हो । सूझै वार न पार । धरनी अति आनन्द
भयो मन मानो हो ॥ १८५ ॥ मेरो श्याम सनेही बसि
परे हो । हो मेरो ललना सुफल फलो रितु राज । जात
होत मिलि साथ सखिन्ह के आवत हो बनवारी । छेकि
छेकाए धकाए धाए धौ पकरि लियो परचारी । जैसे कृपिनि
बडो धन पावे मनहि मन अनुमान । कैधौ भनि मनि धर्म
न मानो पलु पलु प्रफुलित प्रान । भरि फागुन कहि जान
न दैहौं । लैहौं संबत मानी । ब्रज की खोरी ब्रज बनिता संग
लगये सारंग पानी । पुरन प्रेम नेम गोवालिनि को क्या
जाने संसार । धरनी बरनि दसा द्वापर की समुझो
समुझनिहार ॥ १८६ ॥

राग काफी।

अकथ कहानी को कहै जाकी प्रभु दाया। सो अंत जागी आतमा गुरु भेद लखाया। मूल मन्त्र सुरति करी पछिले भइ काया। नैन नासिका नीच ते धुनि ध्यान लगाया। अभिअंतर हरि हरि हरि रटै घट तिमिरी मिटाया। सप्तपुरी की ऊपरी मन पवन चढाया। अभय पुरी आनन्द भइ तहाँ सुरति समाय। बैठे संगति संत की धरनी सच पाया॥ १८७॥

राग बिशुन पद।

अजहु संभारु मन बावरे। कहाँ रहे कहि लगि आव रे। अब आपनो घर ठहराव रे। बेद साधु सिख सिख रावरे। प्राग अढाइ बिसरायो थाउ रे। बहुरि कहां तोहि इम्रत दाउ रे। दिन दस करिले भक्ति भाव रे। धरनी रहनि दिन समुझाउ रे॥ १८८॥ एक परम पुरुष मन लाउ रे। गरभ भवन भक्त भुगताव रे। ताहि कबहि जनि बिसराव रे। नैहर देवइ दसरहु थाव रे। सो कक ससुरे सुजस आउरे। गरब तजहु गहु गुर पाव रे। हरि गुन हरखि हरखि गाव रे। अबरिक जब नहि समभाव रे। धरनी बहुत पुनि पछताउ रे॥ १८९॥ जनि हमरी खिआल परे कोये रे। भाइ बंधु हित न हमार होये रे। अब जनि खसम कहै जोइ रे। लोक धरम कुल कर्म धोये रे। बहुत किबो मन मथवाये रे। देखल मि जग बेवहार टोये रे। जस धोबी अंबर भरे धोये रे।

भावे हसउ कोइ भावे रोवे रे । धरनी परम रस मे धसलोये रे ॥ १८० ॥ जाहि लागि दरद सोइ जानि है । अति कपि आगर नागर बोर निरखत निफरि गइल तनु तीर । तबहि ते मोर मन धरइ न धीर । घरि घरि घुमि घुमि घहत शरीर । इ मते मातल देखोइ संसार । उमते उमत भैला मनुआ हमार । धरनी के धन बित चितहि न भाउ । राम रटत जिव रहउ की जाउ ॥ १८१ ॥ सुख काल न जाय दुख दुखिआ । गइल अंधार पच्छ आइल अंजोर । भैगयेला गगन भजन गन मोर । निश दिन रटत रोअत चलि जाइ । रटइ आगम बन कछु न सोहाइ । इ दुख जनिहै बिरला कोइ । अैसन दुखरा परल जाहि होए । सुख निति नर कर कोटि उपाए । धरनी के दुख हित सुख न सोहाए ॥ १८२ ॥ मारि गयो बैरिगियो बैरागियो । हो सखि अपने भवन सुख सोअत चौंकि अचानक जागियो रे जागियो । तारवन तन मन परबस परि गयो । रूप ठगौरी ठागियो रे ठागियो । अब कैसे करि मेटत मेटाए देह दुआरि का दागियो रे दागियो । धरनी सहज परस सुख उपजो अरध उरध सा लागियो रे लागियो ॥ १८३ ॥ वारि वो मन मोहन द्वार हमारा । महल मझारा एक मसिआरा । रहत सदा उजिआरा प्रान पिआरा । बरख अमृत धारा । को कहि पारा रूप अपारा । सुर नर मुनि गन हारा । अलख अखारा । तन मन वारा । धरनी दास बेचारा ॥ १८४ ॥ मै साधु की संघति येति

संधै बिसारी । न आदरै न छरखै अमर बनाही गारी । चाकरि चर्ही न अवर गौनन बोलहारी । भिच्छा न बनीज जानौं कौड़िन भिखारी तीरथ तपौ नवौ जपौ न जप भारी । पूजौ न पखान करौं नेम न अचारी । तंत्र मंत्र मन न भावै अवखध न धारी । जीवन न हरष अमर नहि मारी । धरनी धीरज करि हरि व्रत धारी । परिहरि कर्म धर्म संसारी ॥ १८५ ॥ मैं राम की अमल मैलौ अमलौ रे भाइ । जो अमल पिआवै कर ताहि की दोहाइ । छ्यु मगु चिकनौ चलत बिछिलाइ । सत जन चरन पकरि संच पाइ । नाहि मोरा माता पिता भाइ ना भउजाइ । नाहि मोरा धाइ लागि दुधवा पिआइ । नाहि मोरा जोइ जेवाइ पंथिक पथाइ । देखो दुनिआइ साधो झुठि है सगाइ । जो बुझै सो जुझै अनबुझ लपटाइ । धरनी चढ़े रन बाजन बजाइ ॥ १८६ ॥ काआ झाँटि चढ़ि देखना मन मानीआ इआर । सुखमन सिढ़िआ सुधारि रे । लागत परम सोहावना मन मानिआ इआर । बाजै तब अनहद नाद रे । महल मझारे पैठिवो मन मानिआ इआर । अरध उरध के बीच रे सरवन सखी सो देखिबो मन मानिआ इआर । वस्तु परि पहिचानि रे । रैनि गइ पह फाटिवो मन मानिवो इआर । चोर चले पछताइ रे । मीन को मारगु जानिआ मन मानिआ इआर । अरु पच्छी को खोज रे । धरनी कहिआ नहीं मन मानिआ यार । जाने जो मरहम होयगि ॥ १८७ ॥ बहुरि पकरैबो जी । चेतहु मन चित लाए ।

कृष्ण बचन मुख कह्यो सारं गीता पढ़ि देखो। भव पखदेह अध्या ताहि उपर तु बिसेखो । मूल उपर तर डाढ़ है अति अबिचल अभिनेस । ताकी अस्तुति करि करि थाके ब्रम्हादिक सुर सेस । सोइ कह्यो चहु बेद भेद बिरले जन पावो । जाके पुरन प्रेम ताहि गुर पंथ लखावो । भजन बिना पहुचे नहि सब ते ऊचो धाम । कर्म फंद छुटे नहि कोइ कोटि खरच करी दाम । सोइ गाइत्री कहै मन्त्र मुक्तावली सोइ । सोइ कह पदुम पुरान आनन्दहु कैसे होइ । लहर पुरान कुरान मे नौ व्याकरन बिचार । पढ़ि पढ़ि पंडित भए परि कोइ न सके निरुआर । ध्रुव नारद बलि व्यास बिदुर प्रहलादे ठानी । सुखदेव रामानन्द नाम देव गोरख बानी । सांई कबिर कालु गह्यो सोइ रैदास अधार । चतुरभुज नानिक सैना धना संत सकल भए पार । चारिहु जुग है सोइ सकल उर अंतर बास । धरनी मन बच कर्म न धरे ताको बिस्वास । दीन देआल दया करि मोही भवो मन मान । गुर ते दुरि नहि नावरी हो जगमगात बरइ बान ॥ १९८ ॥ सेवा धम साधु की परिहरि मन अभिमान । साधु शब्द सुनि स्रवन सुआ सुकदेव कहाए । साधु वचन सुनि ह्रदय प्रगट प्रहलाद बचाए । केवल साधु समाज ते अचल भए ध्रुवराज । साधु कृपा ते राखु सभा मे द्रौपद सुता की लाज । साधु दियो उपदेस आतमा जैदेव जागी । साधु बताओ भेद भरथरि भय बैरागी । साधु प्रताप बिराजियो गोरख उपजो ग्यान ।

पारथ समर किये संत संगी अमर भए हनुमान । साधु की पारस पाए नाम देव गोबिन्द गावो । लागी साधु संदेह सिधाए साधु चरन चित लाइवो । नाभिक पूजी आस । सेना साधु को गोह न किन्हो मोहन भए है खवास । बड़ भागि नर सोइ साधु महिमा जिन्ह जानी । साधु की संगति पाए तरे भवसागर प्रानी । साधु दया दृष्टा जा पर भइ ताको जीवन सार । धरनी ध्यान धरो ताहि को निसु दिन बारमबार ॥ १९९ ॥

राग छुटा ।

(आलसु मोहि)२ बहुत बिसारी । जय ते गवन कीयो मोरे प्रीतम बहुरि ना सुरति संभारी । बारह बरख बाला पन बीते अब सखु बात न भारी । कबहु की चलत परे पशु नीचे तब गति बाबनि हमारी । तुम प्रभु नागर सभ गुन आगर हम धनी नारि गंवारी । दीजे दरस परस परसोतिम धरनी धनी बलिहारी ॥ २०० ॥ मन बसु रे अगम अटारी । मनि जहाँ बरे दीप देवस ना राती हृदय कमल निरुआरी । आतमा लहरि उठे जेहि सरवर अलख पुरुष मठ धारी । नव नाड़ी को हार नोरी भोलावो सुख मन तारी । अनहद नाद नगारो बाजे गगन गरज धुनि भारी । संपत पुरा परब्रह्म बिराजे ध्यान धरे त्रिपुरारी । धरनी शब्द स्रवन कर सुरख ना तर छनेउ कुठारी ॥ २०१ ॥ तेहि देस बसंतहि खेलना । ताहि देस बसी जहाँ राति दिना नहि होइ । जहाँ धरती नाहि अकासा । नहि

अग्नि पवन परगासा । जहां सूरज चन्द नहिं तारा । बिनु दीपकहि उजियारा । जहां बिनु जल कमल फुलाना । तहां मन मधुकर अरुझाना । जहां अधर अखंडित सोहै । तहां भृंगी मन मानस मोहै । एक पंखी है बिनु पंखा । तहां मोती भरहिं असंखा । जहां चमके बिजुली रेखा । तहां वस्तु अदेखि देखा । जहां कर्म धर्म नहिं पापु । जहां जपि लेहु अजपा जापु । धरनी ताको पूरन भागा । जाको उर उपजो अनुरागा ॥ २०२ ॥ एक सरवर सो मन माना । जाको सुर मुनि करत बखाना । जहां षोड़श षोड़त झारी । तहां सोन सरोवर भारी । अति विकट न सूझै बाटा । बिनु गुरु गम लखि न घाटा । अति निरमल जल अवगाहा । बिरले जन पावहि थाहा । तहां कीच सेवार न कीरा । अमृत जल ताल न सीरा । वोहि सरवर जाल जब पावै । तहां तन मन ले नहवावै । तहवां जब जाए नहाना । तब आवागवन नसाना । जहां धातु पाखान न काठी । एक मांझ मझारि जाठी । तहां बास बसे बैरागी । धरनी ताको लव लागी ॥ २०३ ॥ काहु कहत नहिं बनि आवै । जाको पुरन भाग सो पावै । गुरु गम एक द्वारे उबरु । तन्हा देखो अगम सुमेरु । मनि दीप बरे बहु बीरा । एक उपर नाचै मोरा । एक वृक्ष बहु बिस्तारा । जरि उपर है तर डारा । तेहि छाल न पात न फूला । फल एक अमिय जाहां मूला । एक सार गहिर गंभीरा । तेहि बेरा नाव न तीरा । बिरले जन पावहि पारा ।

सो तो बहुरि न उतरनिहारा । सुख मूरति सुन्दर सोउ । निरजिउ कहो जिस जीउ । तेहि देखि मगन मति मोरी । धरनी बरन पेक जोरी ॥ २०४ ॥ एक हुप कोट सोहावे । जेहि सातो दीप समावे । बहु खंधक बहु दरवाजा । गढ़ भीतर है एक राजा । गुरगम बिरले जन जाइ । दुति देखत रहत समाइ । एक बाभन नव गुन धारी । वे वो अच्छर पढ़त बिचारी । वोहि अच्छर भेद जो जाना । ताके बेद नहि मन माना । सोइ सांचा मुसलमाना । वोहि हरफ़ हक़ीक़ति जाना । जौ पै माने मनहि बिचारा । धरनी राखे सीस सिपारा । अभिअंतर सुरति सनीधा । तहां ठाढ़ रहै एक सीधा । अति रूप अनूप सुधारी । धरनी तिन्ह की बलिहारी ॥ २०५ ॥ चित चिन्तामनि को चेरो । अबहि नहि भावे बहुतेरो । एक हिन्दु न मुसलमाना । पहिचानतही मन माना । मपुरा बिनु दाम बिकाना । तहां बिनु बार बाजन बाजा । बिन पायन निरत न छाजा । बिनु जिभे गावत गीता । बिनु अस्त्र महा अरि जीता । निरखो जिन्ह बिनहि दुआरा । बिनु दीपक भव उजिआरा । बरखे तहां अमृत धारा । कोइ जानेगो जाननिहारा । सोवत गगन मण्डल मझारा । सबहु ते रहत निनारा । तहां पुरन ब्रम्ह बिचारी । धरनी सरनागत धारी ॥ २०६ ॥ (बहुरंगी राम हमारा)२ । सो तव संतन्ह प्रान अधारा । ध्रुव को दीन्ह राज अखण्डित हरिनाकसहि हिये फारा । दुसासन की गर्व

मैटावो ओसर लागु अपारा । द्वारावति को मन्दिर फैरा ।
पछिम किन्ह दुआरा । पण्डित को परिपञ्च न लागो बनिआए
बनिजारा । मोरधुज कह किन्ह बासवटी देह चराएउ आरा ।
मेटत जनि जैदेव के आछर सोनि के पानी ढारा । तिलोचन की
बिरति अघावो गनिका गुन न विचारा । दुरबासा की फिरि
पढ़ावो अंबु रिखे दरबारा । पण्डो से घर घंट बजाए सेनि
सरूप संवारा । चना धना के खेत जमाए गहि गजराज
निवारा । पीपा के तन ताप बुझावो छाप दिवो टकसारा ।
अलल भक्त को फल लेआवो भुइ पहुचावो डारा । जम
रैदास प्रतज्ञा राखो साखी सभ संसारा । समुझि सदन की
काज सुधारो चलि भवो दैत नगारा । बाइ को बिख अमृत
किन्हो नरसी सो बेवहारा । धरनी अपनि राम नाम पर
तन मन जीवन वारा ॥ २०७ ॥ करता राम हम धनी सुतली
धवरहर हो दहु दिस रखवार । सपन कौतुक भैला तहा
एक पुरुष प्रगट भैला हो कैसल से पलंग मझार । बोलिआ
बोलत सुबोलिआ हो शब्द परल मोर कान । नएनन्ह देखल
नजरि भरि हो सुरत हरल मन मोर । जस जानेला तस
सानेला हो कलबल कछु ना सोहाए । कहउ जी जाहि
मन भावेला हो मोहि नहि अवरि सोहाए । धरनी धनी
धन अति भैली हो पुन अति सेहो पतिआए ॥ २०८ ॥
हम उमतैली हम उमतैली हम उमतैली भाइ रे । हमरा
जनी मति कोइ लागो जाके चित चतुराइ रे । घर के अम्मा

शुत छोड़ि लागत जो करि सबै निआइ रे । बछ अमृतास माहि मैं जानल जी ना अजहु पतिआइ रे । जी उमतइले गाल देख अधीरा डैदेख मीरा आइ रे । जी उमतैले संग घनेरो, अगिनिरा गनि ना सिराइ रे । धरनी कहै सुनो भाइ संतो सुनो सकल दुनिआइ रे । अवर का भले मदै ना छिछुवो जब जगदीस सहाइ रे ॥ २०९ ॥ हो बंगालिनि बसो बंगाले धुर पुर प्रत आवो रे । जो नर नारि प्रचारि मिलै ताहां शुभ आसन चलावो रे । प्रेम सनेह पानी पढ़ि डारो जुक्ति जरी घसि प्यावो रे । नैनन्ह फेरि हरो मन ता को बोलि वचन अपनावो रे । गुआ पान खवाय तुरित तहां भवजल नदीआ सुखावो रे । सिध सरीखे जो होय आवेगा डर करि दिखरावो रे । तौ सांची सत गुर की सेवकिनि गगन को तार तोरावो रे । धरनी धनी अति बिरह बियोगिनि योगिनि सबहि कहावो रे ॥ २१० ॥ काहि से कहो कछु कहिबो न जाए । चरन सरन सुमिरत जिन्ह दिन्हो बिधु मसि बिपरीत अंक बनाय । बिनु बाजन अति शब्द गहागहि सुनि सुनि पुनि पुनि अधिक सोहाय । त्रिकुटि के ध्यान पेहान उघरि गयो जगमग २ जोति जराय । सनमुख रहत सलोनी मुरति तेहि देखि २ जिअरा ललचाय । धरनी दास तासु जन बलि.२ जै रघुनाथ के हाथ बिकाय ॥ २११ ॥ हरि हरि ऐसे प्रीतम कैसे बिसराइआ । जिन्ह प्रभु जलहु ते जुक्ति बनाया । हीरा रतन मनी मानिक काया । जठर अगिनि तसु जरत बचाया ।

पहिले पहर जिन्ह खडु अडाया । दुजे छिखे रस खोरि पिआया । तिजे पहर जिन्ह पलटि जगाया । जिन्ह प्रभु उर अनुभव उपजाया । मोह माया ममिता बेगराया । दह दिस प्रगट भइ है जाकी दाया । गुरु प्रसाद शब्द एक पाया । मनसा कर्म ताहा मन ठहराया । धरनी साधु सहृति गुन गाया ॥ २१२ ॥ डगरि चललि धरनी मधुरि नगरिया । बिच साँवला मतवलवा हे ना । अटपटि चलनि लटपटि सौ बोलनि धाय लगल अकवरिआ हे ना । साथ सखी अस्व सुखहु ना बोले कवतुक देखि भुलानि हे ना । मद कीरि बास लगलि मोरि नकिआ जाय चढ़ल ब्रमंडे हे ना । तबहि ते सेहो धनी भैलौ मतवरिआ मद बिनु रहल ना जाइ हे ना । प्रेम मगन तन गावे जन धरनी करिलेहु पंडित बिचार हे ना ॥ २१३ ॥ देखो भाइ हृदये बिचारी । पर्म पुरुष परमेश्वर परिहरि अवर न कोइ हितकारी । बहुत जन्म जरा जनमि जाहां ताहां समुझि परीहै थहि पारी । का सौ मातु पिता दुहिता सुत बन्धु बहिनि घर नारी । भावै करो कोइ आकी अस्तुति भावै प्रगट पारै गारी । धरनी साधु संघति सर्व पावन नहि भावत संसारी ॥ २१४ ॥ वाहि मिसि कोइ चार हमारा । जो प्रभु आदि अंत रखवारा । ताकी छाहि न करत चाकरी जाकी दुनिआं सारी । बिनु घोरे असवार सिखावै वे जामिन इतबारी । बांध बाल भुआरी रैयति बिनु हथिआर सिपाही । हुकुम करै सि टरै न कैसहु

जुग जुग पादशाही । बैठा आपु तमाशा देखै आठ पहर दरबारा । सभ के अंत गति को जाने ऐसा परिखनिहारा । खिजमति जाहि जहां जाहि लाएक ताहि तहां फ़रमावे । सुरति करे न ग़ाफ़िल जीव को चौरासी पहुचावे । देत इनाम नाम जो जाने ताको काज सुधारे । अपने हाथ हाथ धरि ताको तखत उपर बैठारे । हिन्दु तुरक दुवो हम बूझो समुझो वेद पुरान कोराना । धरनी दास आस सब छोड़ि साधु संघति मन माना ॥ २१५ ॥ साधु सकल संसार सगाइ । भरमित भुलि परि दुनिआइ । सोचि बिचारि नारि नर देखो कौने काहि सो नाता । प्रीति करे सो पिता कहि जे मते मिले सो माता । भाव करे सो भाये कहि जे बहिनो कबहि न बिसारे । बिलग न होय सो बेटा बेटी बहु अवचन प्रति पारे । दया करे सो दोस्त कहोजे ग्यान धारी परिवारा । जानति रीति कुल मुल जरन बिधि कवन करे निरुआरा । ग्यान लखावै गुरु कहि जे चित लावे सो चेला । धरनी देह धरे कहि आवे ना तस सभे अकेला ॥ २१६ ॥

सहाना ।

ध्यान धनी को जो करै हरिदम धरि दिल माही । पार तरै बिनु नाव री दरिआ बुड़ै सो नाही । पवन पवारि सके कहि अब नहि अग्नि जराये । कोइ न करे जो रावरी काल सकुचि सिर नावे । तखत तमासे को अमोर खत खरा अपमाना ।

दुलह दिन दूनि सदा निस दिन सुनत सहाना । बोले शब्द सोहावना सो साँच के माँचे द्वारे । तासु बराबरि को तुलै धरनी दास पुकारि ॥ २१७ ॥

बिरह मासा ।

चढ़त चलहु मन मानि निज जहाँ बसै प्रान पिआरे हैं । हिलि मिलि पाँच सहेलरि अब पंच पंच परिवार हैं ।

छन्द ।

परिवार जोरि बटोरि लीजै गोरि खोरि न लाइए । बहुरि समय सरूप ऐसो न जानि कब पाइए । बैसाखहि धनि धनि धनि नख सिख करहु सिंगार हैं । पहिरहु प्रेम पटम्बर सुनि लेहु मंत्र हमार हैं ।

छन्द ।

सुनि लेहु मंत्र हमार सुन्दरी हार पहिरु एकावरी । छोड़ि मान गुमान ममिता अजहु समुझो बावरी । जेठ जतन करि कामिनि जनम अकारथ जाए है । जोबन गरब न भुलहु जनि करि लेहु कछुक उपाय हैं ।

छन्द ।

करि लेहु काछुक उपाय नातरु दुख पाय फिरि पछताय हैं । जब गाँठि को गरथ सो छुटि हैं तब ढुंढती नहि पाइहौ । अजहु असाढ़ समुझि चित यहि दस दिन न कोइ है । अरबुद खरब दरब सब सपन साथ नहि होय है । अपन नहि काछु

सपन सम सुख अंत चलिहौ हारि कै । मात पितु परिवार पुनि तोहि डारि है परिचारि कै । सावन सकुच करहु जनि धावन पठवहु चोख है । बहुत दिवस भटकत भवन में अब जनि लावहु धोख है ।

छन्द ।

जनि धोख लावहु चोख धावहु जब कहावहु पिव की । तब कोटि करत उपाय चिंता मिटिहै नहि जिव की । भामिनी भरलि जोबन तन भजिनिहु भादौ मास है । पतित रहहि निजु पति बिनु होइहै जग उपहास है ।

छन्द ।

होइहै जग उपहास मानि निज तुम जन कारी । समझि नेह सनेह स्वामी हरखि लै हृदये धरी । आसिन बिरह बिलासिनी मिलहु कपट पट खोलि कै । जादिन कन्त रिसाइहहि तब मुखहु न बोलिहैं ।

छन्द ।

मुख बोलि नहि कछु आइहै भरमाइहै घर घर घरै । तब कहाँ कूप खनाइहौ जब आगि छप्पर पर परै । कातिक कुसल तबहीं सखी जबहि भजहु पिअ जानिहै । बहुरि बिछोह कबहि नहि होय तब जुगहि जुग रानिहै ।

छन्द ।

जुगरानि होइ यहु जानि जीव धरि दानि कोइ न दुसरो । चित सारी खेत बिसारो अपनो बिज डारत ऊसरो । अगहन

उमर दिखेउ सखी हम अबला अवतार हैं । जतन कार तबनि न कछु कठिन कुटिल संसार हैं ।

छन्द ।

कुटिल हुए ससार अस जिव जाउ जोबन अव सही । निजु कन्त जब अपनाइहैं चलि आइहैं घर बैसही । पूस पलटि पिआ आएउ परगटाइ परम आनन्द हि । घर घर सगरे नगर सुधि मिटउ दुसह दुख देह के ।

छन्द ।

दुख मिटो बन्द मिटो फन्द सभनि छुटाइआ । पुलकि बार बार मिलि परिवार मंगल गाइआ । माघ मुदित मन छिन छिन दिन दिन बढ़त सोहाग हे । नैहर भरम भटकि गौ सासुर संक न लाग हे । नहि लागु सासुर संक सुनु सखि रंक जसु राजा भयो । निजु नाह मिलिवो बांह स्टव है सकल किल बिख दुरि गयो । फागुन फरेउ अमिअ फल भार उसल दुख पात हे । निस दिन रहत मगनही ऐसे सुख कहिवो न जात हे ।

छन्द ।

कहि जात नहि सुख माहा सुरति सुरति जहां ठहराइआ । सुनि बिमल बारह मास को गुन हास धरनी गाइआ ॥ २१८ ॥

राग मरसीआ।

दोहा।

पानी तें पैदा कियो सुनु रे मनवरे। ऐसा क्ससम खोदाय हहा

भयौ दस मास कौ सुनु रे मन बौरे । तर सिर ऊपर पाए सुनु रे मन बौरे । आंच लगी जब आगि की सुनु रे मन बौरे । आजिज होय अकुलाय । कौल कियौ कछु आपनी सुनु रे मन बौरे । ना कछु आंख दिखाय अब बैठे करिहौ बन्दगी सुनु रे मन बौरे । जौ पायवौ छुटकाय जनु आए जंगल परा सुनु रे मन बौरे । भरमि रहा अरुझाय पर कौ पौर न जानिआ सुनु रे मन बौरे । नाहक छुरिआ चलाय बांधि जंजीरे जाइहौ सुनु रे मन बौरे । बहुरि वोहि सजाय संत गुरु का उपदेस लै सुनु रे मन बौरे । दोजख दरद मिटाय मानुख देह दुर्लभ है सुनु रे मन बौरे । धरनी कहत समुझाय औ सुनु रे मन बौरे ॥ २१८ ॥

राग करखा ।

जन जगत आजित हरिहित सोई । तासु सरवरि न करि सकै कोई । कर्म नामान गढ़ि प्रेम मैदान चढ़ि ध्यान गुरु ज्ञान संधान आवो । सहज समसेर गहि सांगि संत्याल द्रसि पर संतोख धपि उरध धावो । छोड़ि पितु मातु परिवार सुत बंधु प्रिये मया मद मोह बंधन छोड़ावो । भेख लै भरम तजि साधु संघति मिलो कवल दल लगमि अनुराग गावो । वेद विधि विसरि लौकिक लज्या भजि पाप अरि पकरि पैकर पिन्हावो । भवो निरसंक निर वैर सब जीव ते ब्रम्ह ब्रह्मंड भरि पुरि छावौ । संत जन सुरिमा लरत पगु टरत नहि देव तैतिस

दुंदभी बजावो । दास धरनी कहत परम आनन्दवत जाय जगदीस को सीस नावो ॥ २२० ॥ (घट घठ जोगिआ) ९ घमंड करे हो । जटुआ न कटुआ न गेरुआ बिभुती । सखि ना परत वा कि गति अपधुती । जोग करत कहु कहु रे भोग । कतहु बोखद भैला कहु भैला रोग । बरत न करत न तिरथ नहाये । रहत निरंतर अवद न जाये । कतहु भैला भूप कतहु भिखारी । कतहु पुरुख भैला काहु भैला नारी । कतहु पंडित भैला कतहु अजान । कतहु कृपिनि भैला कहु देला दान । धरनी कहत जोगि बरनि ना जाइ । जाहि भैला गुरुगम सेहो पतिआइ ॥ २२१ ॥ कोइ एक गुरुगम करतप । पंडित डंडित हाथ न जोरे समुझावे समुझौनी । चित चढ़ि सार झारि झटकारे ज्ञान खरी मन भवनी । बिनु जिव दया न बैठन पावे क्या रोझना क्या रोझनी । बिनु कागज बिनु कलम छुरि बिनु बिनु मसि अंक बनवनी । शब्द की साट लिये हनि मारे सहै सो लहै लखौनी । चारि बेद कथो शास्त्र नवो व्याकरन अठारह पौनी । मनमुख निरखि निमिखि एकमहिआ लै धुर लै पहुंचौनी । जानि जगत बोहदारी दारी कर्म कांड अरुझौनी । धरनी दास पढे संत संघति बहुरि न आवन अवनो ॥ २२२ ॥ एक जति मन मोहन हो । लोचन औम अधीन काल चित जतन वाको गोह न हो । माला तिलक जप नहि मुद्रा अंग बिभुति न सोहन हो । बरखा चित टखल नहि व्यापे सितलता कछु कोहन हो । खात न

पिअत चलत नहि बैठत सोअत पल एक बोह न हो । ठाढ़ी रहत सदा निसु बासर बिरले जन मगु ओह न हो । त्रिबेनी के पार निरेखो प्रगट प्रेम परोह न हो । धरनी मन बचकर्म न मानी आदि अंत नहि छोह न हो ॥ २२३ ॥ घर सहजी भयो उजिआरा । जागो भाग भभरि अघ भागो जबहि मिलो गुरु द्वारा । परम सुदिन दिन भयो है हमारे पायो है प्रान पिआरा । मेटि त्रिमिर भरम भहरानो बज्र कपाट उघारा । हृदये कवल बिच सुरति मनोहर तहां तन मन धन वारा । मन मांखी लुबुधो मधु माधौ नेकुन होत निनारा । धरनी एक छबि बरनि न आवै जानैगो जाननिहारा ॥ २२४ ॥

राग बेलावर।

जब हरि हित सभै हितकारी । पसु पछी जल जंतु जाहां लो थल सुर सकल नर नारी । जिन त्याहिक बन घन घर बाहरे अग्नि पवन जल परबत भारी । धरनी अकास सुर ससि निस दिन मन बच कर्म न करत रखवारी । दुत भुत गरन्ह चित्रगुप्त जम धरमराय अरु आदि कुमारी । सेस सुरेस गनेस गनत गुन बेद बिरंचि बिष्णु त्रिपुरारी । सभ मे सोइ सकल ताहि मे संत अनन्त कहो जुग चारी । धरनी कहत सुनो भाइ संतो मोहि परतीत परो येहि पारी ॥ २२५ ॥ (कुसन कहे बिनु देखी)२ बात । अनदेखो की कावन चलावे देखी कहो जगु नहि पतिआत । अनमोले ते हुहे अमोले मोती

बोल मोल ठहरात । पुरो परै तबहि पर पुरो पाछ परै उलटि लपटात । जब मुख मूदि रहों तब रहै नहि जैसे थिरिछ की पाके पात । बोले बाद बिबाद बढ़तु है ताते मो मन मधन सोहात । बिनु चखु निरखि बिना मुख बोलै बिनु सरवन सुनि हिये हुलसात । ऐसी रहनि गहनी जिन्ह पावो धरनी दास तासु बलि जात ॥ २२६ ॥ धन सांचा भाइ गुरु हमारा । धन जेहि मन आवो इतबार । धन ताकी मातु पिता परिवार । गहि बैराग तेजै संसार । धन जाके ह्रदये हरि बिस्वास । धन जाके प्रगटि जोति प्रगास । धरनी बहु दिस धन धन होय । सत गुर सरन भजै जो कोय ॥ २२७ ॥

राग परीछन ।

बर एक सुंदरि बरनि न आवइ देखलों मै आंगन मांभ हे । हिअरा हरख भैला जिअरा जुड़ाइ गैला दिअरा लेसन जनु सांभ हे । आइ हि माइहि पारपरोसिनि करह मंगल चार है । एक हाथे धरहु सोने के लोढ़वा दोसरे रुपहि कर थार हे । मुठिअन्ह भरि भरि मोतिआ के अछत दहुं दिस देहु छितराइ हे । तुलसी चनन तिल से बन्दन दहि देह मुख लपटाइ हे । अरिछि परिछि बर कोहबर ल्यावहु पइति सता बहु सासु हे । धरनिस्वर संगे ओहि धनि पौढलि जनम सुफल भैला तासु हे ॥ २२८ ॥ हम अंधरा की अंधरा लोग । सो अंधरा जाके संसै सोग । सो अंधरा जाके जिव को न दरदा । अपनी बाट कांटे जिन्ह

बोआ । सो अंधरा जिन्ह भक्ति न किआ वार्म भार अपने सिर लिआ । सो अंधरा जाके राम ना सुझे । धरनी वचन साधु जन बुझे ॥ २२९ ॥ दुरमति तेजहु भजहु देवि दुरुगा । छेरी भेरी छागर महिखा न मुरुगा । काआ घर भीतर कलस धरु जानी । सुमति सकल पञ्च सुरति सो पानी । रचि पचि ज्ञान गोबर बहु फेरा । जिव को दया जव बोअहु सवेरा । प्रेम प्रगास उपर धरु दिआरा । दुरि जनि रमहु रहहु वाके निआरा । धरनी कहत जे हो ऐसन विदानी । तब ता के मुंह मुंह बोलसि भवानी ॥ २३० ॥ हरि जन को गुन सुनहु रे भाइ । नख सिख तन मन सितलताइ । सोअतहु तो जौंकि जागु जागा । पांच पचीस उलटि संग लागा । संत गुरु बचन भवो दृतवार । हरि भीतर बाहर संसार । दुज द्वार कबहि नहि जाइ । घरि घरि निरखि निरखि हुलसाइ । धरनी कहे सुनो सम कोइ । जो हरि करे तो ऐसा होइ ॥ २३१ ॥

राग कांधरा ।

अब मोहि जानि परी दिन नीको । नैनन्ह देखु दरस संत गुरु को । स्रवनन्ह सुनो संदेसा पी को । तुलसि माल बिराजि उपर भाल धरो हरि मंदिल टीको । साधु संघति पंघति मिलि बैठे छुटि गवो बहु बंधन जिअ को । मेटि मेद भरम अहंकारी वेद लोक मत मैगवो फीको । उपजत उर आनन्द अगिनि ज्यो पुनि पुनि पुट परे निसि को जी को । नख सिख

अंग लिखै जिखउतरी रोम रोम रस भरी अमि की । धरनी तासु चरन चित लावो श्री साहेब असमान जमी की ॥ २३२ ॥

राग चांचरी।

(निरगुन औ गुन रहित) २ कवन विधि पायो हो । सुरति मनोहर देखि सुरति संग लागी हो । उर उपजी अनुराग आतमा जागी हो । मोह मया ममिता मद की छसि भागी हो । कुल कर नाता तोरि उलटि पंथ लागीला हो । भरम सकल भहराये साधु मिलि बैठे हो । पांच जनी संग लाए महल में पैठी हो । पावैं जिव बिस्राम घरहि घर छावै हो । बिनु कर ताल बजाइ बिना मुख गावै हो । डोसी सहज सुभाव निरंतर भावै हो । नहि अवरन्ह ते हेतु न गैर बढ़ावै हो । प्रगटे जोति अनुप नाहि काहि आवै हो । गनै न राजा रंक निसक जनावै हो । चहु दिस चर्चे सुभास दास जग जानो हो । जोति में जाति समानि पानि में पानी हो । तरि गए संत अनन्त केते जन भाखी हो । देखो पोथि बिचारि निगम है साखी हो । बहुरि ना आवै जाइ अमर जुग चारी हो । गावै धरनी दास सुनो नर नारी हो ॥ २३३ ॥

प्रभु कि माया सबहि नचावै । देव दइत रिखि राज मह्या मुनि अवर की कवन चलावै । जौ नट बन्दर को गर बांधि बार बार फिरावै । तुकी सुकी तव भिभिकोरै सुकी तो छवि चेतावै । भुख प्यास दुख दन्द बिआपै सुखन आनि पिन्हावै ।

थेइ थेइ करि डंफ बजावै लोग तमासे धावै । आंधे मरे सरे गए प्रानी को कहि केहि समुझावै । धरनी अवर उपाए बने नहि छुटे जो राम छोड़ावै ॥ २३४ ॥ भाइ रे संत सिपाही ताके लोक अनेग सराही । संत सरोखे बसत महाजन जाके जग मे रसति चलावन आए । शब्द लिए फरमाना । निरखे आए शहर के वासी तिन्ह शब्दहि पहिचाना । जल मे पुल पहार भठावो जंगल जारि ते जारो । धरनी काबिल राह सुधारो डर नाहि चोर लुटारो । संघति जोरि चढ़े सतमारग भव बन्धन ते छुटे । बिगते बपुरे बिनु सतसंगति देव मिहारन्ह लुटे । भक्ति बिना भव पार ना पावै धरनी कहै परचारी । राजा रंक तुरुक हिन्दु जत सुनो सकल नर नारी ॥ २३५ ॥ मन रे ते कवन करे रजपुति । गहा गहा गहि चोल नगारो कान्हा रहो है सुति । पांच पचीस तिनि दल साजी अवरो सेन बहुतो । अब तोहि घेरि करन चाहत है जो पिंजरा मे सूतो । सुख परिवार लगी जग परिजन जौ तक नित न हूतो । परिहरि परि पंचिन्ह संघति अंतर गहै अपभूतो । राज समाज चामर पद पैहो छोड़हु प्रबल प्रभूतो । धरनी सोचि बिचारि निरखि लखि नाही न अवर सपूतो ॥ २३६ ॥

आरती प्रसंग ।

(श्री गुरु देव की आरति कीजै) २ । गगन मंडल अमृत रस पीजै । तिनि लोक प्रगटित जाकी माया । सभ घट

जोति सरूप समाया । मन मानी मुरति अविनासी । छुटै आसन छुटे चौरासी । देखो ह्रदए समुझि सब कोइ । जा पर दया भया गुरु सोइ । धरनी मत्त जुग प्रगट पुकारा । मुख के शब्द चौदहें निस्तारा (१) ॥ २३७ ॥ श्री गुरु देव की आरति वारी । मिटि गए तिमिरि उदै उजिआरी । जोग जुक्ति जप तप नहि कामा । सहजे सुमिरो वारता रामा । सो जन काहे की तीरथ धावे सकल तिरथ घट सुघट नहावे । ब्रह्मादिक जत कहिए देवा सो सभ निरखि निरंतर सेवा । तजि दुरमति भजु साधु के सरनी । मंगल आरति गावै जन धरनी (२) ॥ २३८ ॥ मंगल आरति परम निरवाना । सभ घट पुरन पुरुख पुराना । आरति ब्रह्मा विष्णु महेसा । सारद लछिमी गउरि गनेसा । पुनि आरति चउबिस अवतारा । तेतिस कोटि देव गन तारा । संत अनंत रिखे मुनि वेदा । तिन्ह की आरति करु निरभेदा । सभ जीवन ते बैर विसारा । धरनी सहजे भव निस्तारा (३) ॥ २३९ ॥ आरति राम नाम को करिए । सहजो आनन्द दुन्द भव तरिए । जासु नाम निसचल ध्रुपराउ । जासु नाम प्रहलाद बचाउ । जासु नाम नाम देव मन धीरा । जासु नाम गहि दास कबीरा । जासु नाम गोरख ब्रह्माइ । जासु नाम सभ संत सहाइ । जासु नाम जुग जुग परगासा । धरनी धरे तासु बिस्वासा (४) ॥ २४० ॥ ताको करि आरति की जाको अरध उरध अस्थाना । घरि घरि पसु प्रभु निसु गाइब

सहजहि धरि धरि ध्याना । आदि पुरुष जाहां रहत निरंतर साहां ना बिधि बेवहारा । ता की जोति सकल घट बरत अगमग दृगम दुआरा । जाहां ना दुजा देवा छेद पीर पैगम्बर सोइ । तीरथ मंडप मकान मस्जिद राति दिना नहि होई । सोइ गुरु पीर राम रहीमा ना देखो हृदए बिचारी । सोइ एक मुल सकल जग साखा सोइ पुरुष सब नारी । जाहि मिले चौबिस अवतारी ताहि मिले सब संत । धरनी चरन सरन मन बच कर्म जानि भजो भगवंत (५) ॥ २४१ ॥ मन आलसि करु आरति जाके पार ब्रम्ह है नामु काया थार खुधा दीप बिसुना तेल सो डारी । बाती पट कपट फारि कै ज्ञान अग्नि पर बारी । अक्षत अभिमान भान तोरि तामस पाती । चवर चित सुढारि ढारिऐ दिन राती । प्रिति को पुहुप प्रान पान चोप को चन्दन गारी । धीखा धूप घंटारो सांच शब्द भारी । बाजन करि पांच बाए भोग भक्ति भाउ । धरि बिस्वास धरनी दास आनन्द आरति गाउ (६) ॥ २४२ ॥ मन बच कर्म मोरि रामजी की सेवा । सकल लोक देवन को देवा । बिनु जल जल भरि भरि नहवावे । बिनु आसन आसन पधरावे । बिनु चन्दन चनन घसि लावे । बिनु भै सुंदर धुप धुपावे । बिनु घंटा धरि घंट बजावे । बिनुहि चवर सिर चवर डोलावे । बिनु आरति अछि आरति बारो । धरनी तहां तन मन धन वारो (७) ॥ २४३ ॥ राम प्रताप सुनि ध्रुव जागि । देत अभै पद बिलम्ब न लागी । बालक ध्रुप

प्रह्लाद कुमार । अजहु अचल पद वंश न आर । नाम देव भगता दास कबीर । गउआ जिआय तोरि जंजीर । जाहां जाहां राम प्रताप सहाय । ताहां ताहां काल बल छल न बसाय । राम प्रताप मिटै दुख दुन्द । आरति करहि विनोदा नन्द (८). ॥ २४४ ॥

भोग आरती ।

जिमै करो प्रभु अंतरजामी । भुवन भुवन चतुरदस स्वामी । सुरसरि चरन पखालित कीजै । चरनामृत सेवन्ह को दीजै । भोजन कीजै खटरस स्वादी । भत अनन्त पाव प्रसादी । तुम गति अविगति अगम अपारा । मै अति दीन अधीन बेचारा । जो कनिका पनवारा पावै । धरनी ध्यान लागि सो लावै (९) ॥ २४५ ॥ भक्त बछल जब भोग लगावैं । पंचामृत खटरस रुचि भावै । आदि कुमारि चौका सारै । चरन खटारै बेद बेचारै । ब्रह्मा बिष्णु महेसर देवा । कर जोरि ठाढ करै सब सेवा । आरति संत अनन्त बिराजै । सहजै शब्द अनाहद बाजै । धरनी प्रभु देवन को देवा । मानि लेत सेवक की सेवा (१०) ॥ २४६ ॥ भक्त बछल जीवहि जेवनार । तीनि लोक होय जैजैकार । सारद सेवकिनि चौका सारै । ब्रह्मा सोइ रसोइ सुधारै । नारद निरमल जल भरि ल्यावै । सिव सनकादिक चौर डोलावै । ध्रुव प्रह्लाद आरति गावै । नाम देव तहां संख बजावै । धरनी दास

दास को दास । मन बच कर्म जुठन को आस (११) ॥ २४७ ॥

धुनि आरती ।

औ जै प्रथम प्रमेस्वर परम गुरु दुतिय दुसतर तारन । त्रितिय त्रिगुन रहित कहित चित चोथि चेत चतुरभुजं । पचये प्रमानन्द पुरन छठये छोरम बन्धनं । सप्तमि सुमिरि सदा सिव प्रष्टमी अखंडित । नवमि नारायन निरंजन दसए दुरगति नासनं । एकादसए एक सर्व्व व्यापिक द्वादसए दुख मोचन । त्रिदसए लोक नाएक चौदसए चकाधारं । पन्दरहे पदुमासनं भगु खोड से खलु खंडनं । सतरहे संतन्ह सिरोमनि अठारहे अविनासिनं । उनइसए उर अंतरे भगु बिसए बिसंभरं । सुचित चित करि उचित भरि भरि रुचित मन बच कर्मनं (१२) ॥ २४८ ॥

मलराड़ राग ।

सुमिरु सुमिरु मन सिरिजनिहार । जिन्हि कइलो सुर नर सरग पतार । रवि ससि अग्नि पवन कइले पानी । जिआ जंतु
नि खानि आनि आनि बानि । धरती समुद्र बन पर्वत
। कमठ फनिन्द्र इन्द्र बैकुंठ कुबेर । गुरु के चरन रज
चढ़ाइ । जिन्ह लेले भवजल बुड़त बचाइ । देवता
बरनिलो कर जोरी । सेवा ले बिमानि अलप बुधि मोरी ।
लगि जगत भगत अवतार । मोरे त जिवन धन प्रान
। तिरथ बरत चारो धाम सालिग्राम । माथे चाथ

पुरनि करेलों प्रनाम । छोंटि बड़ि जिआ अनु कारा भगि भारी । बकसि बकसि लेबि ऐगुन हमारी ।

बिसराम ।

मथुरा की महरैआ भैआ गावत धरनीदास ।
मन बच कार्म सोहि मथुरा की आस ।

चौपाइ ।

एक दिन मोर मन चढ़ेला पहार । गाइ कै गहरि देखि बहुत पसार । अनगनित गइआ भइआ गनि ना भिराइ । दहुं दिस गोधन रहेला छितराइ । डागरि डिगरि कत कोसरि दोहान । अकरि बिकरि कत बहुत बिआन । बहिआ गभिनि कत सारिल हुनोइ । मन भरि भरि दुध गाइ की सिंदोइ । बाछी आछी आछी देखें । बाछावा बछिल । लेरुआ बछरुआ मगन मन खेल । लालि गोलि धवरी पिअरी कत कारी । कजरि सबरि कत कबरि टिकारी । कत सिंगहरी कत देखलि सुरेर । गहुआ परमार सभ मिकट मिरेर । तर कइले धरती औ उपर आकास । मथुरा चलेला तहां गाइ कै गोआस ।

बिसराम ।

उपजल घासि लहालही सीतल छहरि पनिवास । मथुरा ना देखल कौ हिटहरा चित मोर भइले उलास ।

चौपाइ ।

अब लागि ना देखल गइड़ी चरवाह । जसु मन परि गइथी

आवगाह । जल सींचि सींचि मलुआ रहैला मुरझाइ । तहि अवसर काहु एक मुरली बजाइ । मुरली सुनत मन भेलै खुसि हाल । रहलि भिछुका जग झांगइलि सुपाल । धुनि सुनि मलुआ उपर चढ़ि गेल । ताछावा देखल एक अद्भुद खेल । बिनु रबिमि ताहा सोभा उजिआर । रिमि झिमि मोतिआ बरिसु जल धार । गरजा सुघन घन सुनल सोहाइ । चहु दिस बिजुलि चमकि चलि जाइ । झरि झरि परेला सुरग रंग फुल । फुले फुले देखल भमर एक भूल । चक्र एक घुमैला उड़ैला एक साप । नहि ताहां कर्म भरम पुनि पाप ।

बिसराम ।

ताहां पर ठाढ़ देखल एक महरा अलन बरनि ना जाए ।
मन अनुमान करल जन धरनी धन जे छी सुनि पतिआए ।

चौपाइ ।

पाव दुनो पउआ परम झलकार । कुरहुर स्याम तन सामल हंकार । लमछर कैसिआ पतरि कारि छाव । पिअरि पिछवरि कटि बरनि ना आव । चनन के खोरिआ भरल सभ अंग । धार अमगनित बहैला जनु गांग । माथे मनि मकुट लटकि रहि लाल । झिनवा तिलक सोभै तुलसी के माल । निक नाक पतरि ललहु बड़ि आंखि । कुटम झारि एक मोरवा के पाखी । कान दुनो कुंडल लटकि लट झुल । दाढ़ी गोंछ मुतन जइसन मखतुल । प्रफुलित बदन मधुर मुसकात ।

ताहि छवि उपर धरनी बलिजात । मन काइले दंडवत भुइआ धरि सीस । माथे हाथ धरि प्रभु लिहल आसीस ।

विसराम ।

महरा हाथ बिकाइल मनुआ भइले महरा के दास । सभ दुख दुसह मेटा गइले हो साधु संघति सुख बास ।

चौपाइ ।

महरा के डिगर कहैला परचारी । देखहु चतुर नर ह्रदए बिचारी । जत जिआ जंतु तत महरा के गाइ । केहु जनि मारहु मइआ केहु जनि खाइ । इत जनि जान केहु मसला के बात । बुझला परिहै पुनि सोरंग तात । सांच कहै साधु जन झुठ कहै चोर । हातन्हि के सुख जनि फारहु पटोर । महरा के गइआ करिहैं प्रतिपाल । महरा करिहैं पुनि ताहि खुसिहाल । महरा के गइआ करिहैं जिन्ह खून । ताहि खुनि महरा करिहैं सकाचून । जइसन आपन जिव वोइसन परार । छाड़ चाम मास नहि मानुख अहार । धरि दया धर्म सुमिरि लेहु राम । काहे धन खोअहु तेजहु काहे धाम ।

विसराम ।

सांच बचन मन धरि लेहु प्रानी झुठ देहु फटकि पछोर । ऐसन समैआ नाहि पैवहु हो अब जनि लावहु खोर ।

चौपाइ ।

कदआ जो लागेला काहल कछु मोर । करि ना देखहु मन अपन अटोर । पानी के बुलबुला उपजहि बिनसाहि देह धरि धरि

सभ मरि मरि जाहि । अकसर चलन दोसर नाहि केहु । दिन चारि चारि सभ कारि कारि लेहु । छोड़नो अठारह दल छपन करोर । केहु ना लेगैले संग सैन बटोर । जिनहु कहल निज कुल परिवार । सेहु ना भइलै केहु संग जनिहार । गढ़ मढ़ महल बहलं हय हाथी । इत के करो बसु संग ना साथी । सोना रूपा अम्बर पम्बर हथिआर । केहु ना लेगैले संग सुद्रम मेकदार । देह गति देखत पटए निज आंखि । तेहि पर आनि बोलावहु साखि ।

बिसराम ।

भुइ मरकट मुठि अटकल हो तैसे भटकि रहेला संवसार । जिन्हि जिन्हि साधु संघति धइलें हो उतरि गइलें भव पार । महरा के महरैआ भैआ धरनी बरनि ना जाय। कहत सुनत सुख उपजेला हो भाव भक्ति ठहराय । एता महरा‍ई संपुरन ॥

पिण्ड पवारा ।

आदि अनादि जुगादि जुग करता अगम अपार। सुर नर मुनि गंधर्ब सब पार न पावनिहार । श्री गुरु चरन सरन मन बच कर्म जिवन प्रान अधार । प्रगट कहो कछु पिण्ड पवारा जस कछु जग बेवहार । तात के बुन्द रंधात जननी को देह ते उपजी देह । ता देहि को चारि अवस्था अंत होत पुनि खेह । बालकुमार तरुन तरुनापन तामें अव बृधा पन राउ । पुनि तांहा पांच जना रस भोगी एकहि एक न भाउ । किछु

छिन बिते चेत अचेते मातु पिता दुलराव । बोलन डोलन धावन लागी राज बालपन पाउ । रहसा रानी छिहसामैव । ज्वाल खवास बनाश्रा जैव । पसरी बाला पन को राज । काश्रा गढ़ किछु साज समाज । गरे हसुलिश्रा मटिश्रा हाथ । घुरा पैजनि चरनन्ह साथ । कान छेदावो सुन्नति कराय । अगुठि मुंदरि अंगुरिन्हि लाय । बांधी माथ पाग लपटाय । करधन उपर काछ पेन्हाय । पाव पनहिया लागी फन्द । जामा जमोटी आठो बन्द । कटि पटुका भावर दुइ तीन । डारि पिंजरा मैना कीन । बाभन मोल ना राह बताउ । दश्रा धरम नहि हृदए दिढ़ाउ ।

बिसराम ।

कुल बेवहार पढ़ावन लागि निसु दिन आठो जाम ।
परिपंचि परिवार सकल मिलि परिहरि राम को नाम ।

चौपाइ ।

दिन दिन राजा भैपरचंड । लागिले न प्रजा सो दंड । प्रति दिन प्रात अखाड़े जाहीं । बल बउसाव भए तन माहीं । जोरा धोरा अव हथिआर । घने पिश्रादा श्रव असवार । कुत्ता चित्ता बहरी जाल । रखत तखत किछु लाल गुलाल । लागी देन दान बकसीस । जो आवे सो नावे सीस । बनि बायली बंगला बाग । नटि गुनि सुनि सुख लाग । होने लागु बहुत इंतमाम । सो पहुचे जो लावे दाम । ठाम ठाम रहे देवढ़िदार । बहु बन्दी जन करहि कैवार ।

बिसराम ।

लैआए ब्याहि पराइ लैअर बाढ़ी गरब गुमान ।
नीचा मन ऊंचा चढ़ि बैठा बाजा बिबिधि निशान ।

चौपाइ ।

जाहां रहै तरुनापन राए । ताहां एह खबर पहुंचि जाए ।
बालपन राज करे गढ़ माहो । काहु को संका मानि नाहो ।
अब ना काहु के नावे माथ । हमरी हुकुम पसारे हाथ ।
ताखन तरुनापन रिसिआन । अवसंग होते जो परधान ।
बोले अपनी सैन बोलाए । चलो चोखं गढ़ देखो जाए ।
आपन आपन करो समान । काल्ह कों परसो करो पेआन ।
को बपुरा बालापन राव । अब देआह आनि बनो है दाव ।
जैसे व्यापि सिव हमारी । किधरि लेहु की देहु बिचारी ।

बिसराम ।

दल बल साजि चढ़े तरुनापन चले निशान बजाए ।
जों गढ़ होते राजा बालापन सो गढ़ नजिकाने जाए ।

चौपाइ ।

लिखि परवाना दिया चलाए । हम तरुनापन अमरे आए ।
हम तुम बने न अवर उपाए । किरन चढ़ो को जाहु पराए ।
परो बाला पन को सुझि । बरिआ अवर अबे नहि जुझि ।
बालापन तबहो पेआना कीन्ह । आ दरसन गढ़ छोड़ि तब दीन्ह ।
बाला पन राजा गए पराए । तरुनापन गढ़ पैठे धाए ।
अबला रानी प्रभुता नैव । समिता रहे खवास जिलेव ।

काम क्रोध बल बुधि हंकार । भए आनन्दित सब परिवार ।
डाढ़ी मोछ बगल कोपीन । करिआ सीस दुमदुम कीन्ह ।

बिसराम ।

तरुनापन को फिरि दोहाइ दिवो निसान बजाइ ।
भुगुत न लागी बिबिधि बिधि हरि को भगति बिसराइ ।

चौपाइ ।

बिलखि बालपन तहाँ चलि जाइ । जहाँ रहै बिरिधा पन राइ ।
सनमुख होय कीन्ह फिरिआदी । सबहु त लेहु हमारी दादी ।
राज छीनि तरुनापन लीन्ह । हम को देस निकालि दिन्ह ।
सगरो राज पाट तुम लेहु । छाजन भोजन हम को देहु ।
सुनि बिरिधा पन किछु मनमान । दिवो दिलासा बीरा पान ।
बचन हमार करो परमान । तरुनापन को करो निदान ।
कहे राजा एकु बीतिक बात । करो पेआना होत परात ।
चलो साथ होय देखो जाइ । बिधि मैं सुदेवस धरा बनाइ ।

बिसराम ।

जोरि बटोरि सैन जत अपनो अवजत मिले सहाए ।
बालापन बिरिधापन हिलि मिलि चले निसान बजाए ।

चौपाइ ।

चढ़ बिरिधा पन बंब बजाए । गढ़ तरुनाप लिवो नजिकाए ।
लिखि परवाना दिवो चलाए । हम बिरिधापन आमरे आए ।
बालापन तुम दिवो बिडारी । अब हम तुम सो माड़ी रारी ।
जो मन भावे करहु उपाय । आइ मिलहु की जाहु पराय ।

सुनि तरुनापन उठे रिसाय। ना हम मिलब ना जाब पराय।
तरुनापन बांधी तरुआरी। लरहि खेत चढ़ि हांक प्रचारी।
जुझहि दहु दिस जुझनिहार। एकहि एकन जीतनिहार।
जुझे काम क्रोध दोउ बीर। अहंकार को लागी तीर।

बिसराम।

रोग व्याधि की गोला किछु बिरिधा पन मारि।
बिचिल न लागी कोटि कांगुरा चलु तरुनापन हारि।

चौपाई।

तब तरुनापन परे सकेत। करिआ केस भए सब सेत।
नैनन्ह मेटि गए उजिआर। स्रवन सुनेहि हांक पुकार।
नीकी नाक सुंघे नहि बास। बाय पीत कफ़ लिन्ह नेवास।
मुख नहि आवे साविक बात। टूटी गिरि सब दांत।
डोले मांथ हाथ अरु पाउ। थाकी सुधि बुधि बल अउसाउ।
तरुनापन लिन्ही बनवास। गढ़ बिरिधा पन किन्ह नेवास।
अलसा रानी लाल चनेब। खासि रही खवास रिकेब।
तरुनापन छोड़ा मैदान। बिरिधा पन को बाजु निसान।

बिसराम।

भेटी माल मताय जहां लगि सो बिरिधा पन लिन्ह।
भागि गए राजा तरुनापन बहुरि ना फेरा किन्ह।

चौपाई।

काया कोट बिरिधापन राउ। किछु दिन आपन हुकुम चलाउ।
पलंग बिछाय बयेठु महराज। जन परिजन सो निबहे काज।

जो कछु पावहि पछिरहि खाहि। भक्ति न करि समुभि पछताहि।
पुनि उन्हहु के परौ हंकार । ढहा कोट तब भव निसआर ।
छुटि गवा तब बाद बिबाद । दुख सुख संपति बिपति बिखाद ।
येह देहो को इहे सुभाव । भावे रंक होय कौ राव ।
जेते आवहि तेते जाहि । जो उठि गआ सो बहुरा नाहि ।
कोइ चलु बाला पन कोइ चले जवान । कोउ बिरिधा पन करि पेआन ।

विसराम ।

भाव भक्ति जिव दया दिनता सभ से सील सुभाव ।
सको से करो आजु येहो अवसर बहुरि ना ऐसो दाव ।
प्रेम प्रीति परमारथ करि ले सांच बचन सुख भाखु ।
खैर बबुर धतुर को बारि फरे न दारु में दाखु ।
परमेस्वर को भक्ति पिआरी सभ मिलि करो बिचार ।
हिन्दु तुरुक अछोप छोप कुल करि सो उतरे पार ।
मानुख जन्म दुरलभ जगत मे बिनु हरि नाम असार ।
गरब गुमान करो मति कोइ धरनी दास पुकार ।
सुरिमा साधु संत जन जेते जिन्ह हरि नाम अधार ।
धरनी दास पवरिआ तिन्ह को इत उत पार उतार ।

एता पवारा संपुरन ।

पोथी ग्रन्द प्रकाश बाबा धरनी दास जो के बानी साखी कवित लीला भजन महराइ पवारा संपुरन समाप्त । लिखल सुमो दास पेसर लाला बस्तो राम साकिन सुघर छपरा

परवाना स्वामी पोथी लिखत सखेश रामदास जी साखी । सुभ संवत १९२६ मास बैसाख दुजा का पुरनमासी रोज़ सोमवार कै लिखत तैयार भया ता० ३० बइसाख बाली सन १२७६ साल ।

आरती ।

मंगलचार करो साधु संतो । भव भिनुसार तिमिरि को अंतो ।
मंगल थारि आरति भारी । मंगल चाल संख धुनि भारी ।
मंगल महि धर धरती अकास । मंगल रवि ससि पवनहु तास ।
मंगल दास राम रस पीउ । मंगल सब घट जहां लगि जीउ ।
मंगल आरती सकल आनन्द । गावै गुन विमल जिगोदा नन्द ।

गुरु परनाली लिखते ।

प्रथम बंदी धरनीश्वर स्वामी । बार बार तव चरननगामी । स्वामी सदा नन्द कीया सतकार । भए अमरजी हांक प्रचार । माया राम पद किरिया कीन्ह । श्री राम रटन जी को दरशन दीन्ह । श्री बालमकुंद जी को बड़ो सुभास । जिन्ह के भए निरमल राम दास । दास सुखी करी रघुपति ध्यान । गुरु परनाली किया बखान ।

दोहा ।

गुरु परनाली गावै । धरि गुरुन को ध्यान ॥
सो नर निसचै पावै । अलख पुरुष निरवान ॥

एता संपुरन ।

(विदित हो कि)

दोहा

बालमीक तुलसी भयो   शुक जो भयो कबीर ।
जनक विदेही नानका   दूबो सूर शरीर ॥ १ ॥
कबिरा पुनि धरनी भयो   शाह जहां के राज ।
विरति ग्रन्थ कियो बहु   धर्म पन्थ के काज ॥ २ ॥
तिन्ह मंह यह पुस्तक सलिल   नामक शब्द प्रकास ।
अति श्रम करि संग्रह कियो   बाबा धरनी दास ॥ ३ ॥
ज्ञान धर्म बैराग्य युत   सुख दायक गुण खानि ।
भक्ति पन्थ गंभीर मंह   भक्त जनन्ह को जानि ॥ ४ ॥

समय के हेर फेर से यह अनमोल पुस्तक जो आज तक मुद्रित न हो कर और अंधियारे में पड़ी रह कर लुप्त होने की अवस्था को प्राप्त हो चली थी कि एतने में इसके अनूप ज्योति को दरस इस को द्वारा पाकर-

दोहा

अति ज्ञानी ध्यानी सकल   गुन खानी बर बानि ।
धर्म सुशील सशील मति   शील सुशील बखानि ॥ १ ॥
सज्जन मन रंजन दुरित   गंजन भंजन पाप ।
भ्रम अंजन मन तिमिर हित   मिहित सदा शुभ आप ॥ २ ॥
स्वस्ती श्री शुभ गुण सदन   बाबू रामदेव ।
दान मान बुध जनन्ह को   करत सदा है सेव ॥ ३ ॥
तिन निज भक्ति उद्‌गार ते   सज्जन जन के हेत ।
प्रगट इसे करवावते   भक्ति इन्हें सचेत ॥ ४ ॥

आशा है कि सज्जन लोग इसको उत्साह से आनन्द पूर्वक सहायक होकर लोक परलोक दोनों में सुयश लूटेंगे ॥

विष्णुदेव नारायण

यह पुस्तक श्री २ बाबू रामदेव नारायण सिंह के पास बेतिया से नकछेदी तिवारी के पास डुमरांव से विष्णुदेव नारायण के पास छपरा गोविन्द्र जिला स्कूल में मिलेगा ॥